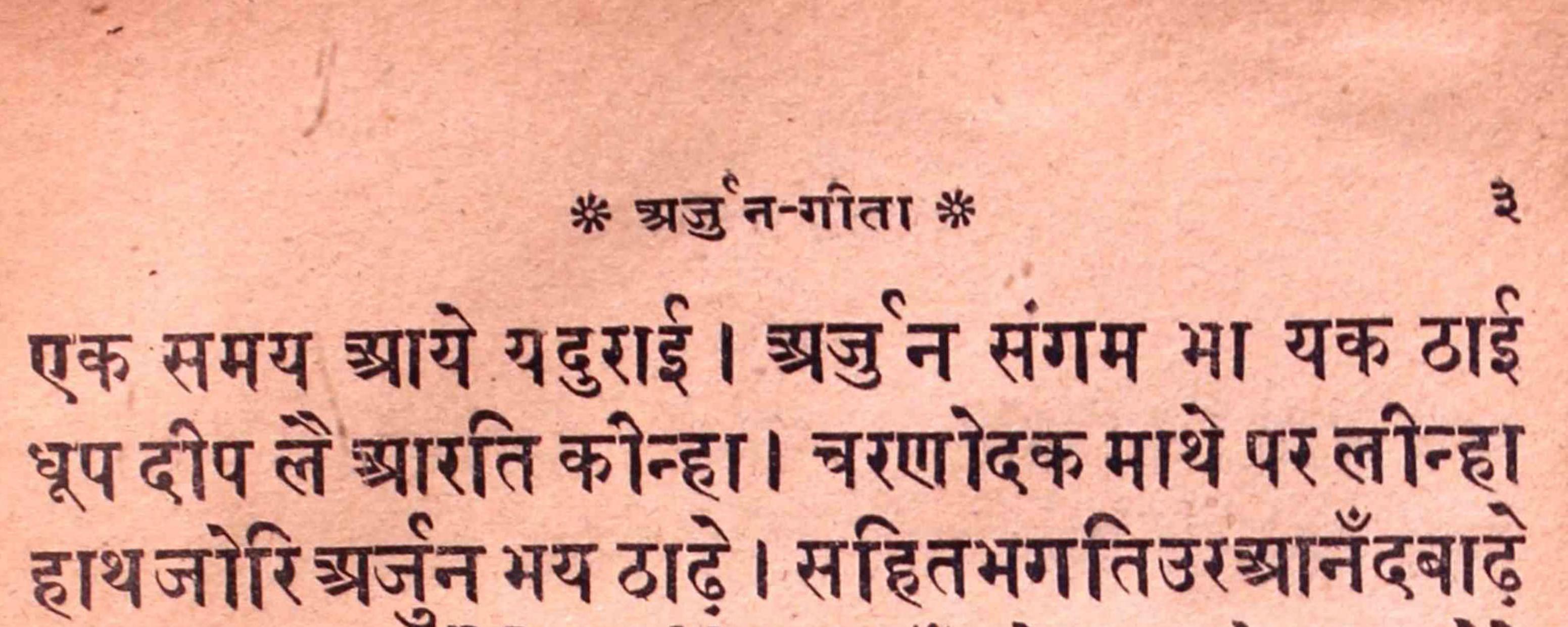


# सबे विश्व पावन करन, भाषा गीता ज्ञान ॥ ४ ॥ ॥ चौपाई ॥ श्रीगुरुविष्णु के चरणमनाऊँ। जेहिप्रसादगोविंदगुणगाऊँ श्रीकृष्णार्जुन की रसबानी । गुरुप्रसादकछु कहों बखानी

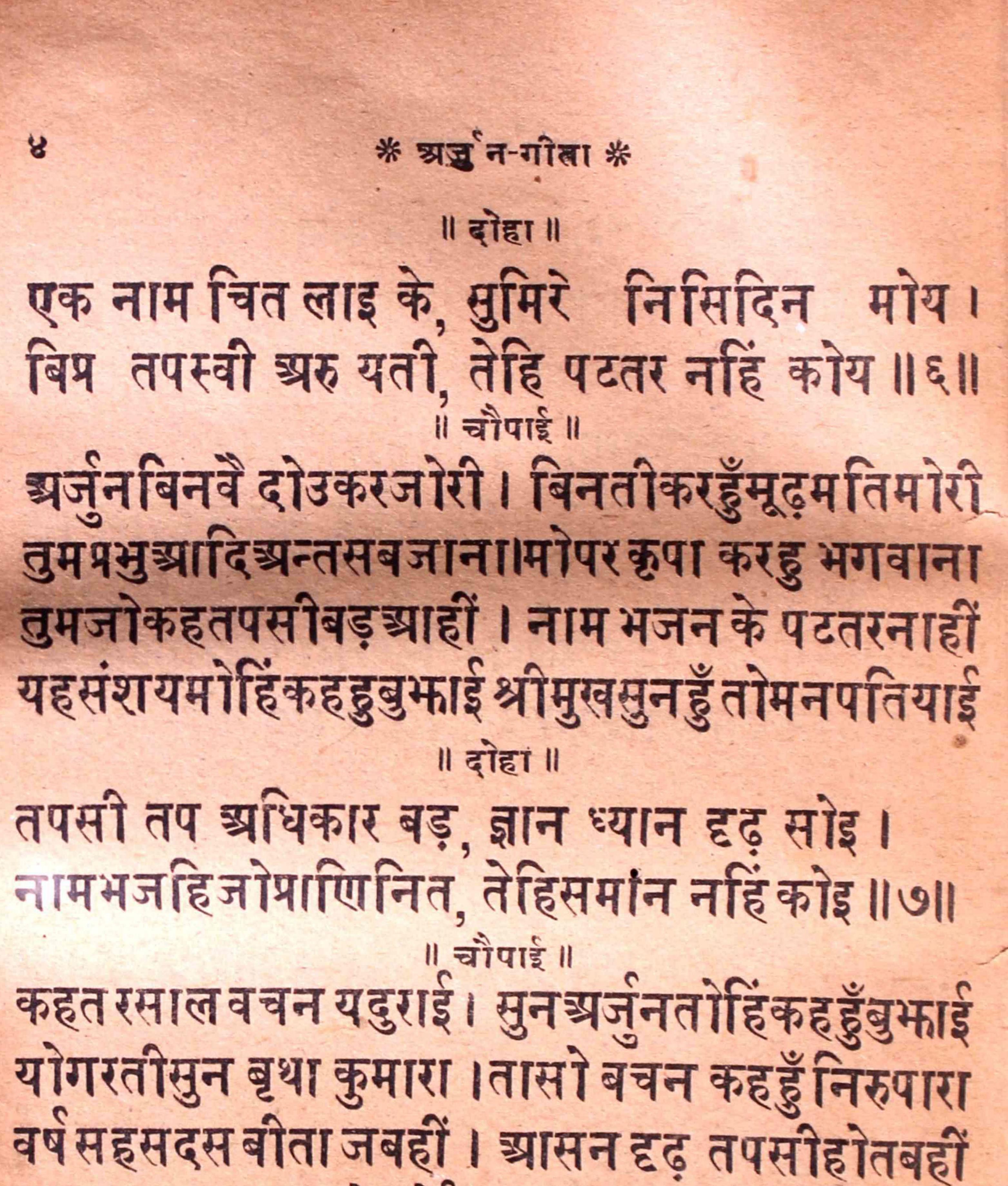


संशय प्रभु एकहैचितमोरे। कहहुँ सो नाथदोउकरजोरे दीनदयाल देहु समुफाई। श्रेष्ठ मोच कवने विधि पाई कौन धर्मकीन्हें गतिहोई। सा मोहिं कहहुन राखहु गोई स्थावर जंगम आदि बखानी।कीटपतंग चारिगुणखानी चारिखानि प्रभुतुमहिंबनाई। सबसे श्रेष्ठ कौन यदुराई

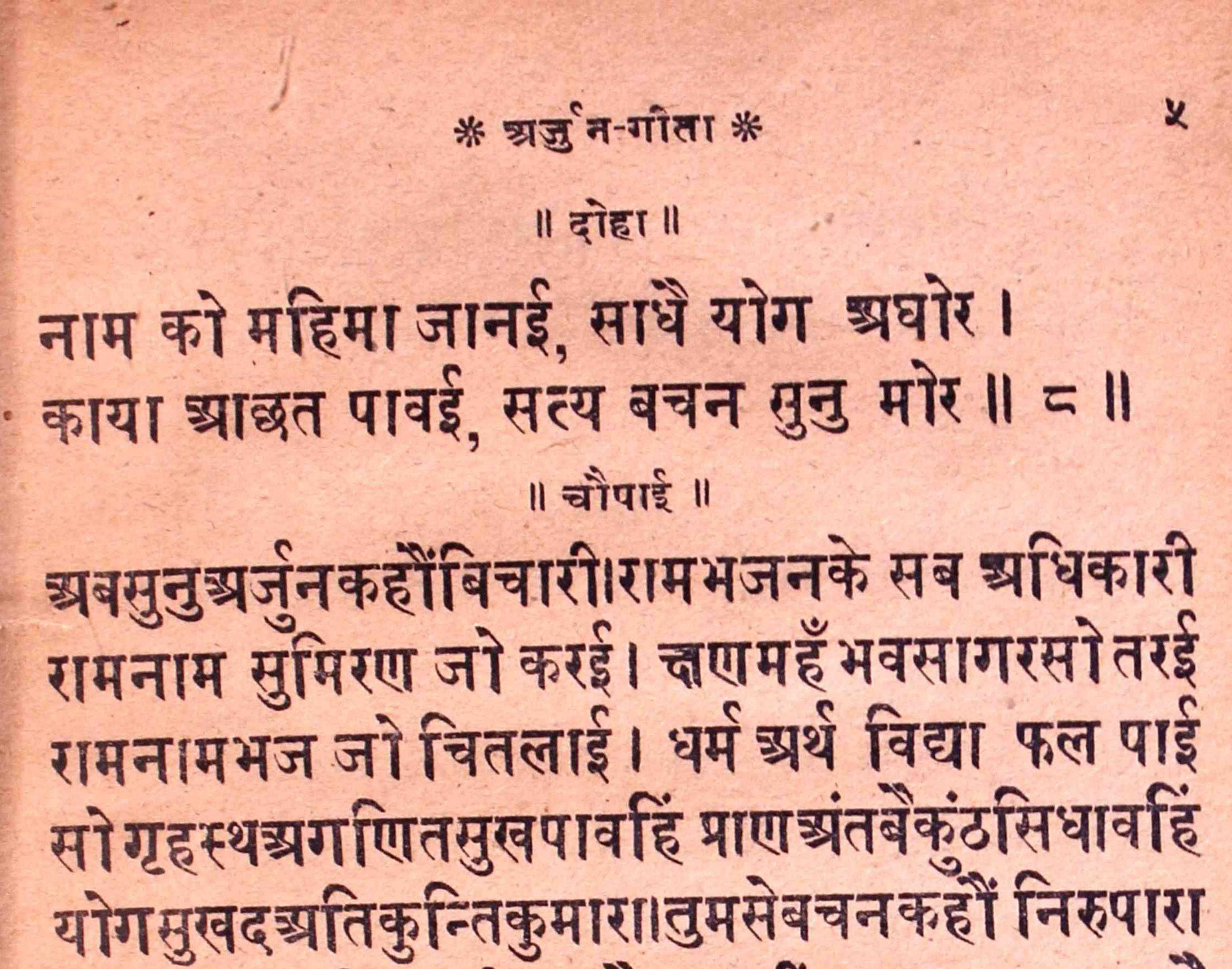


# इनमें को अति श्रेष्ठ है, सो मोहिं कहडु बिचारि। शरण चरण प्रभु राखडु, होडु प्रसन्न मुरारि॥ ५॥ ॥ चौपाई॥ श्रीकृष्णहु बोले बिहँसाई। यहसंशायतोहिकहडुँबुफाई

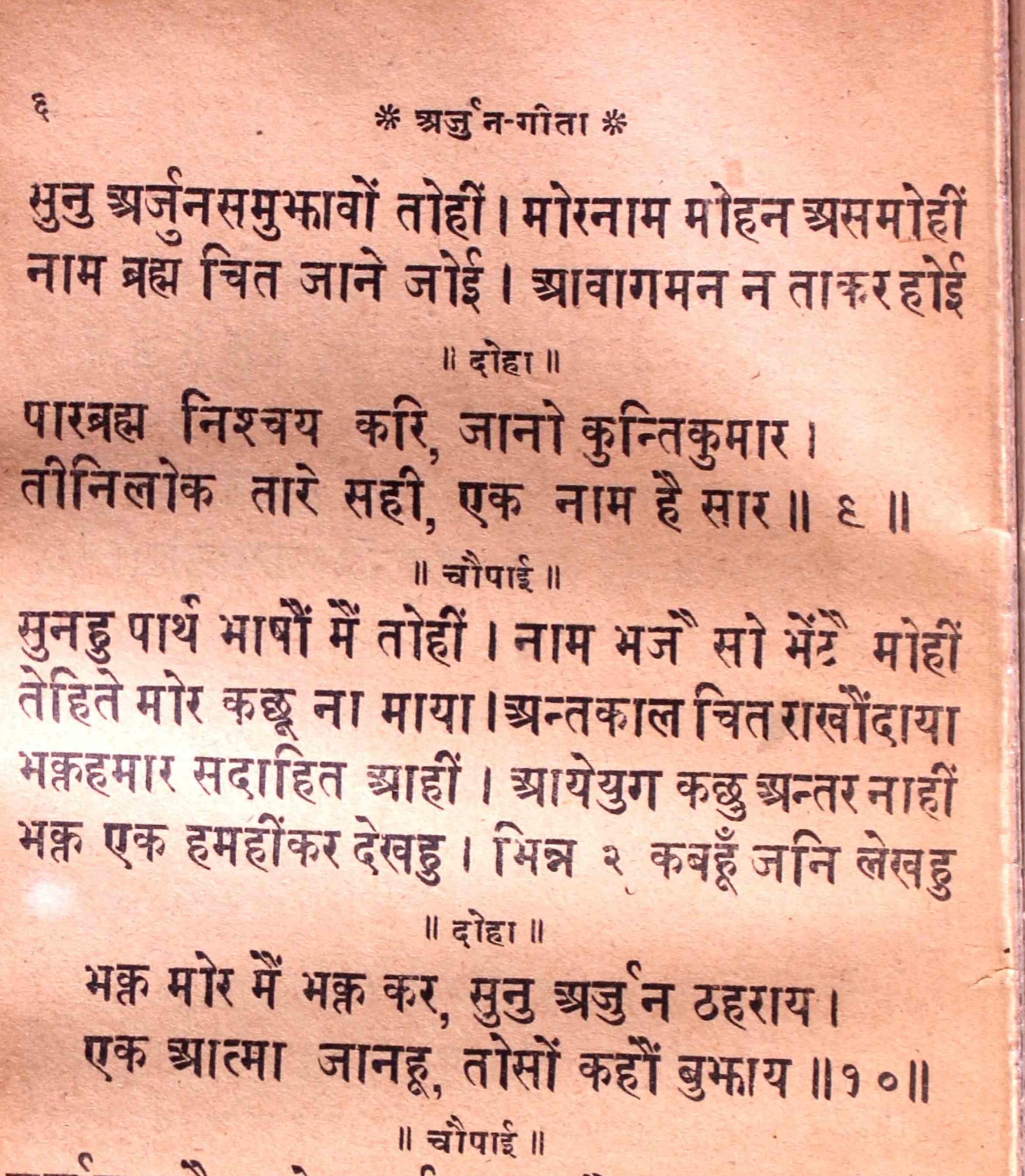
# कहें रसाल बचन यदुबीरा। सबसे दुर्लभ जवन शरीरा मानुषमें बड़ बाह्यण ज्ञानी। ब्राह्यणमें बड़ तपसि बखानी तपसीसों बड़ सुनहुकुमारा। मोर नामजेहि प्राण अधारा निसिबामरसुमिरेजोमोई। तेहिते बड़ औरो नहिं कोई



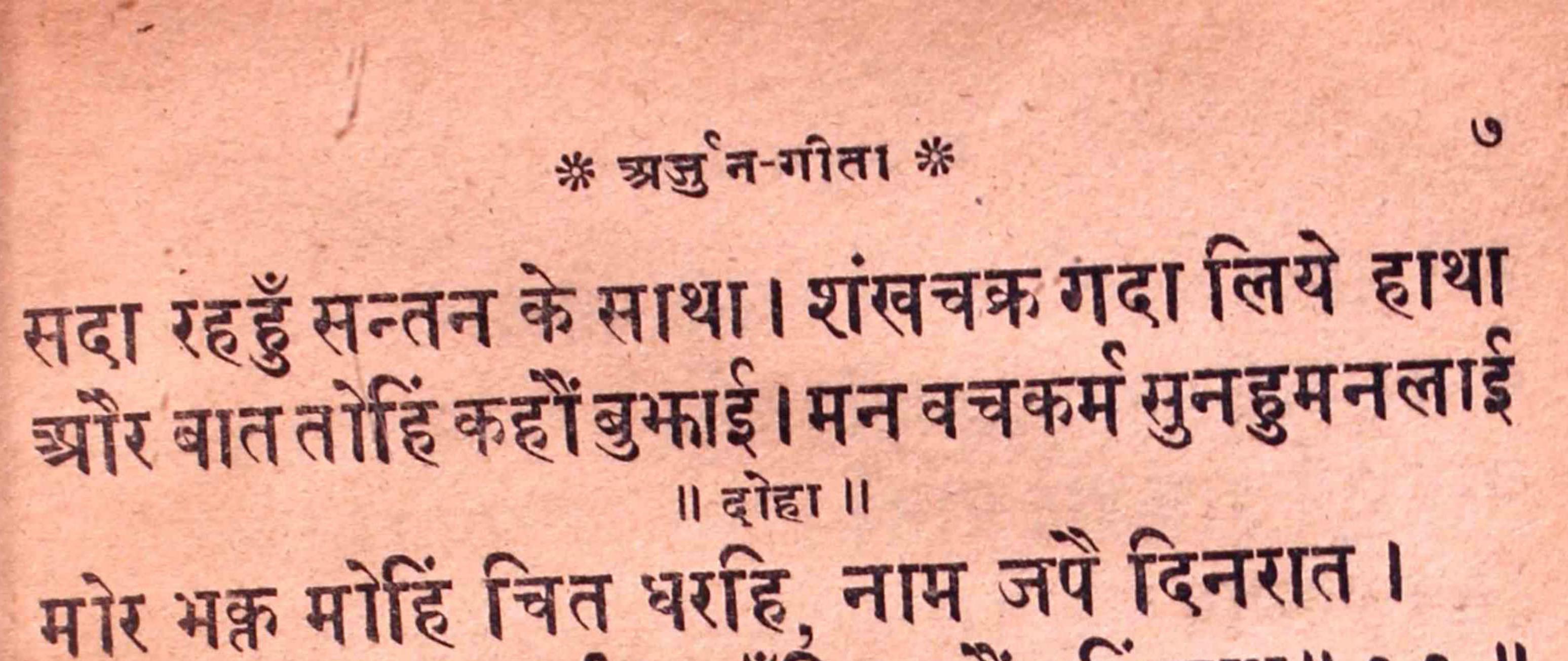
# अन्तप्राण त्याग जो कोई। प्रम पुरुष पुनि भेटे सोई पुष्पकली बिकसे नहिं पाई। अन्तर बास कहाँते आई रामनाम सुमिरणनहिं करहीं। कहु अर्जुन कैसे वे तरहीं तपसी तप सुनु कंतिकुमारा। योग यतीकर है ब्यवहारा



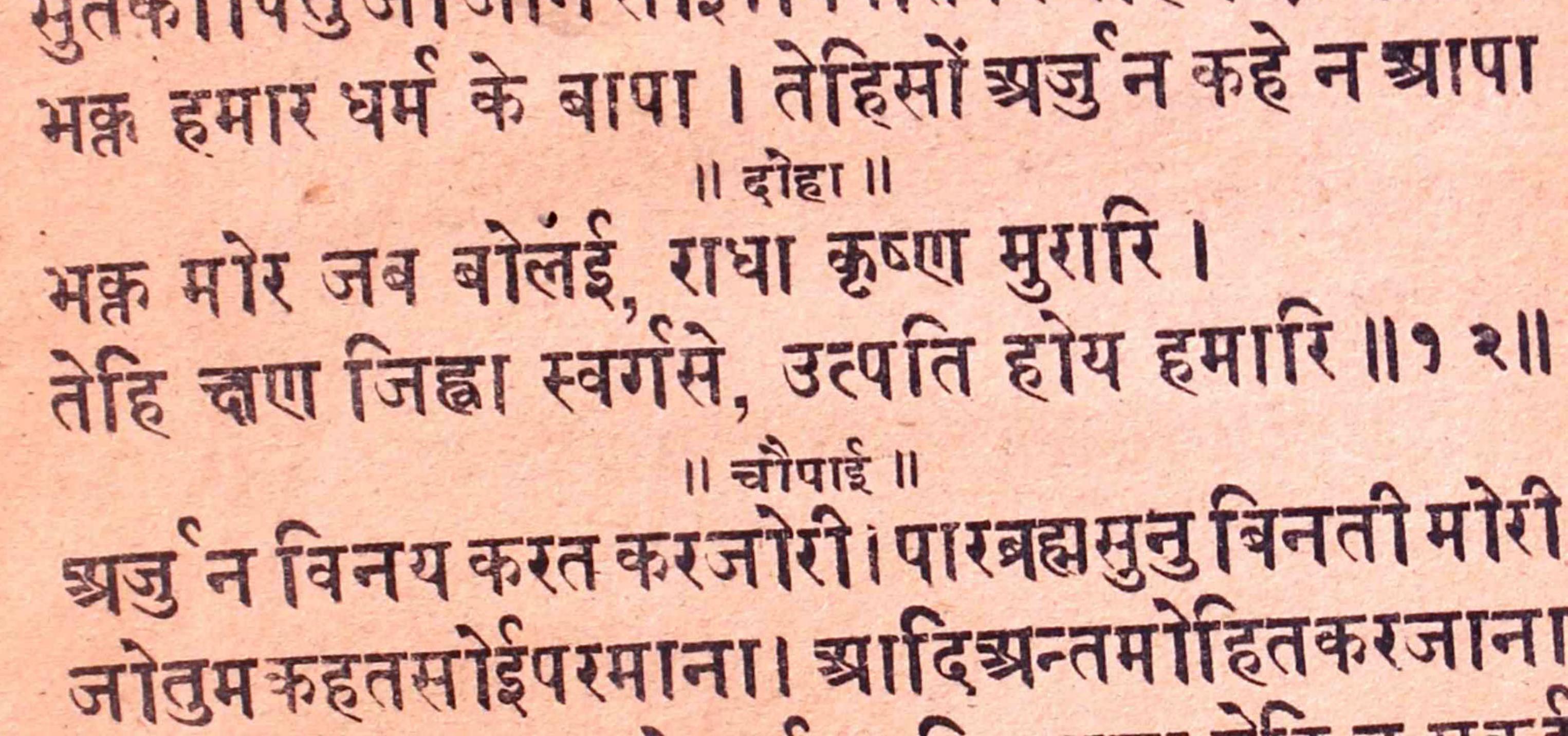
योग साध जो प्राणी ध्यावे । तबहीं श्रमर परमपद पावे भोगनहार तो पार न पावे । जे से मारग श्रन्ध भुलावे नामकीमहिमाकहत न आवे। चाणइकभज श्रमरपदपावे श्रर्जुनबचनसुनतहमपाहींनामभजनसमजगकछुनाहीं नाम भजन सुमिरणजोकरई। भवसागर चाणमहँसो तर्रई राम नाम जग हे आधारा । नाम लेत भवसागर पारा भक्त हमार प्राणसम अंगा । सदा रहों भक्तन के संगा सदा फिरों भक्तन के साथा। शंख-चक्त गदा लिये हाथा गायसंगबछराजिमिरहई छीरकीआ्रा छणकनहिंतजई



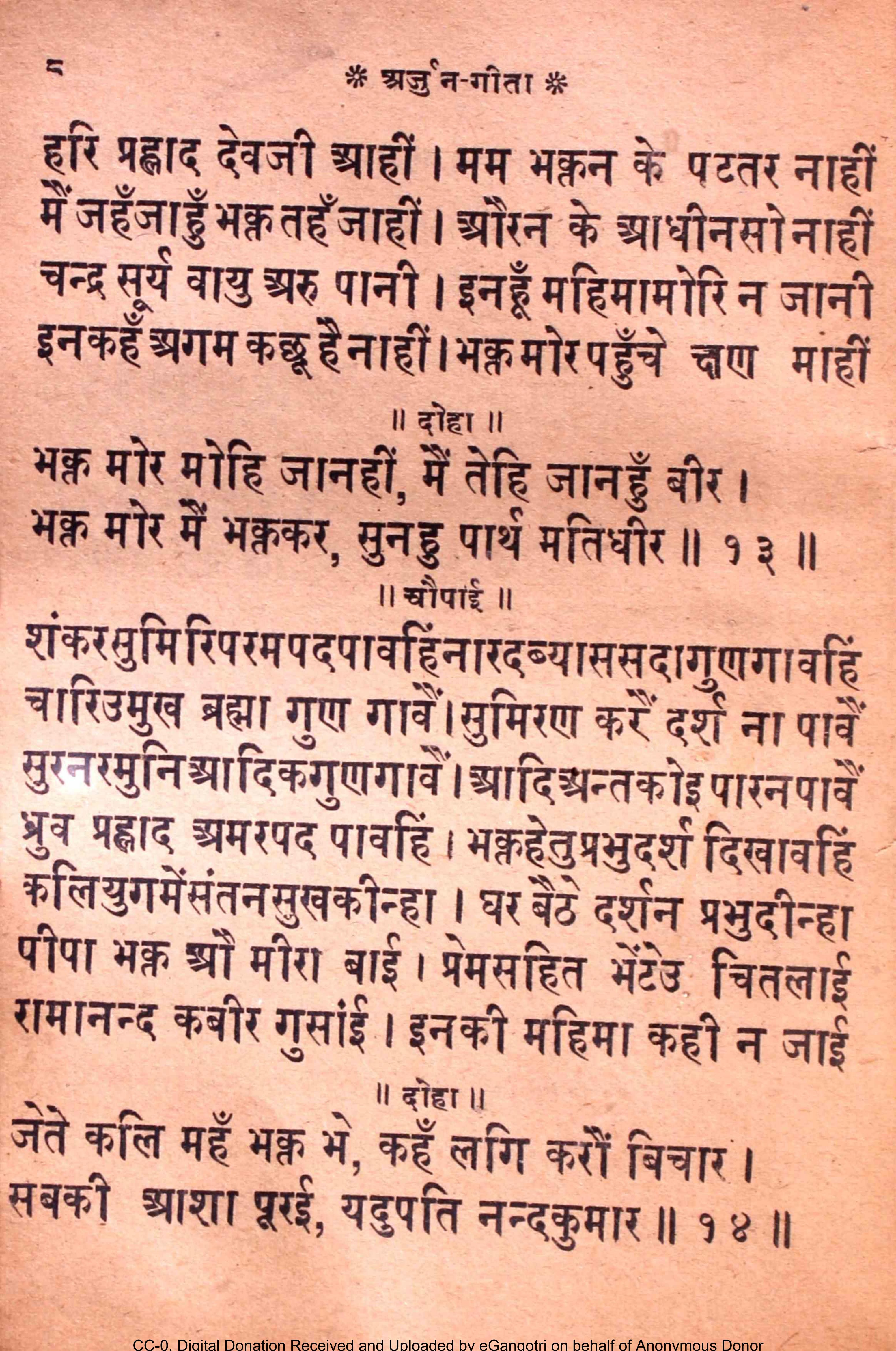
# अर्जुन कहे सुनोयदुराई। यह तो जानत हों मनभाई भक्तिहेतुमोहिंभेदकछुनाहीं। यहतो विदित अहेस बठाहीं भक्त तुम्हार सदाहित आहीं। सो विचार अपने मनमाहीं यहसबतोहिंमें कहडुँ बुमाई। सुनहुसोअर्जुनतुममनलाई



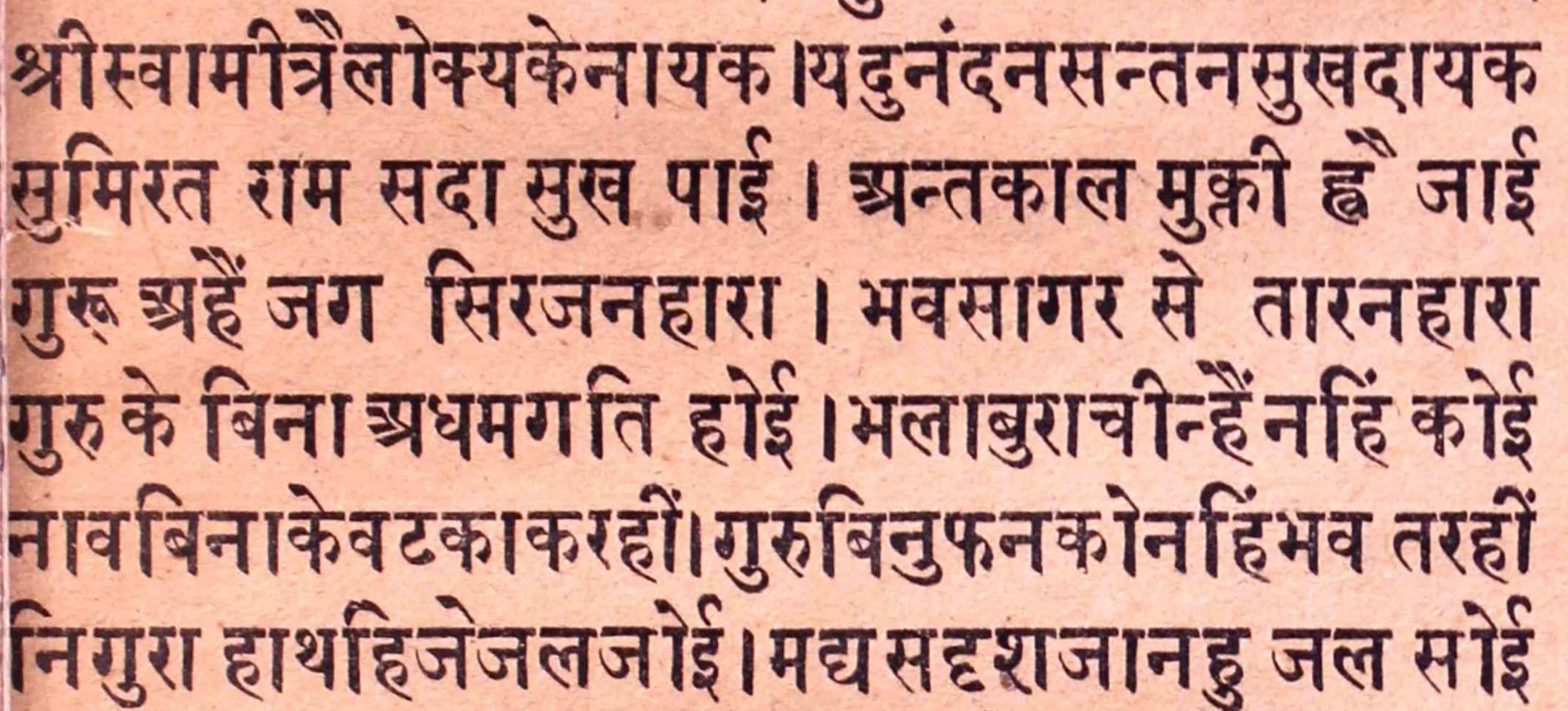
मार मक्न माहि जिस परिए, सकों नहिं साथ॥ १९॥ तेहि कारण सुनु झर्ज न, छाँड़ि सकों नहिं साथ॥ १९॥ ॥ चौपाई ॥ जाके घर एक बालक होई। बिपतिपरेट्ठ नाछाड़िहि सोई पुत्र बाप कर जाने सोई। बिपतिपरेट्ठ नाछाड़िहि सोई सुतको पित्र जो जाने सोई। विपतिपरे नहिंछाड़हिं जोई



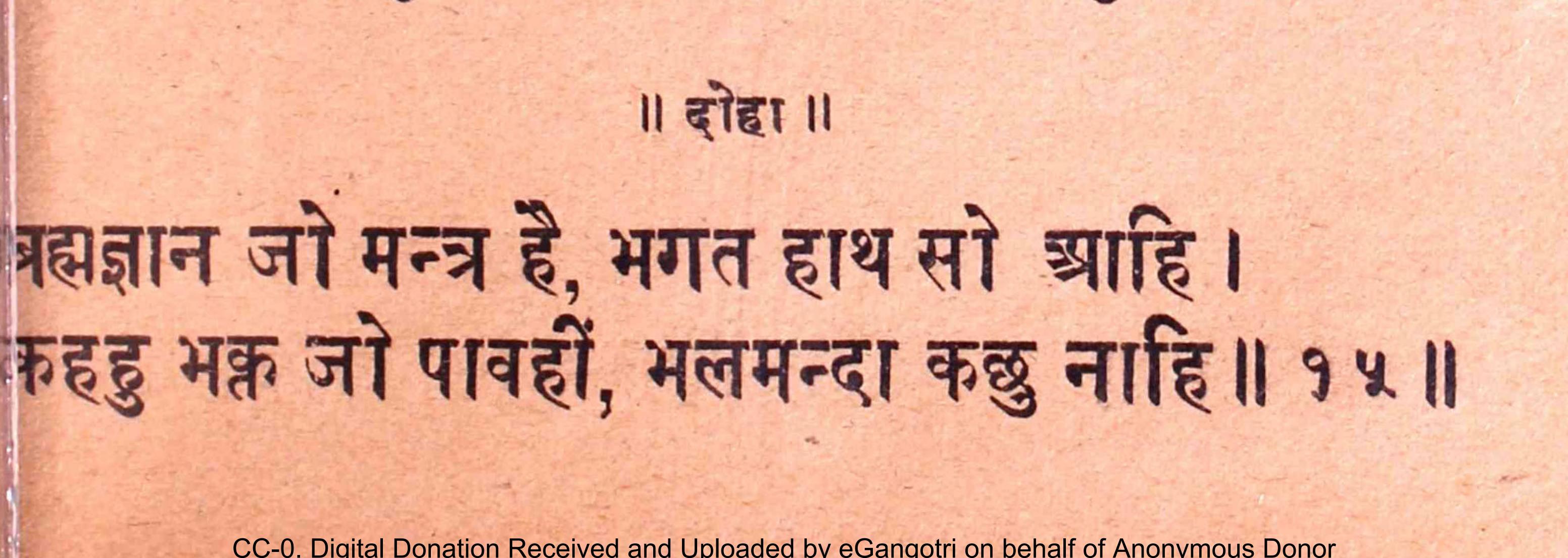
# आधुम ग्रिस स्व श्रीमुख वचन मृषा को करई। हरिहर ब्रह्मा मेटि न सकई में अतिदीनन वचन अनंता। भक्त हिं अतिमानत भगवंत कहेगोविन्द बचनहितकारी। सुनहुपार्थतुमहृदयविचार

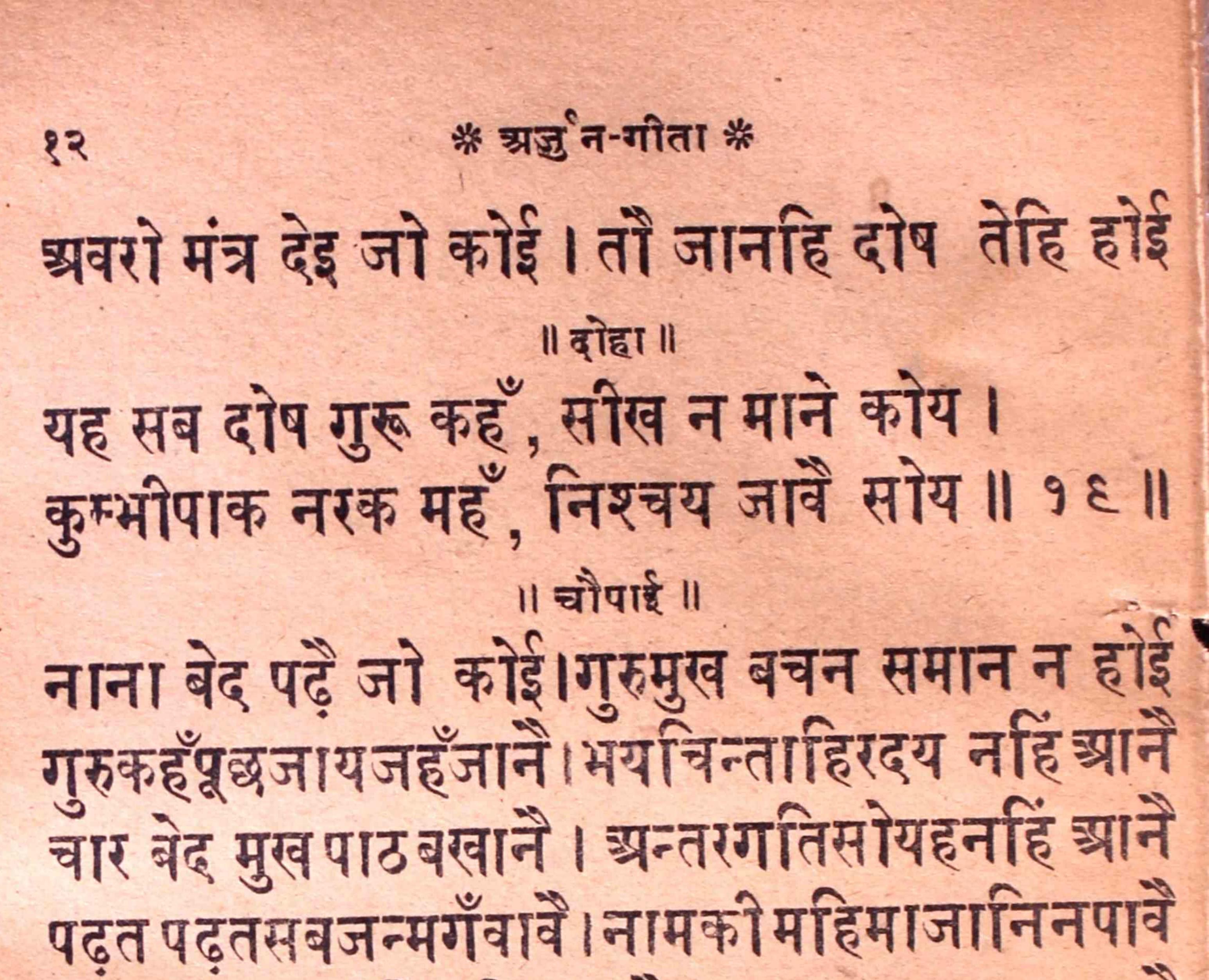


\* अजुन-गोता \* 3 ॥ चौपाई ॥ गुरुबिरंचि विष्णुशिवञ्चाहीं। यामोञ्चन्तर है कछु नाहीं ब्था जन्म ताकर नहिं होई। गुरू शरण महँ जावैसोई



भक्रन के मुख मेरो बासा। हिरदे बैठि करों परकासा जो कछुबिष्णुमोत्तपदआहीं।जेतिकमानुषभोजनकरहीं भक्र मोर होवे जो कोई। तुरत प्राप्त मो कहँ सो होई जो मोहिं भक्रन लावे हाथा। उद्दे उच्छिष्ट कहे यदुनाथा सो हम कहँ पहुँ चैनहिं भाई। भक्न मोर पहुँ चै त्ताण जाई





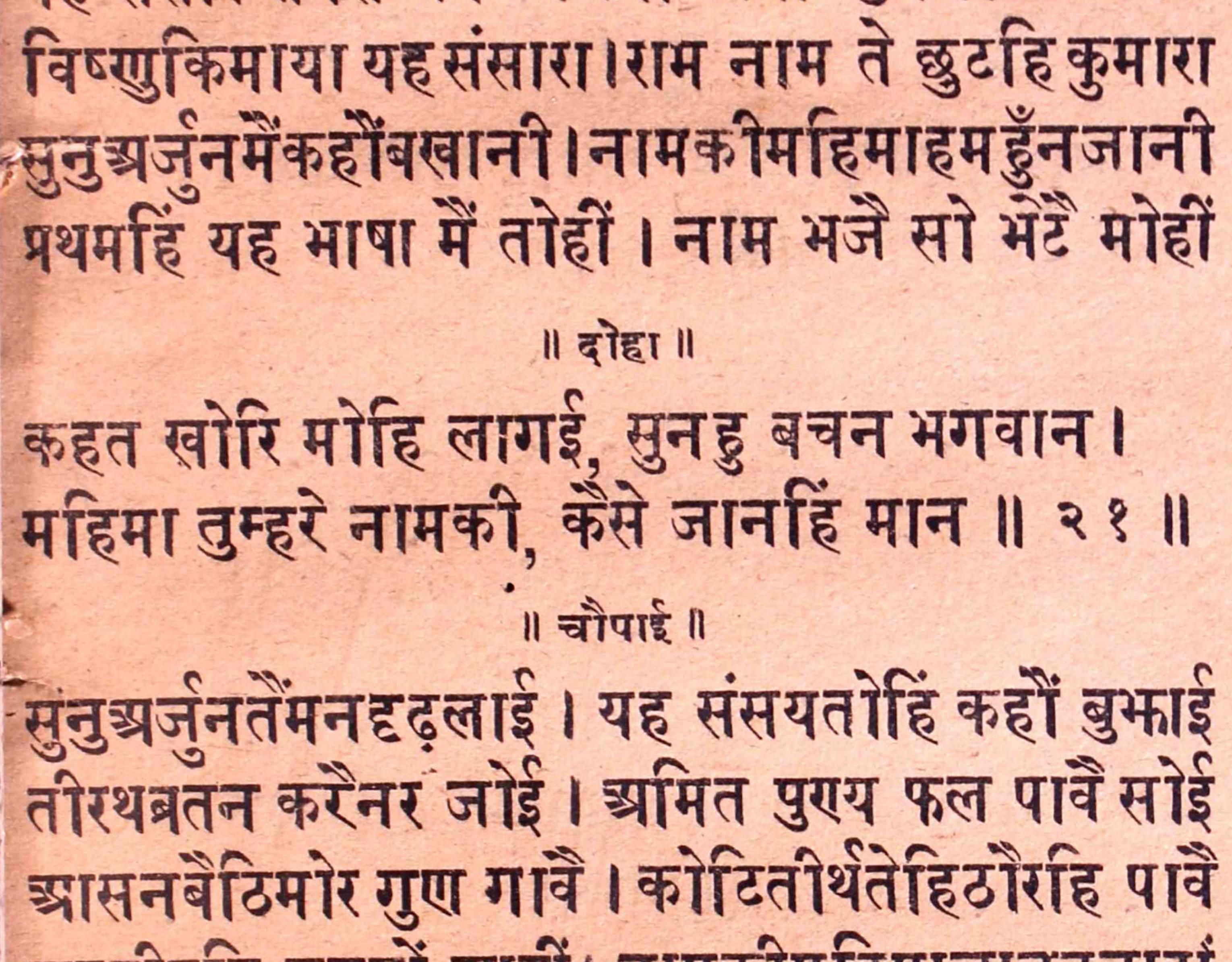
निश्चयनामजोचितहिलगावै।च्रणइकभावपरमपदपावै सिद्धसमाधि लगावै जोई। नामकीमहिमाजानतसोई भूमिसमान दान जो करई। लच्च योजन नाम जो धरई ॥ दोहा॥ तीरथ बत इस यज्ञ करि, बहुत बिचारे बेद।

# सहस्र योजन नामते, जाइ रहा सब भेद ॥ २० ॥ ॥ चौषाई ॥ जिन ब्रह्मा सब सृष्टि सँवारी।नाभि कमल तेभयेहमारी ब्राह्मण होय बेद सब पढ़हीं। मोर नाम जो चितमाँधरहीं

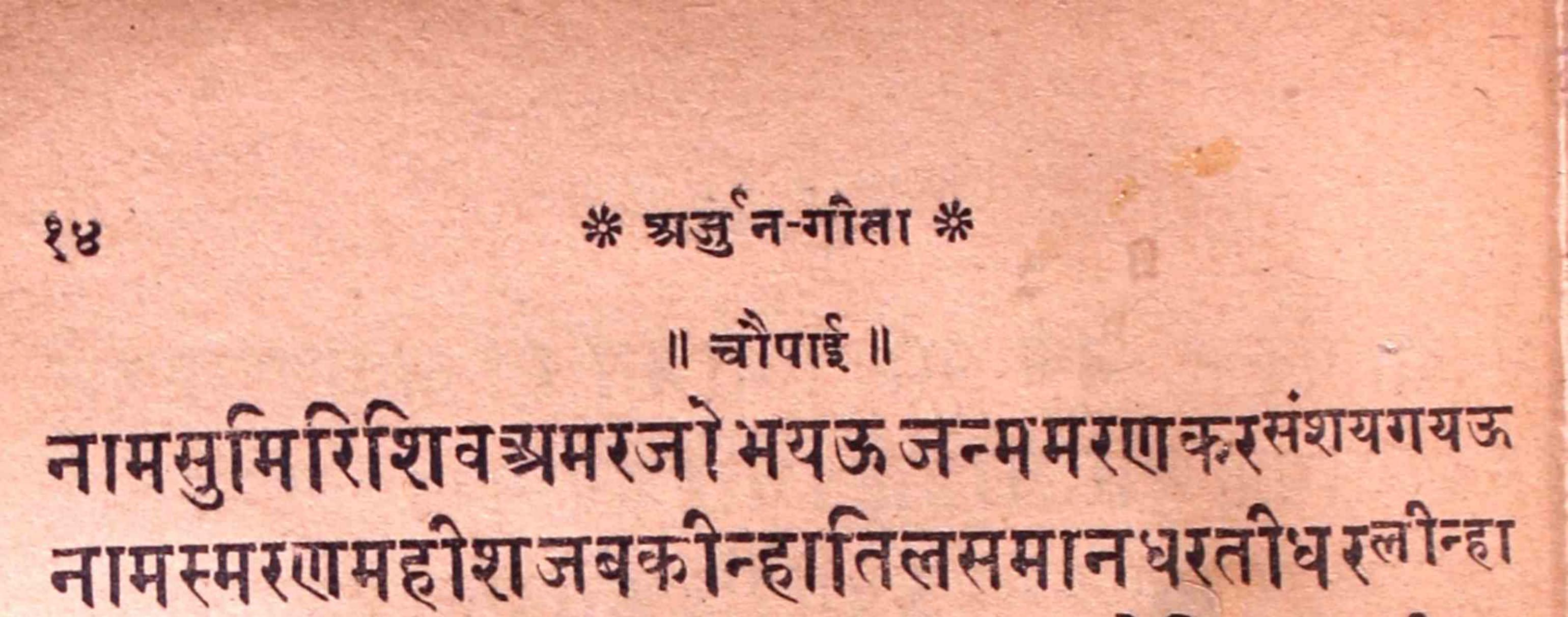
#### \* छजु न-गीता \*

23

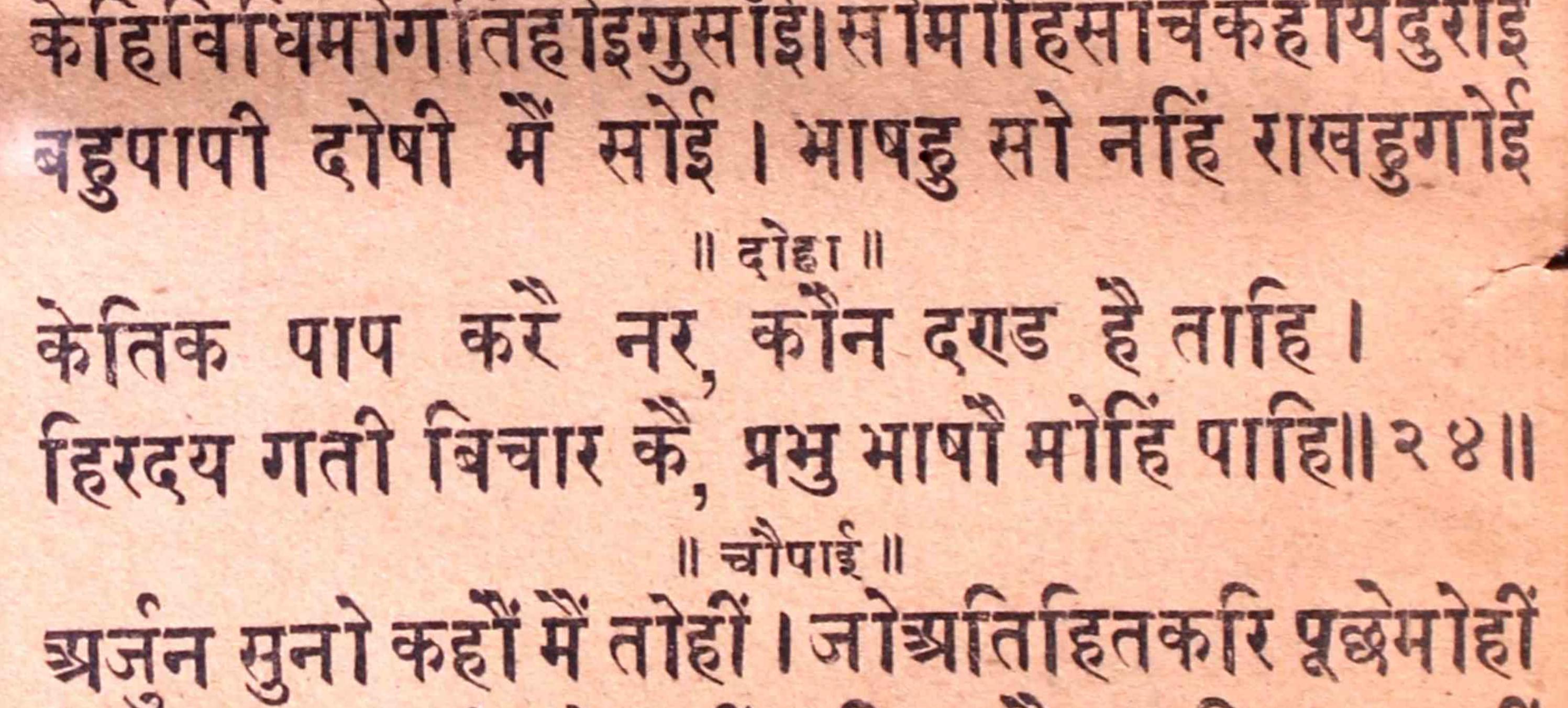
# विद्या बेद न भूले सोई। भोजन रस जाने कस होई स्वपनाभक्न मोर जोहोई। तेहिसमान अर्जु न ना कोई यह संसार रामसे भयऊ। कोटिकोटियुग बीतत गयऊ



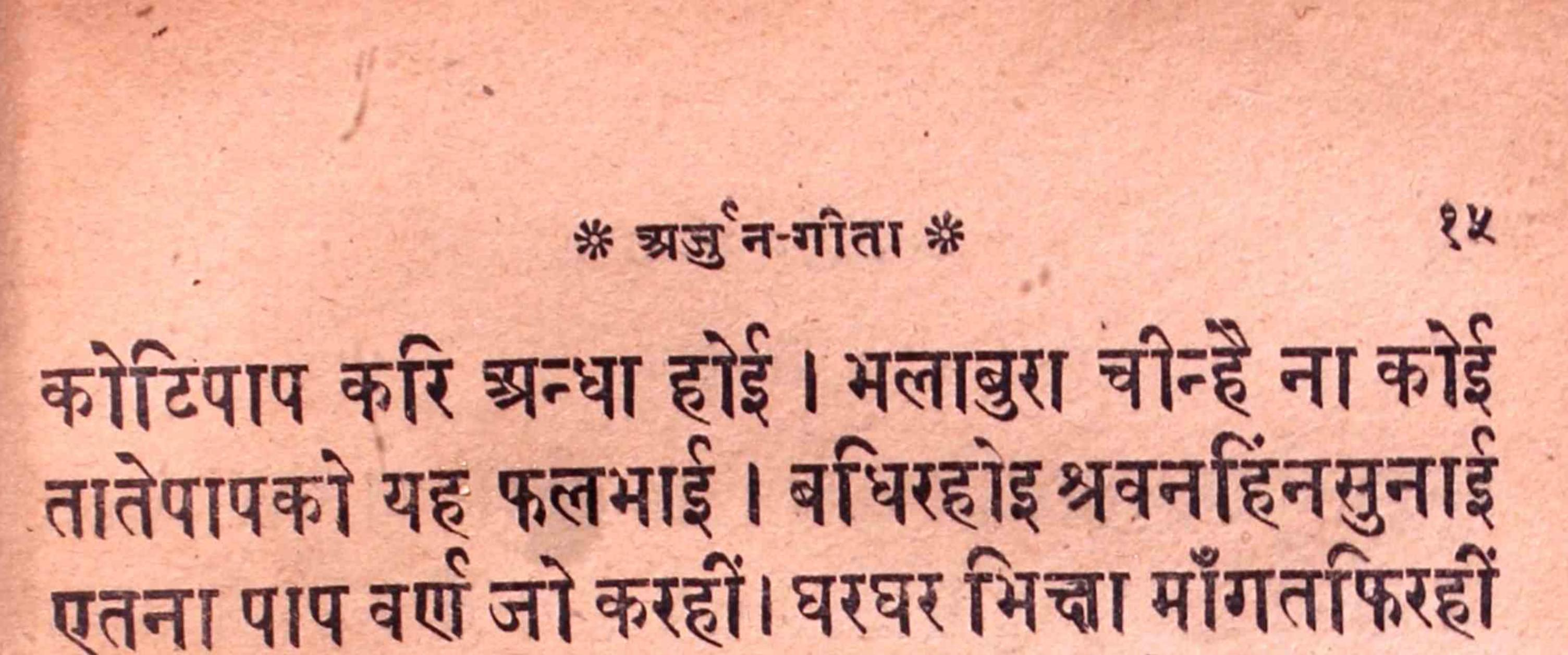
# लच्मीपति सङ्गसों आहीं। नामकीमहिमाजानतनाहां ॥ बोहा॥ चन्द्र सूर्य अरु पवन जल, नवग्रह सकल नच्चत्र। माया मोरि न जानहीं, कोटि जपे जो मन्त्र॥२२॥



रामनामसुमिरनश्रुवकीन्हापदवी अचलते हिकारण दीन्हा ॥ दोहा ॥ राम नाम निश्चय करि, जानहु कुन्तिकुमार । चारि बेद मो अर्जुन, दुइ अचर है सार ॥ २३ ॥ ॥ चौपाई ॥ सुनहुबचन देवन को देवा। अर्जुन कहतबिनयकरिसेवा केहिविधिमोगतिहोइगुसाँई। सोमोहिंसोचकहोयदुराई

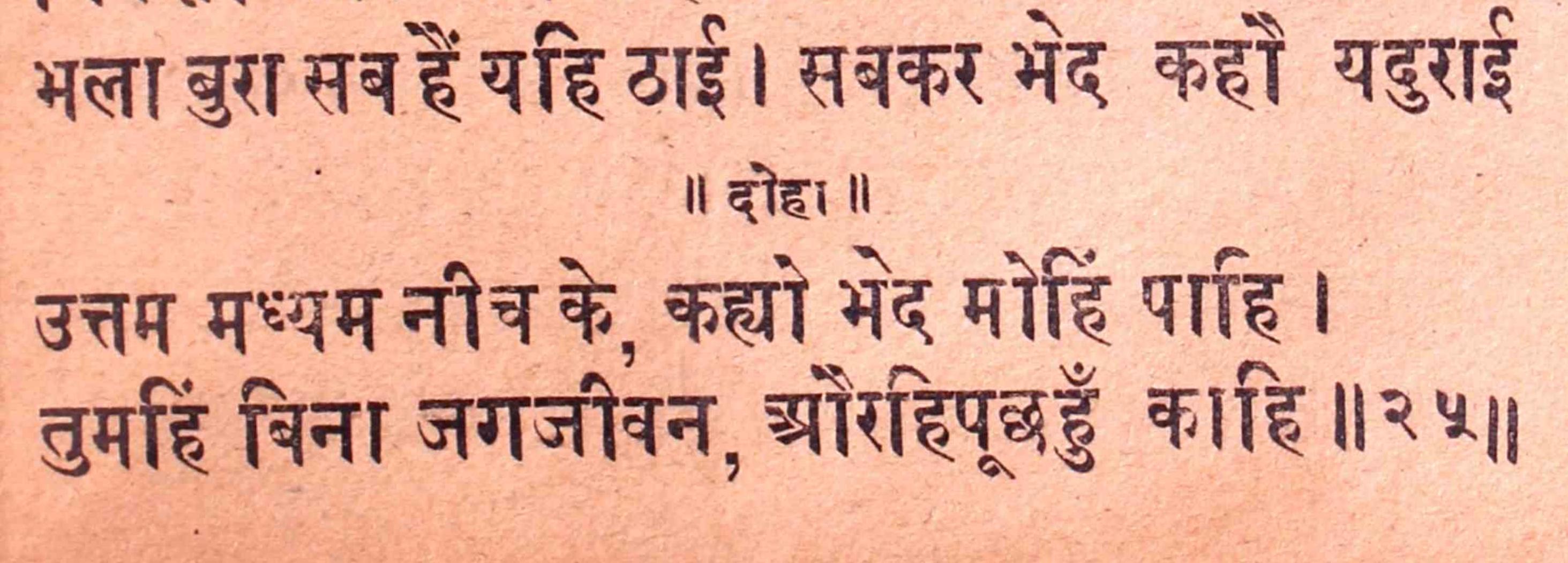


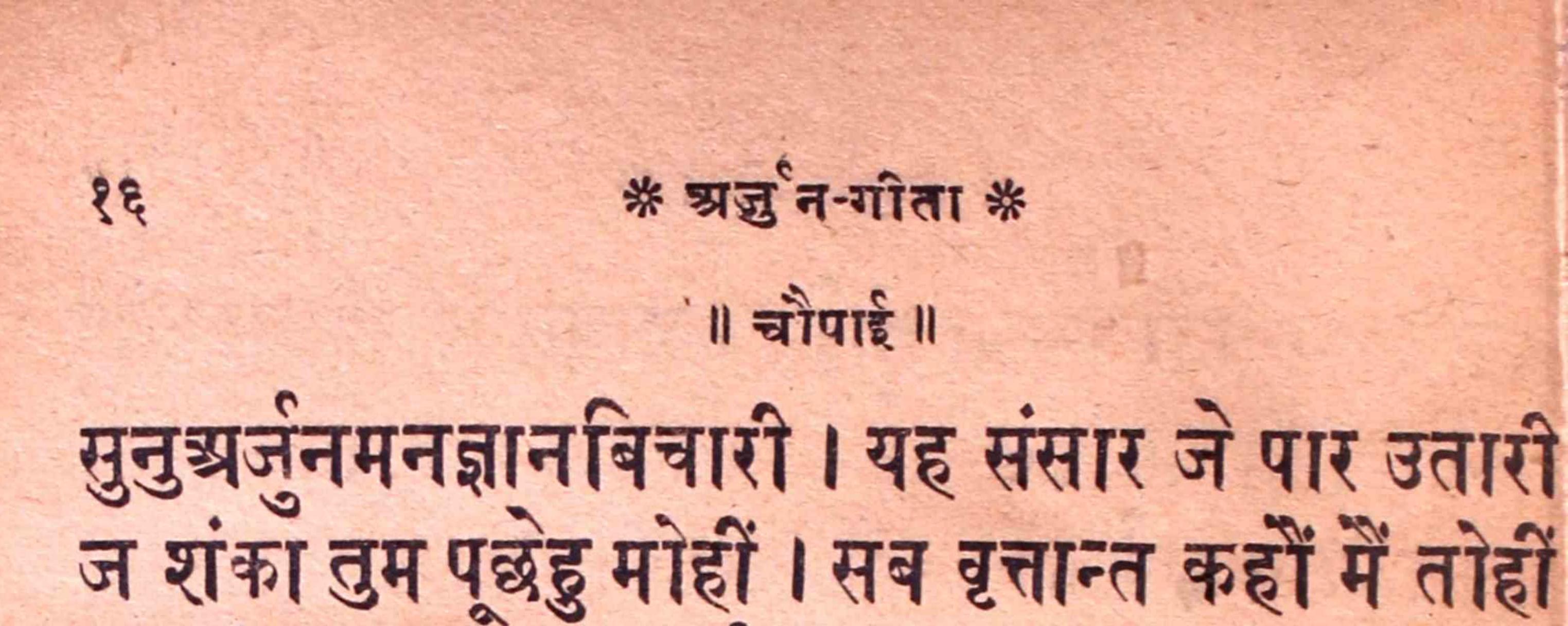
#### अजुन सुना कहा म ताहा जिल्ला आताहतकार प्रथमाहा सतपालन प्राणी जोकरहीं।लजितह्ने यदुपति अबकहहीं सहसपाप मुख बाहर होई। बचन कहे बूभे ना कोई एकलख पापकरे नर जोई। कञ्चन काया कुष्ठी होई दश सहस्र पातक जोकरहीं। दुःखी रोग प्रसितह्ने मर



माँगै भीख न पावे दाना। ताके पापको लेख न आना पापकोटिदुइकरजेपानी। सन्ततिद्दीनअधमकरिजानी ताकर मुख भोरहिं जो देखे। महापाप अपने शिर लेखे जोमुखदेखि करे असनाना। दादसपल सोनादेइदाना अन्तकीबातकहबना तोहीं। महिमाकछुएकबेवराओहीं

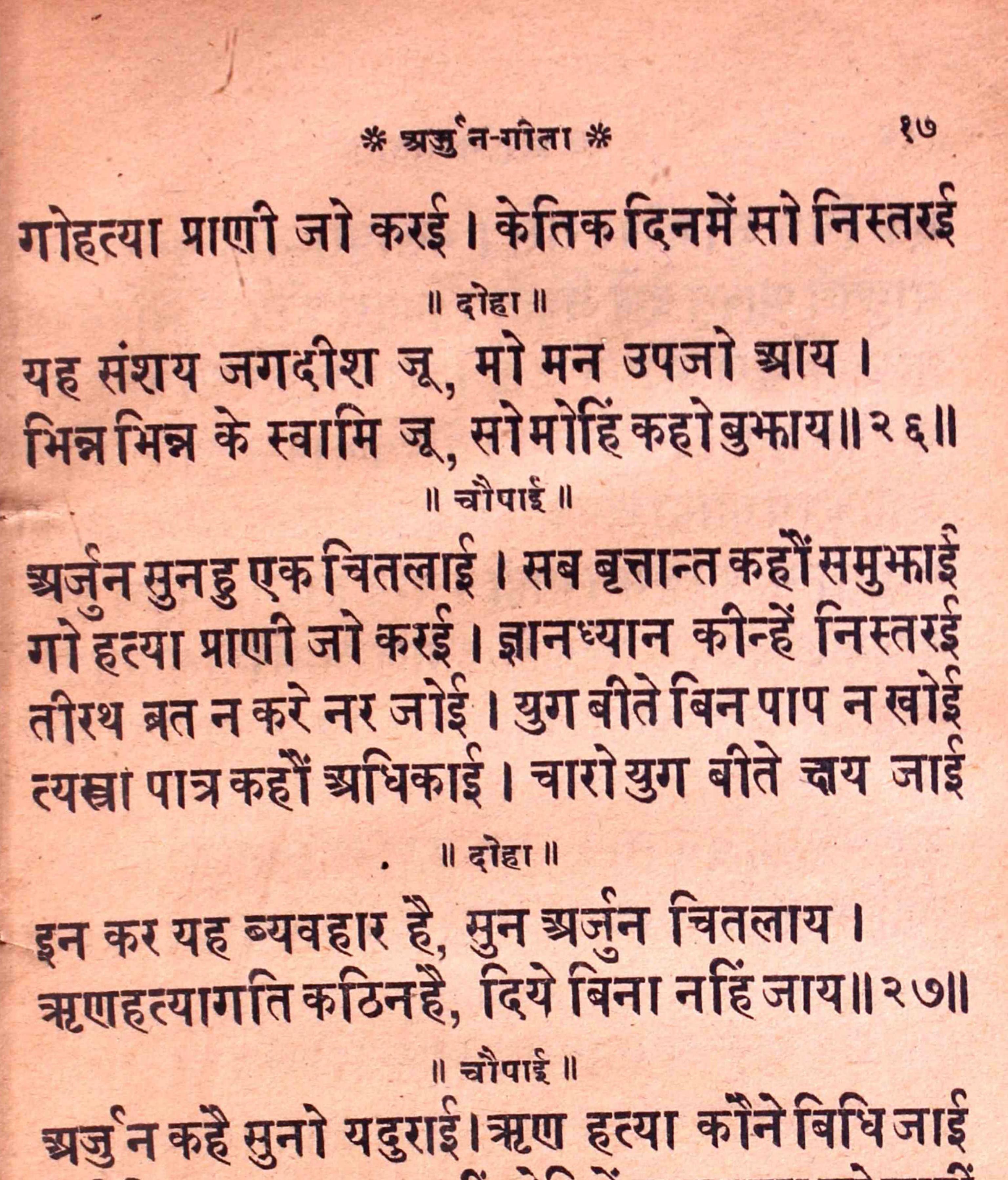
तेहिके बचन उतर जो देई। महापाप अपने शिर लेई दुइ असनान करें जो कोई। तब तेहि पाप ते छूटे सोई शुभकारज बोले जो कोई। निश्चय कार्य नाशताहोई अर्जुन बिनवें द्वीकरजोरी। सुनहुनाथएक बिनतीमोरी यदुपतिसर्वप्रज्य भगवाना। सबकर जानहुएकसमाना निर्वशी जेतक जग आहीं। धर्मवन्त को उआहे किनाहीं



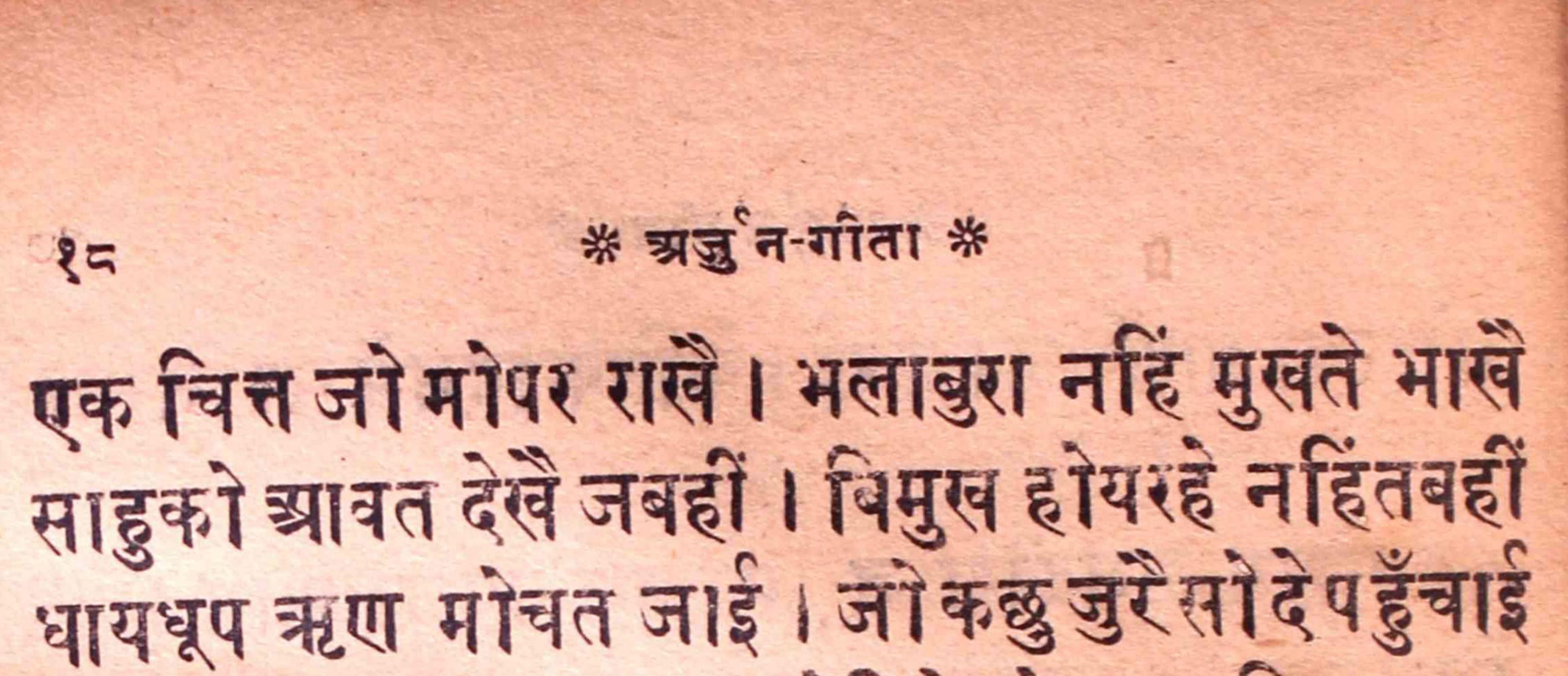


अपत्रीक पाणी जो होई। सत सङ्गति पावै नहिं सोई भावभक्तिजोचितनहिंधरहीं। निश्चयज्ञानहृदयमहँकरहीं भावभजन महँजोचितलाई। ताकर पाप सबै चयजाई कोई कथा जो मोर चलावै। तहाँ जाय निश्चय चितलावें भक्त हमार जहाँ गुए गावेँ। तिनके चरएन शीशनवावेँ धर्म कर्ममहाँनिश्चय रहहीं । मुझहोय संशय नहिं अमहीं सर्व जीवमय करुणा राखे। सत्यहिं बोले भूठ न भाखे कामकोधको चित्तन धरई। गौ बाह्यण की रत्ता करई हिरदय सदा मोर गुणगावें। अपुत्रीक बैकुण्ठ सिधावें अौर बात कहों में तोहीं। मिले न तृएा बिन आज्ञामोहीं अर्जन भाष दोउ करजोरे। संशय एक उपज मनमोरे

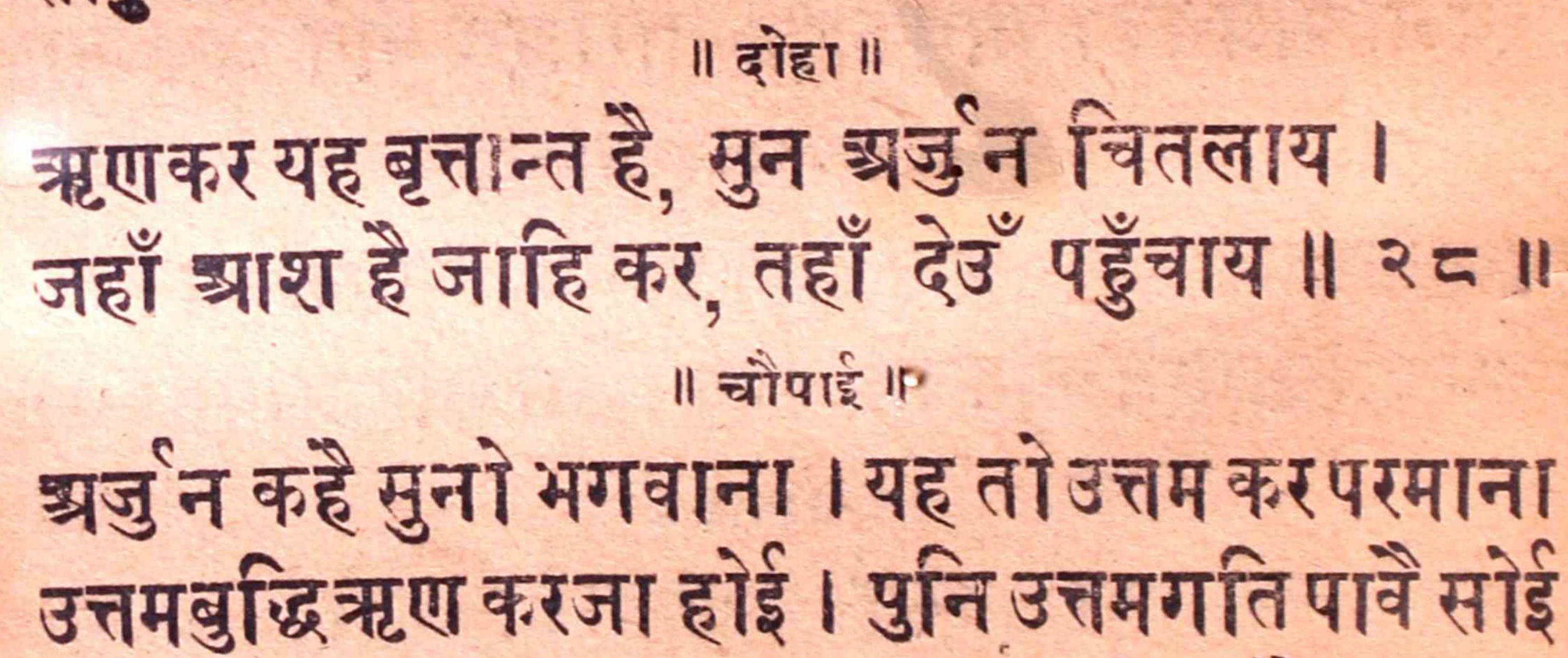
# जन्मतो आखिरजगमहँ होई। पाप किये बिन रहेन कोई तातजो मोहि भयउ सन्तापा। कैसे देह होय निष्पापा पापिननामकहौ समुफ्ताई। तिनकरपापकौनविधिजाई और बात तोहि पूळों स्वामी। तीनलोक के अन्तरयामी



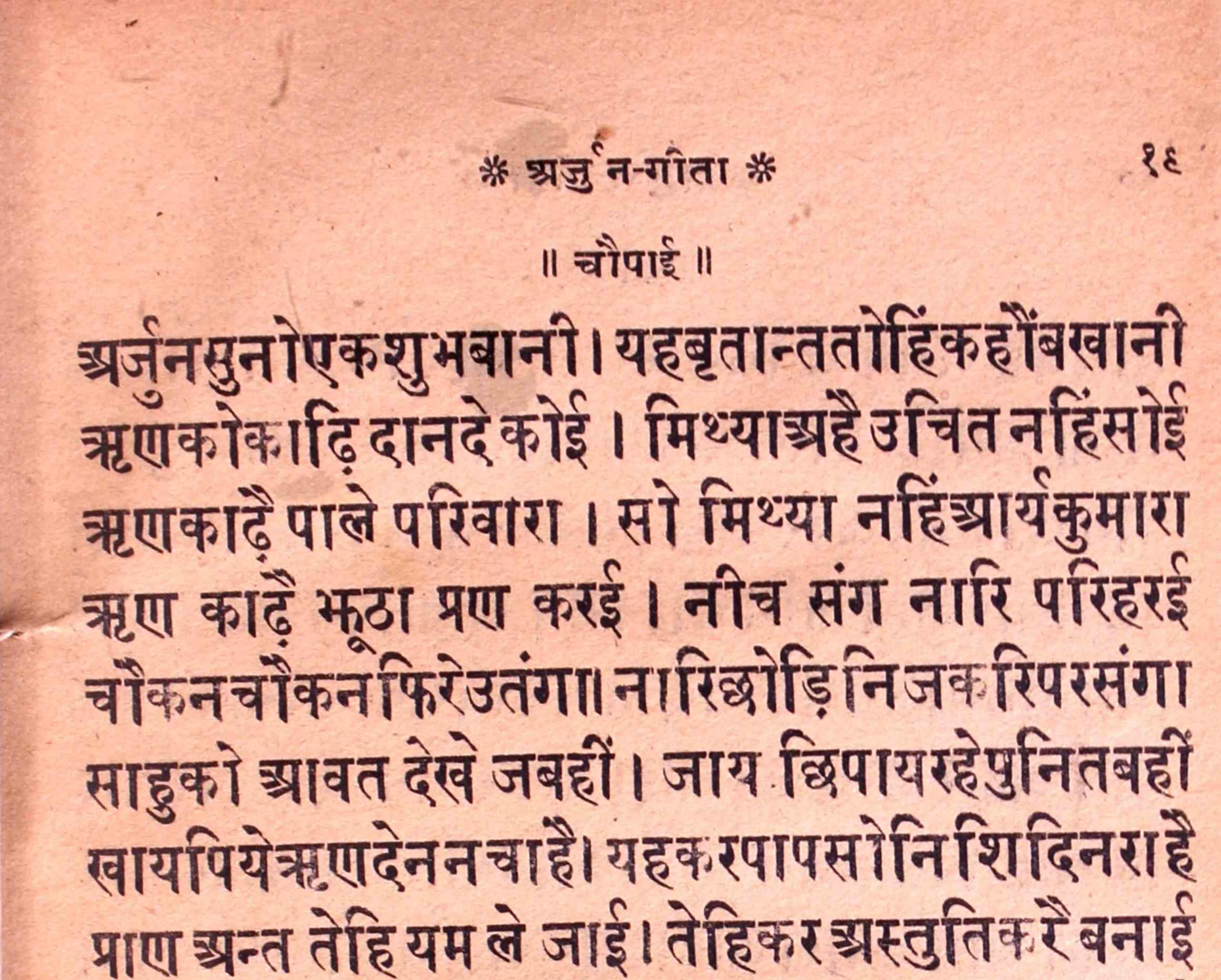
# दियेबिनाऋणछूटत नाहीं।तेहिमें यह ब्यवरा जो आहीं साधु पुरुषऋण कादें कोई। दर्ण्ड भये बिन बचैन कोई हमलवजीनप्राणिजोरहई। ऋणचिन्तानिसिवासरकरई साधुसङ्गमहँ मों गुण गावे। प्रेम-भक्ति हिरदय में लावे



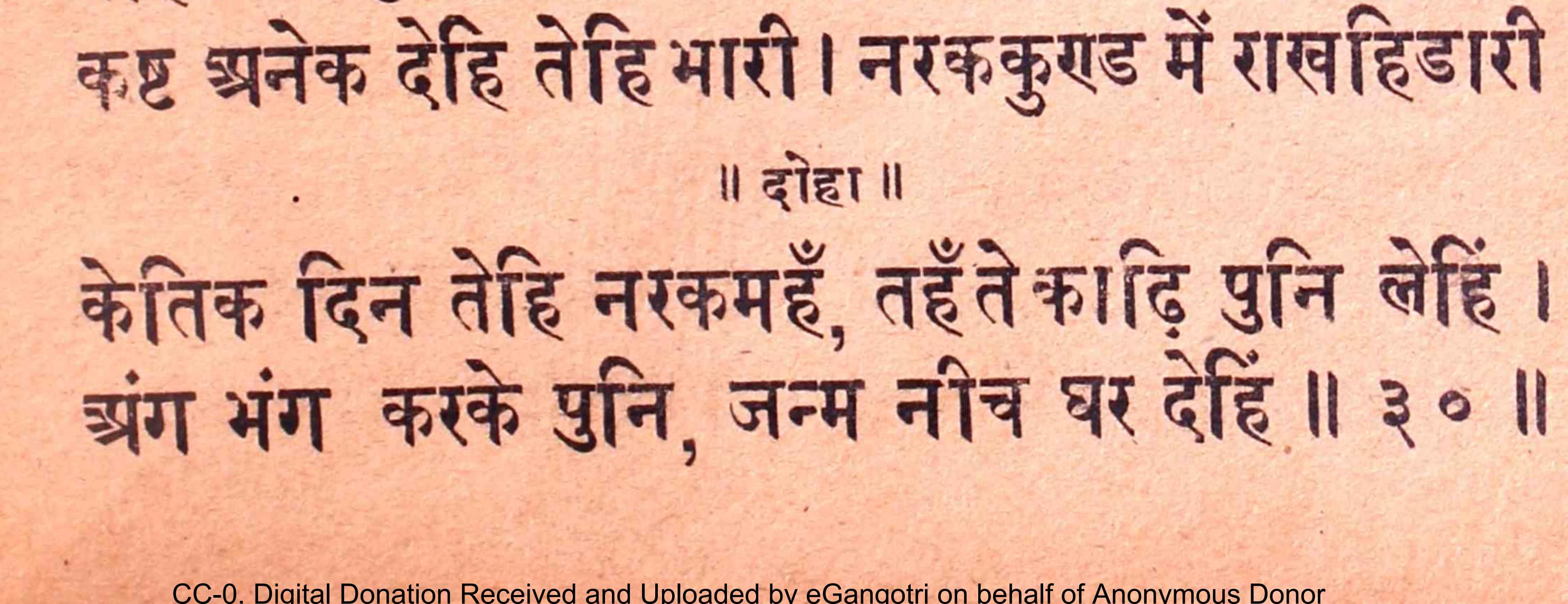
धायधूप ऋण माचत जाइ । जा कछ छरता पर हुनाई भायधूप ऋणहोय न पारा । तेहिकेदोष न कुन्तिकुमारा जहिके चित्तसदा असआहों । छूटे ऋण संशाय कछुनाहीं साहुसो साँच रहे मन माहीं । मन्द होय तो पहुँचे ताहीं तेहिप्राणीकोयमनहिंलेहीं। अगलाजन्मों सुखितसन्देहीं साहुकार जो धरता होई । तो पाये खाये सुख सोई

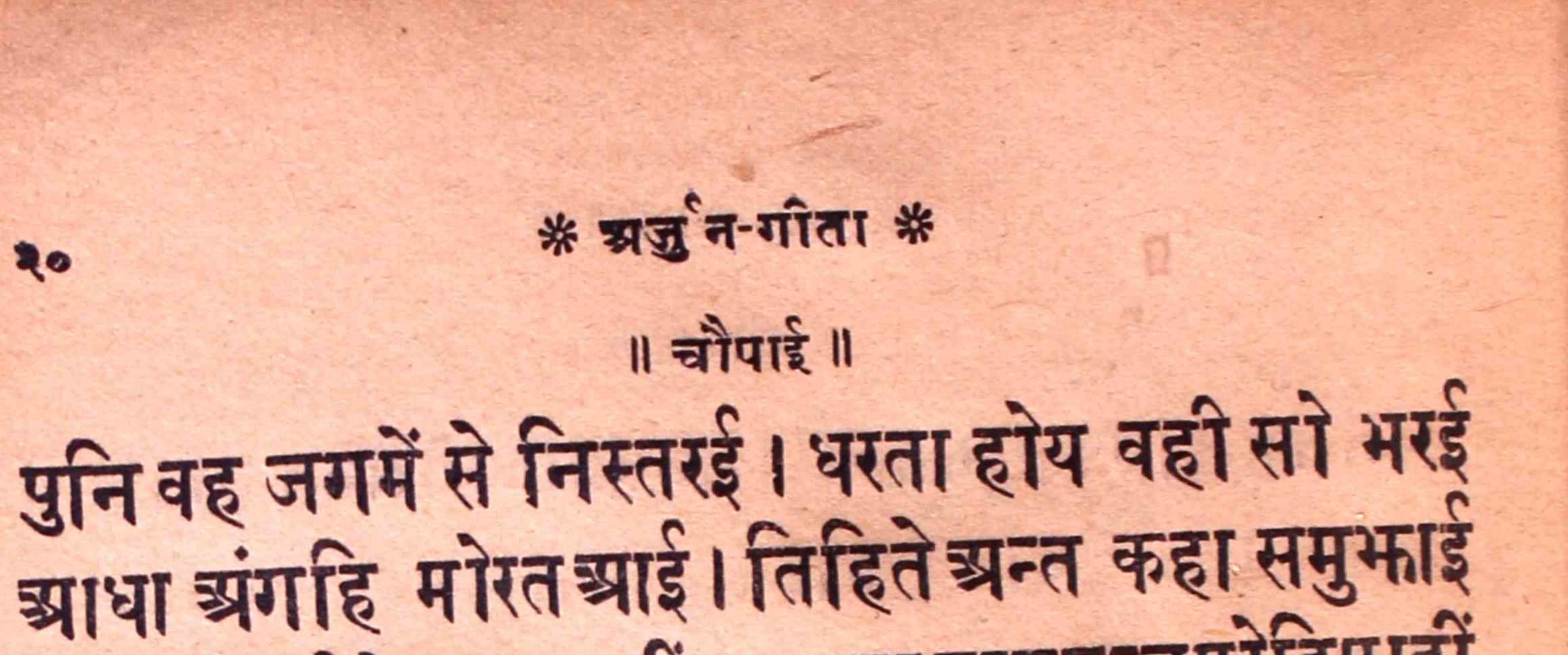


# ऋण काहे अस पापी जाना।सोक सगतिपावैभगवाना ॥ दोहा॥ धर्मवन्त ऋण काढ़ई, पावउँ ताकर अन्त। पापीजन जो लेइ ऋण, कहों तासु बिरतन्त॥ २६॥



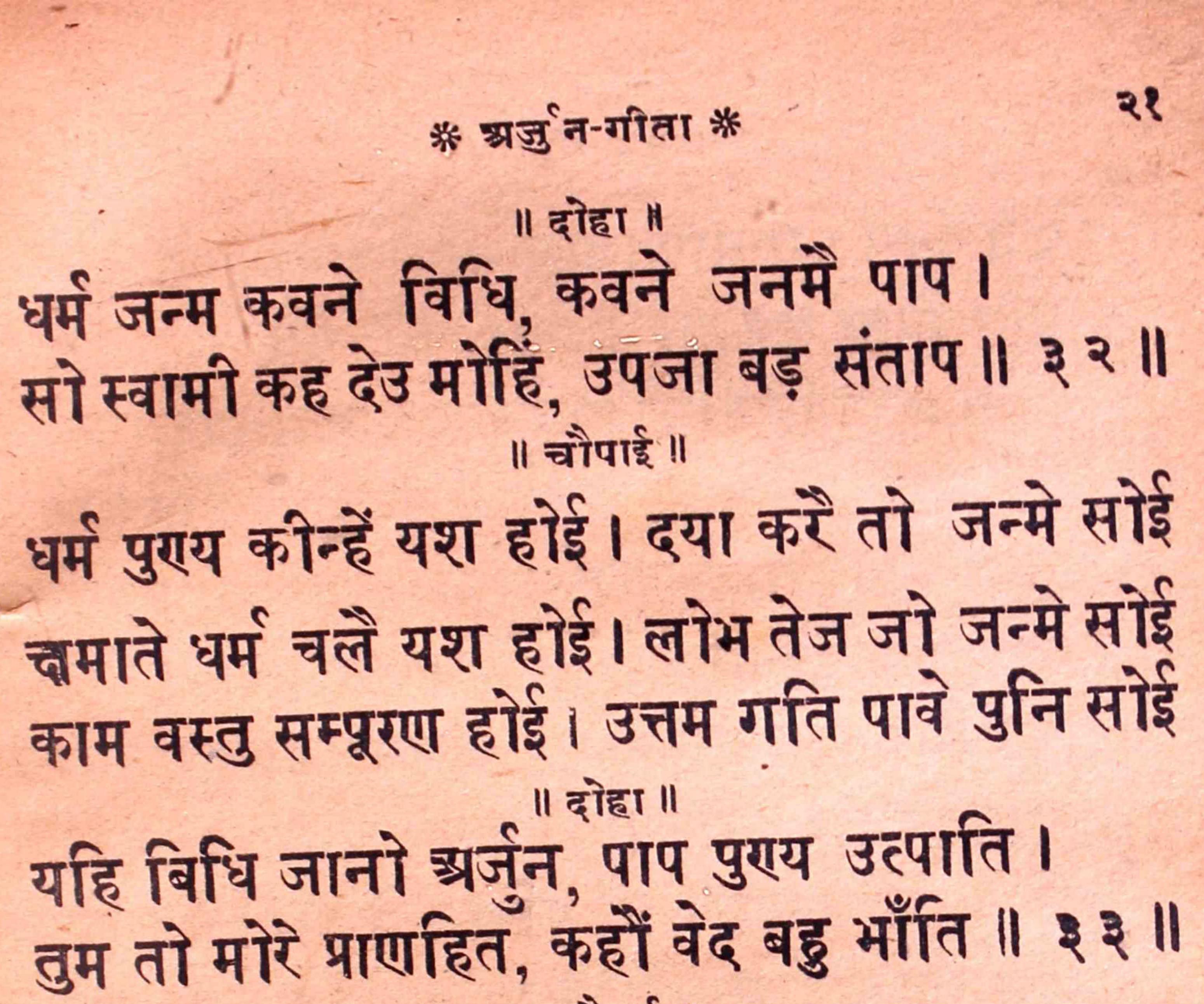
चमरा काटिके बेंत लगावे। पंथ माहिं घिसियावतलावे पहिले ले सेमर में बाँधे। तप्तफार तेहि मुख में साधे लोह की लाठी से पिटवाई। अङ्ग अङ्ग काँटा चुभवाई तहवाँते पुनि बेगिले आवे। तावापर तेहि पुनि बैठावे तहिके तर पुनिआगलगावे। ऊपर तेल आँचि दरिकावे





तीन लोक मेरे ऊपर माहीं। सबकर तन्त्रमन्त्रमोहिपाहीं यह संसार जहाँ लगि होई। मम आज्ञाबिन अहेन कोई नितउठिभोजनसबको देऊँ। सबकी खबर साँभ को लेऊँ नितउठिभोजनसबको देऊँ। सबकी खबर साँभ को लेऊँ जौन अहार जन्तु जो खाई। ताकर तैसे देउँ पहुँचाई मम आज्ञाबिन अन्न पावे। कोटिभाँतिक रियुक्तिबनावे

# सबको आस हमारी आही। मुनु अर्जु न तोसों सतकाही कीटपतंग में बास है मेरा। मेंही हों रचक सब केरा ॥ दोहा ॥ एक आत्मा जानडु, दूसर तिहुँ पुर नाहिं। कहों गुप्त कहिप्रगट है, मुनु अर्जुन मन माहिं॥ ३ १॥ ॥ चौपाई ॥ अर्जु न कहैदोउ कर जोरी। आदि अन्तशरणागत तोरी श्रीयदुपति त्रिभुवन के कर्ता। दुष्ट दलन सन्तन दुखहर्ता आदि अन्त भक्त भयहारी। सब में ब्यापक देख मुरारी जो तुम कहो सोइ में जाना। ओरहुकथा कहो भगवाना



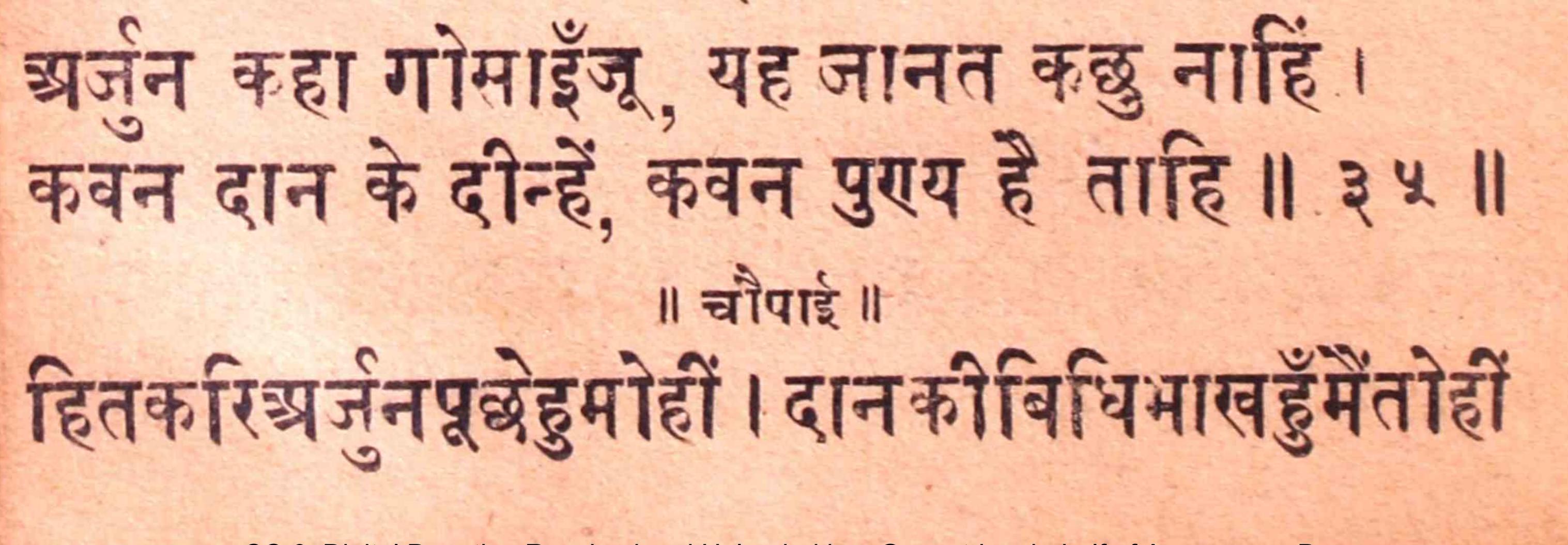
तुम तो मारे प्राणहित, कहा वद बहु माति ॥ २२ ॥ ॥ चौपाई ॥ अर्जु न ठाढ़ भये प्रभु आगे। हाथ जोरिके प्रछनलागे ॥ दोहा ॥ बेदन बिषे बिचारि के, मोहिं कहो नन्दलाल । कवन कर्म के कीन्हें, प्राणि होय चराडाल ॥ ३४ ॥

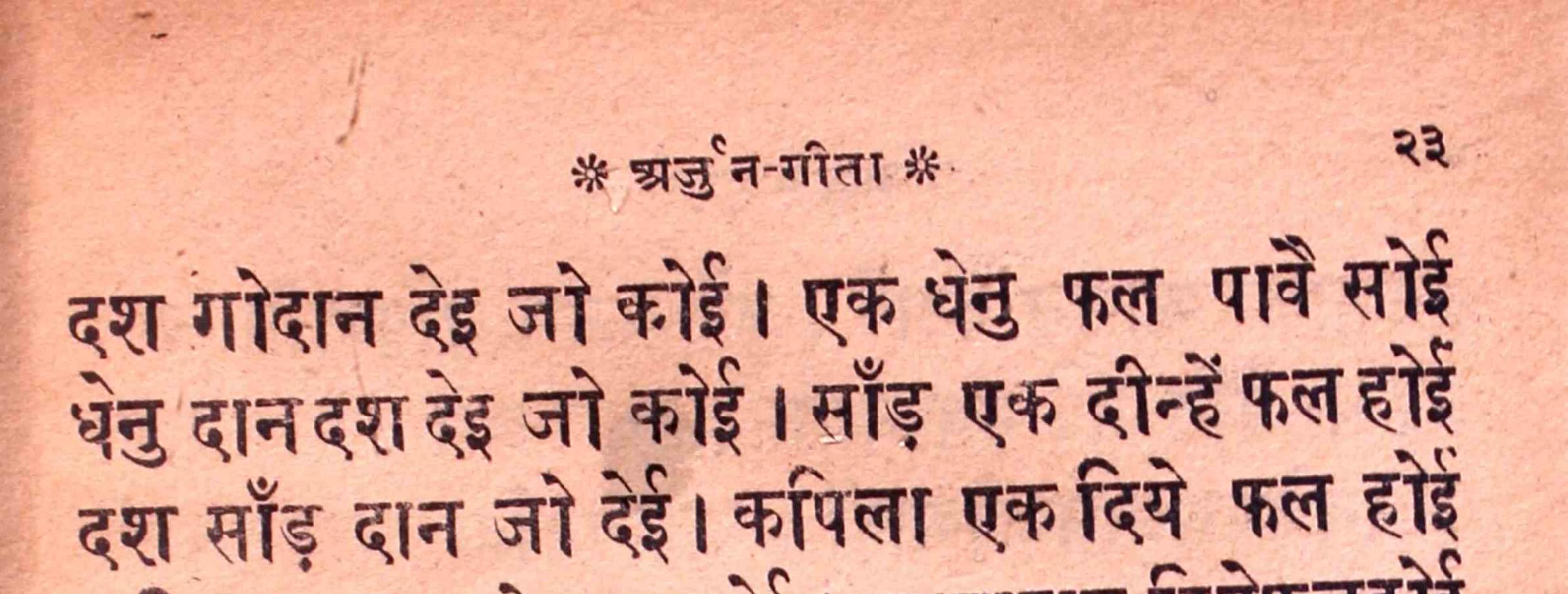
#### ॥ चौपाई ॥ इयज नसुनहु कहत भगवाना । इतनीबातसुनापरमाना बाह्यण ब्रह्म कर्म नहिं राखे । देवलोकसबहीप्रति भाखे बाह्यण ब्रह्म कर्म नहिं राखे । देवलोकसबहीप्रति भाखे बिना दत्तूनी भोजन करई । सोचाण्डालकृष्ण असकहई

# २२ \* ग्रज्जन-गांता \* देवन पूजे बिन पग धोये। ग्रज्जनसुन चराडालहे सोये जाके मात पिता बध होई। सेवा करे पुत्र ना सोई ताहीकोतुममृतकहिजानो। ग्रजुनसोचाराडालहिमानो

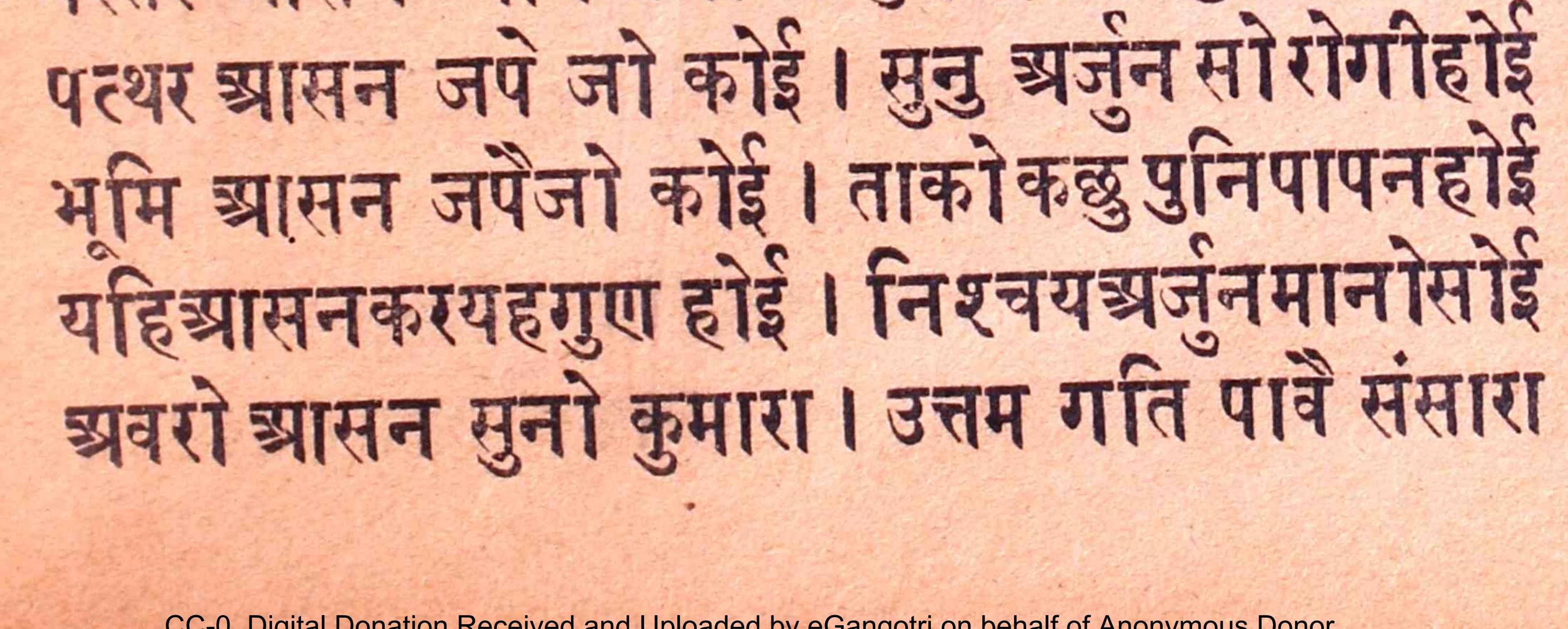
पूरण गर्भ नारि जो अहई। ताकर पुरुष संगतेहिकरई हत्या तुल्य पाप है ताही। अर्जु नसुनचा गडा लसो आही आगिलगाय के देहजराई। सुरा अमिषनि सिवासर खाई महापाप निश्चय सो जाना। सो अर्जुनचंडा लसमाना बच्छा गाय बिछोह करावे। सो प्राणी चगडाल कहावे

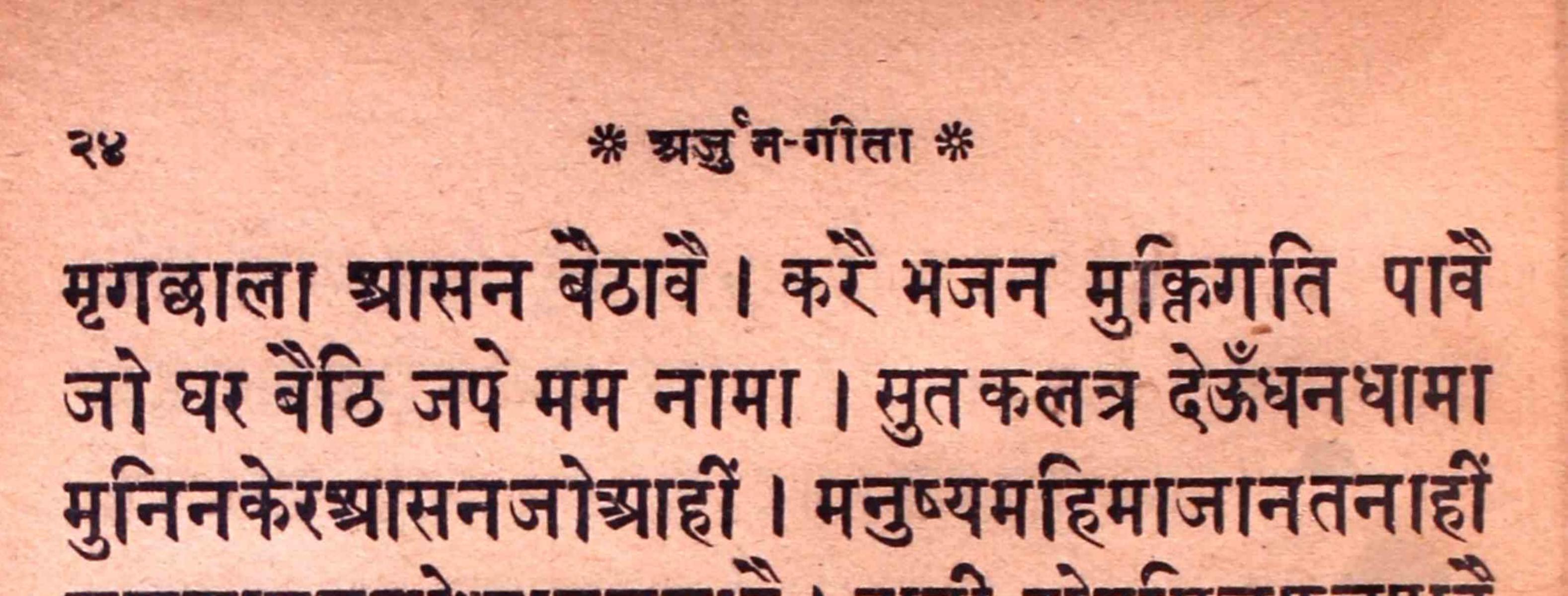
#### अर्जुनसों ये कहें नन्दलाला। पत्तिन में कागाचंडाला पशु अन में गर्दभ को मानो। बनस्पतिन में ताड़ बखानो पानी पियत गाय खेदवावे । सो प्राणी चंडाल कहावे तेल लगाय न कर अस्नाना । सोप्राणीचंडालसमाना रति करि जो न करें अस्नाना। सोप्राणीचंडालसमाना ॥ दोहा ॥





# कपिला दान करे दश जोई। कन्यादान दियेफलहोई दशकन्या दे दान जो कोई। बिगहाभूमिदियेफलहोई दश बिगहा भूमि दे कोई। ज्ञान ध्यान फलपावैसोई दानध्यानकहिज्ञानकलेषा। आसनउनकरसुनियविशेषा ॥ दोहा ॥ जेतिक दान करें नर, तेहि फल पावें सोइ। शालिग्राम के दान सम, और दान ना कोइ ॥ ३६॥ ॥ चौपाई ॥ मुनु अर्जननिश्च यकैभाखों। सोतुमनि जहिरदयमोराखों आसन भेद जोप्रअहुमोहीं। सोसब भेद कहों में तोहीं बस्तर आसन ध्यान लगावै। दुखीहोयकछुफलनापावै

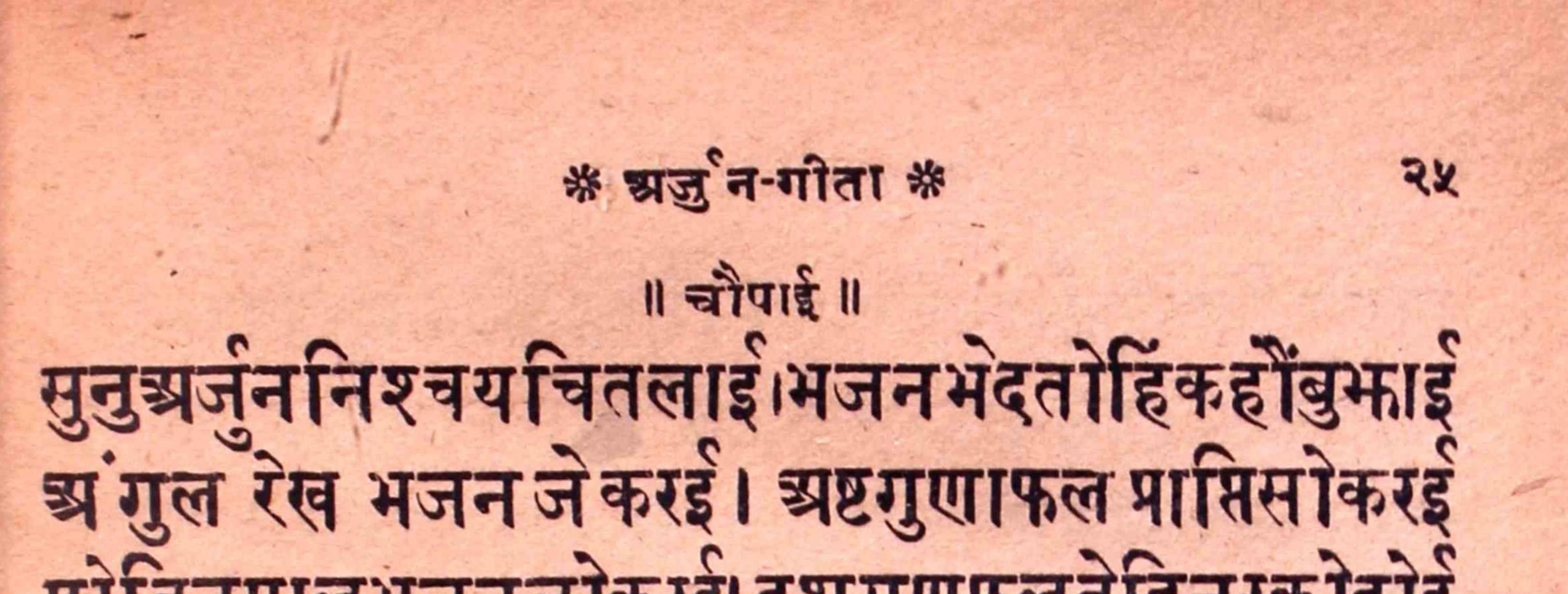




#### कुशाआसनजोध्यानलगावै । ज्ञानी होयसिद्धफलपावै काम क्रोध तजि ध्यावे जोई । नेमधर्मफल पावे सोई ॥ दोहा ॥ तब अजुन कर जोरिके, कहा सुनो यदुराय । सदा संयोग न पावे, ताको कोन उपाय ॥ ३७ ॥ ॥ चौपाई ॥ कृष्णकहहिंअर्जुनहिबुफाई । सदासंयोगआसनहिंपाई

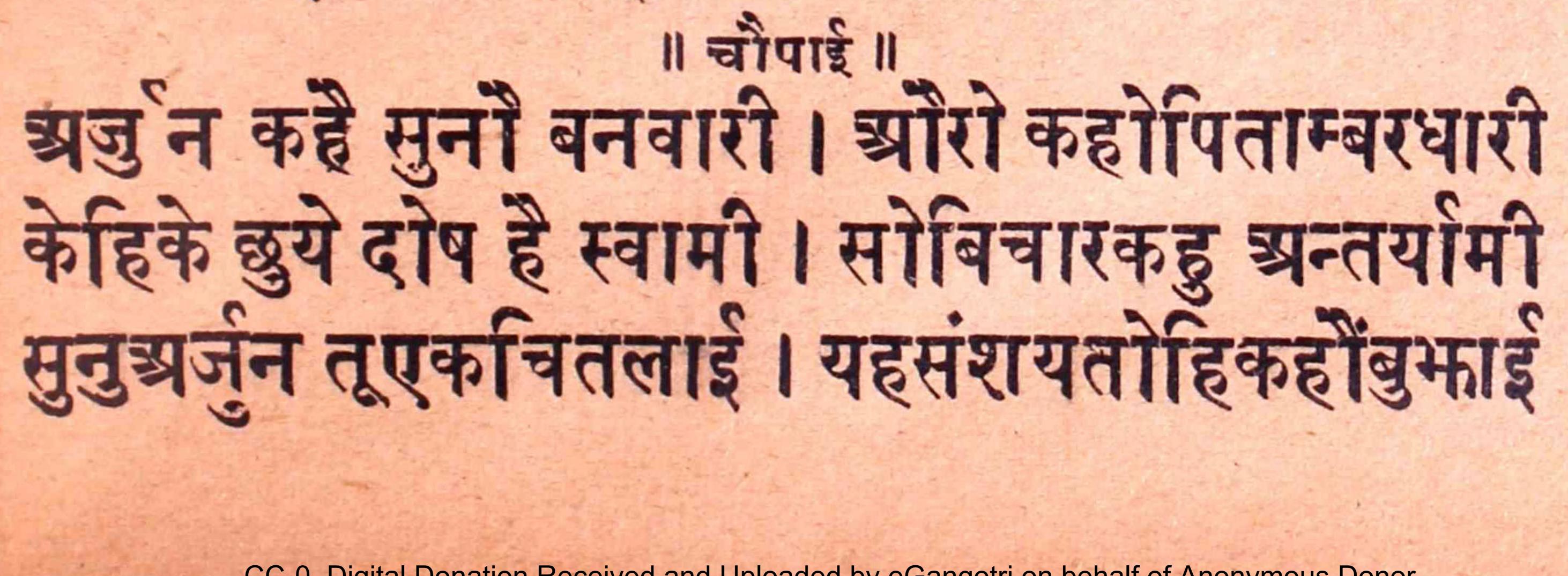
कृष्णकहाहअजुनाहबुमाइ । सदासयागआसनाहपाइ तेहिकरएक आहैपरकारा । सो मोसे. सुनु कुन्तिकुमारा तृण एक जहाँ तहाँते लावे । द्वादशाओं गुलप्रमाणबनावे अर्जुन कहे दोउकर जोरी । आरेर कछू बिनतीप्रसुमोरी आसनबिधिपूछेउँ भगवाना। तुमप्रसादपायउँ ब्रह्मज्ञाना भजन भेद भाषों यदुराई। कोनी भाँति कोन फलपाई

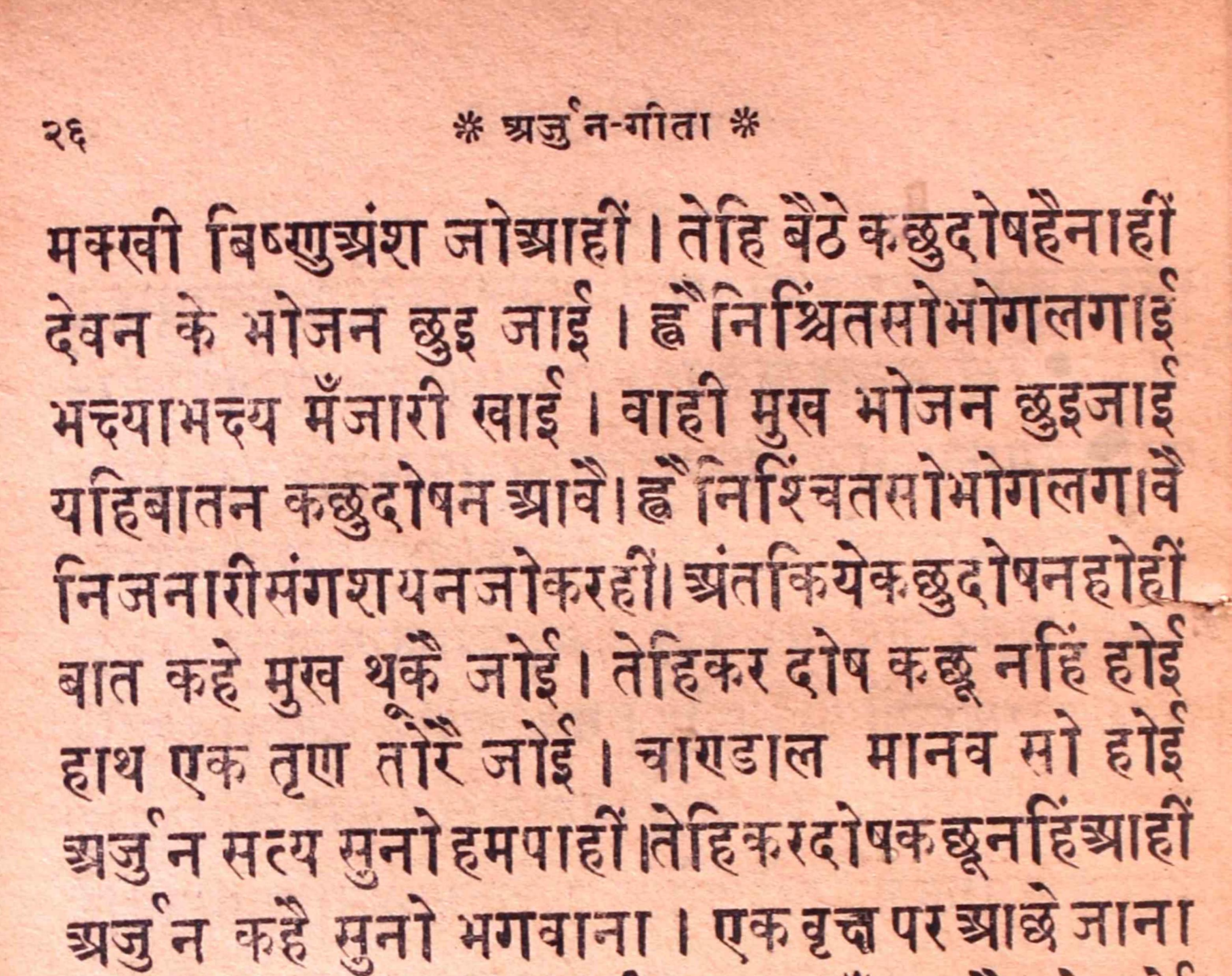
# कौनी माल कौन फलहोई। सोमोहिंकहौनराखौंगोई ॥ दोहा॥ सुनहु स्वामि जगजीवन, यदुपति नन्दकुमार। भजन भेद जिमि जानहु, श्रीमुखकहोबिचार॥३ = ॥



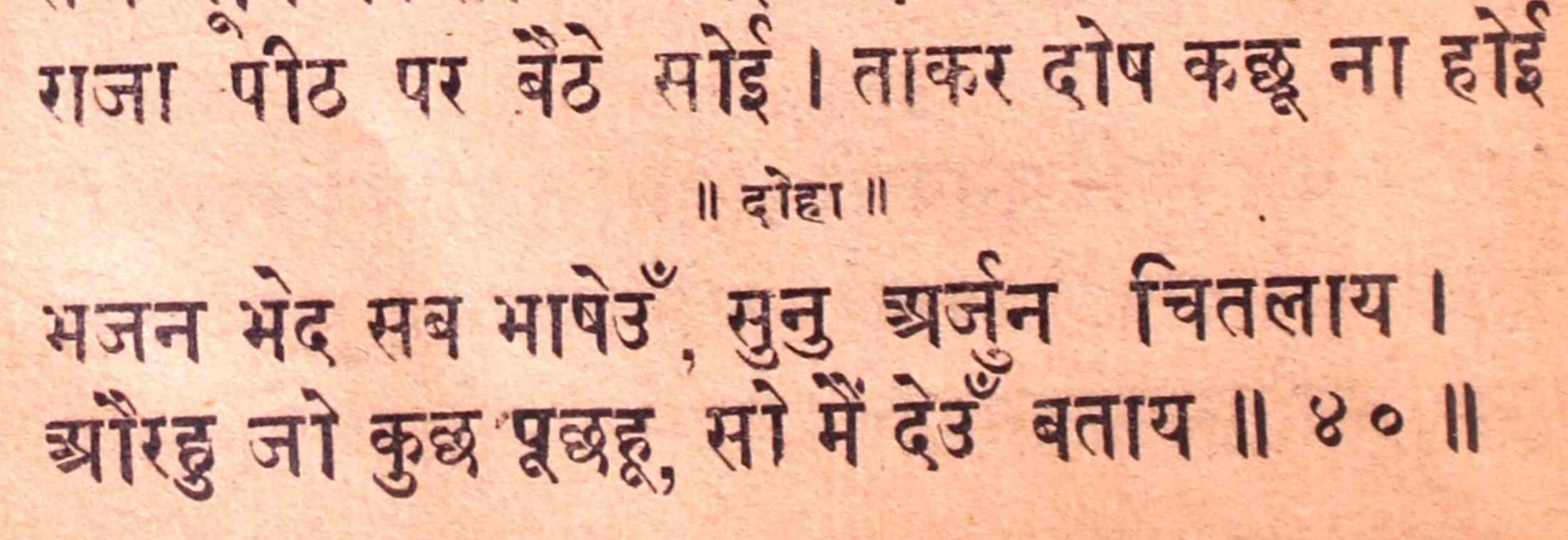
मोतिनमालभजनजोकरई। दशगुणफलतेहिनरकोहोई शंखमणिमालजपैजोकोई। द्वादश गुणफलताकोहोई कमल माल जपै जो कोई। सहसगुणाफलताको होई सुवरणमालाजपे जो कोई। एक कोटि फलताकोहोई कुशकाँड़ी माला जप जोई।दशकोटि फल ताकोहोई पदमफलमालजपे जो कोई। पन्द्रह लचताहि फलहोई

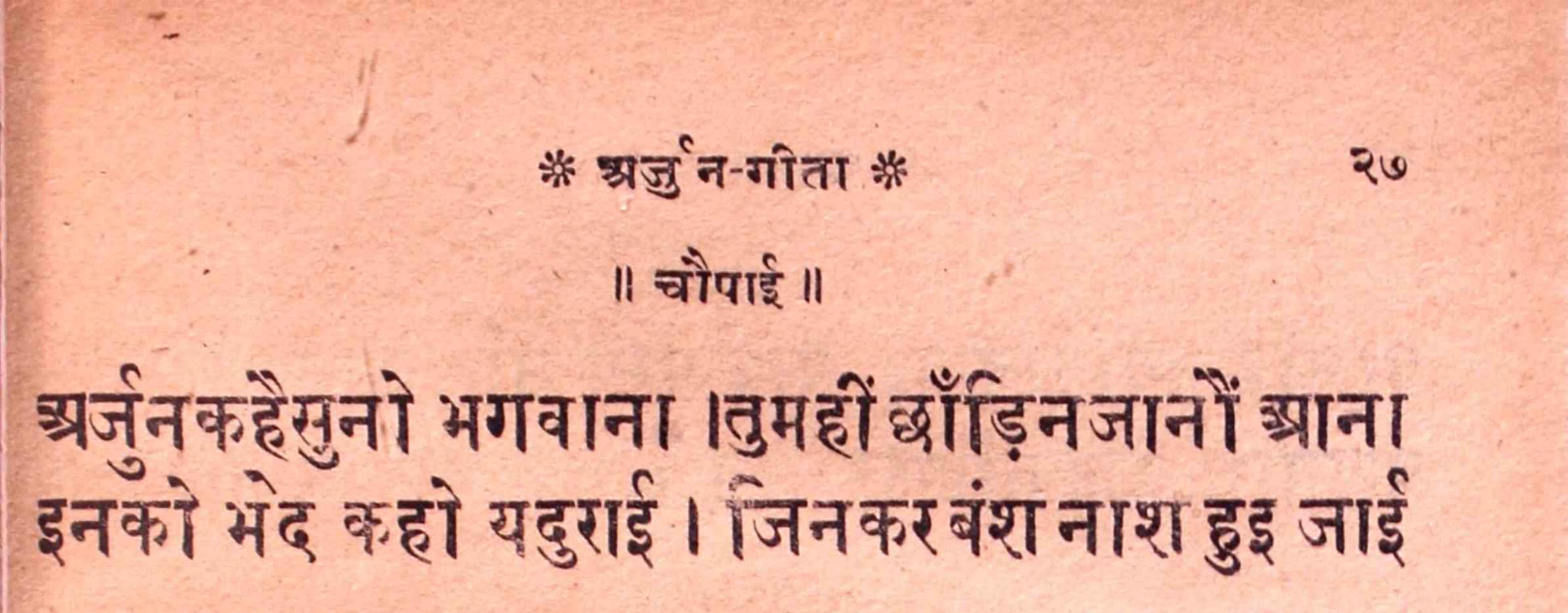
#### चन्दनमाला जपै जो कोई। दश सहस्र कोटिफलहोई रुदाच माला जपै जो कोई। बारहकोटि ताहि फलहोई तुलसीमालजपैजोकोई। ताकरफलमोगिनती न होई ॥ दोहा॥ भजन भेद सब भाषे हूँ, सुनु अर्जु न चितलाय। और कछू जो प्रबह, सो में कहों बुमाय ॥ ३ ६॥

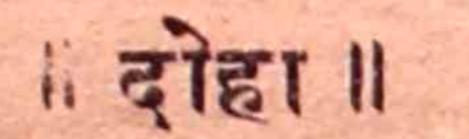




नाव एक दिशि हाँडी होई । अन्त राँध राखे जो कोई तेहिकरदोषकछूना आहहीं। निश्चयवचन रूष्ण जो कहहीं बाह्यण केहि नारि जल देई। भिचा अपने बासन लेई दोषन आहे रूष्ण असकहहीं। द्वादशा आंगुलबीच जो रहहीं सेज भूमि पर सोवत आई। एक चराडाल श्वर जो होई



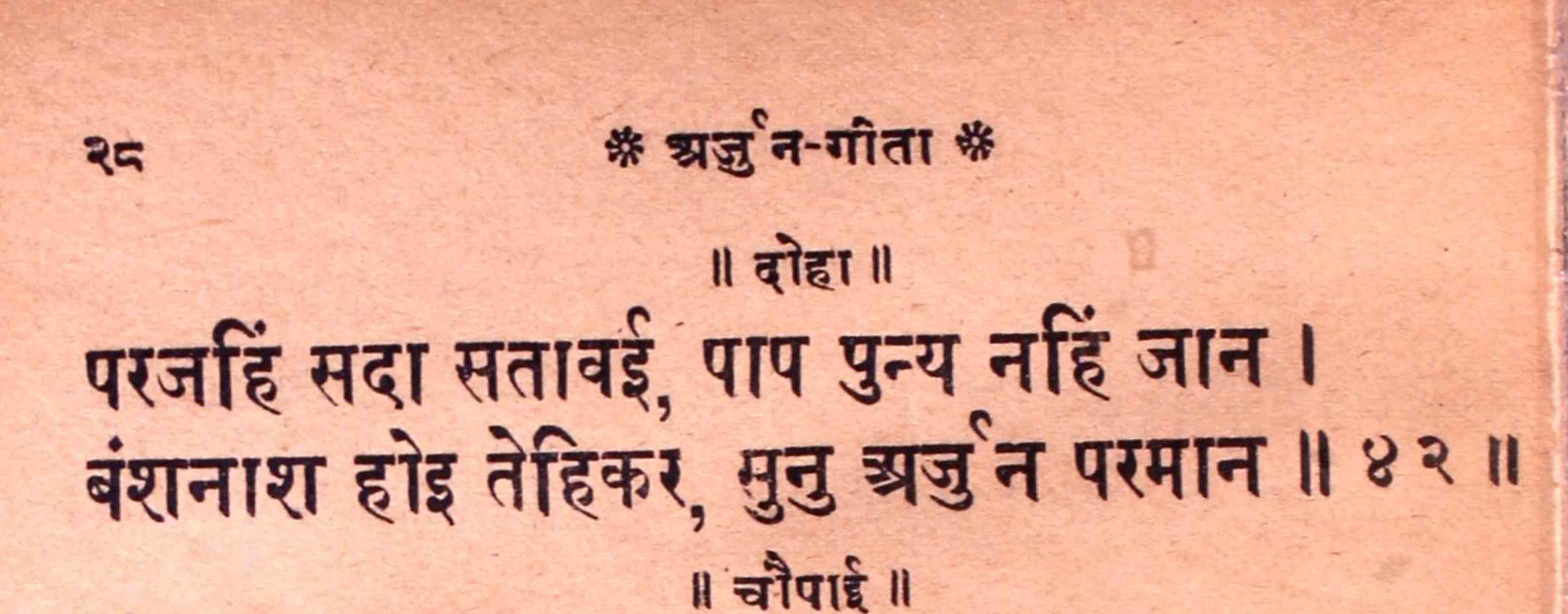




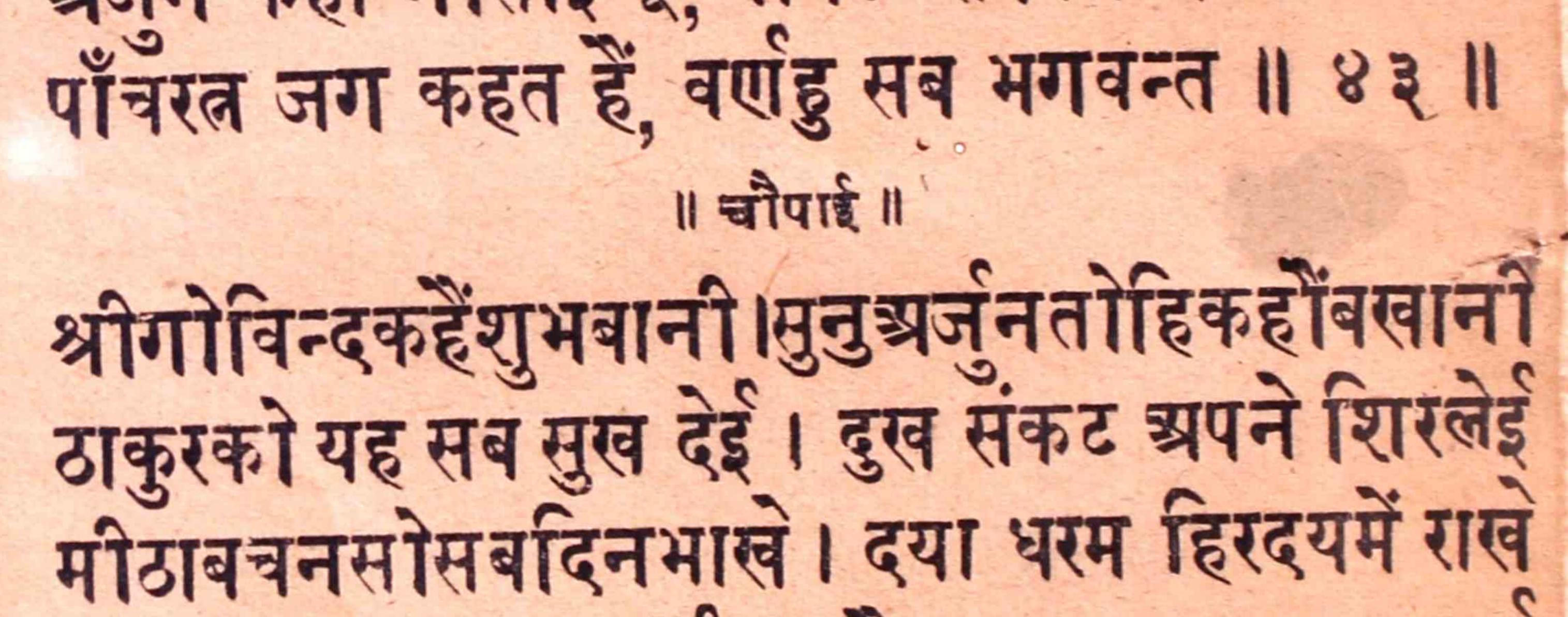
#### कवन पाप से स्वामिजू, बंशनाश होइ जाय। कृपा करो गोसाइँजू, मोहिं कहो यदुराय ॥ ४१ ॥

॥ चौपाई ॥

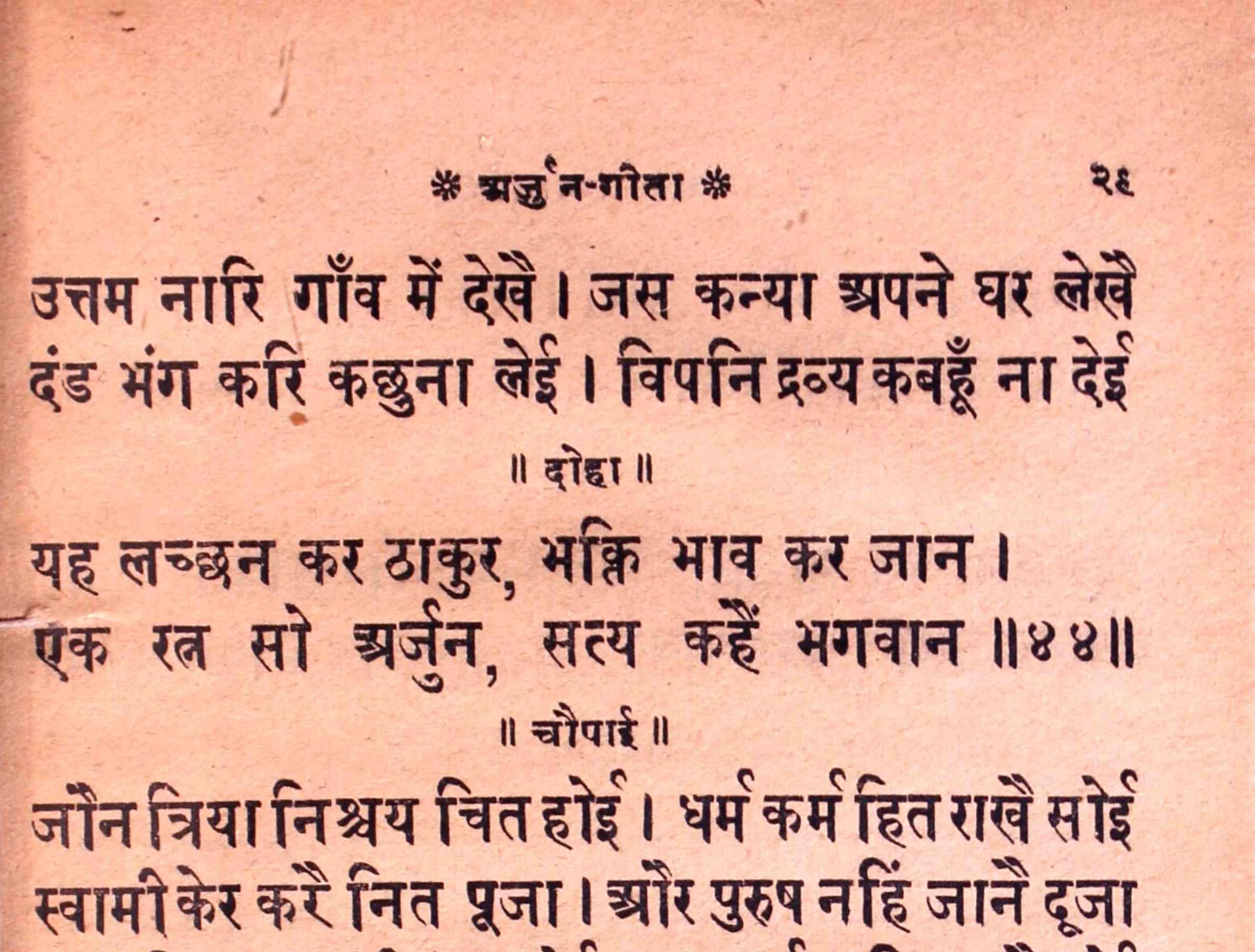
सत्यवचनसुनुकुन्तिकुमारा। यहिवातनकरकरोबिचारा जौन नारिके सुतनारहई। निशदिनपरपुरुषनमनधरई श्रीस्वामी को चित्त न लेवे। बात कहत उत्तर सो देवे पहिर दुइकुल अपयश पावे। प्राण अंतयमलोकसिधावे बौर कथा मुनु अर्जुन सोई।वंशनाशा जेहि कारण होई सत्यबचन बोले नहिं प्यारा। चित्त मों बसे पराई दारा सभा बैठि परनिन्दा करई। कानलगाइकै नृपसों कहइ परधन काढ़ि द्रव्य जो देई। सो संताप आपनो लेई जो पराइलेइ सुख सो खाई। ताकर वंशनाश होइजाई ऊँच नीच ना करे बिचारा। सदा अनीत संगपरद रा



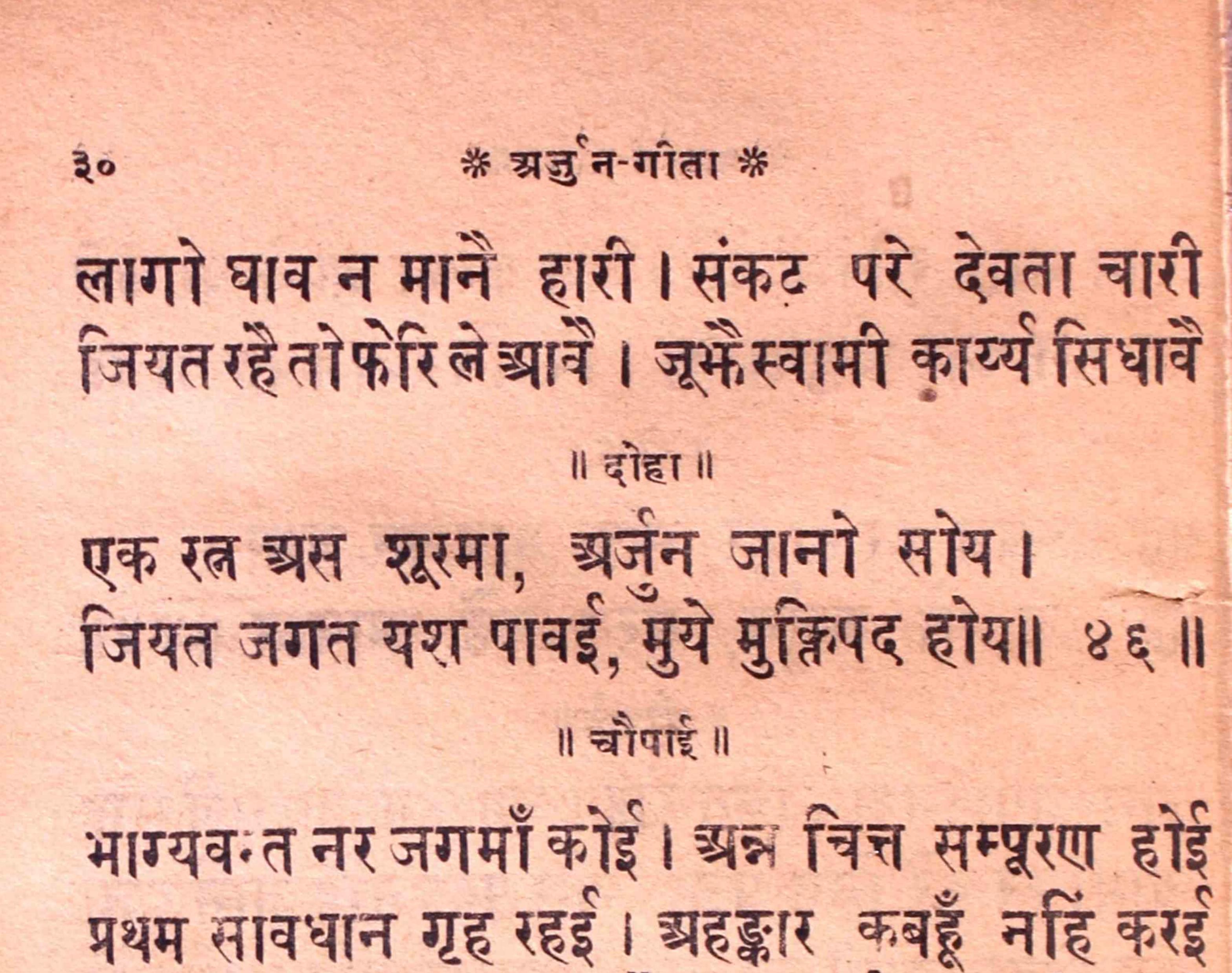
# अर्जुनसुनोएक चितलाई। जेहि घरगैयाहोयअधिकाई गर्व करें तो सकें न रोकी रोगब्याधिजोगायनब्यापी ताको बंश नाश होइ जाई। यह जानों निश्चयतुमभाई ॥ दीहा ॥ अर्जन कहा गोसाँइजू, पायउँ सबकर अन्त।



# भावभक्तिमोभाषण करई। करें सहाय बचन सम करई परे अकालप्रजा प्रतिपाले। दुःख परे तो सत्य न घाले भक्ति होत तो दे पहुँचाई। आशनिराश कबहुँनाजाई बाह्यण गायकी रत्ता करई। नेम धर्म अपने मन धरई



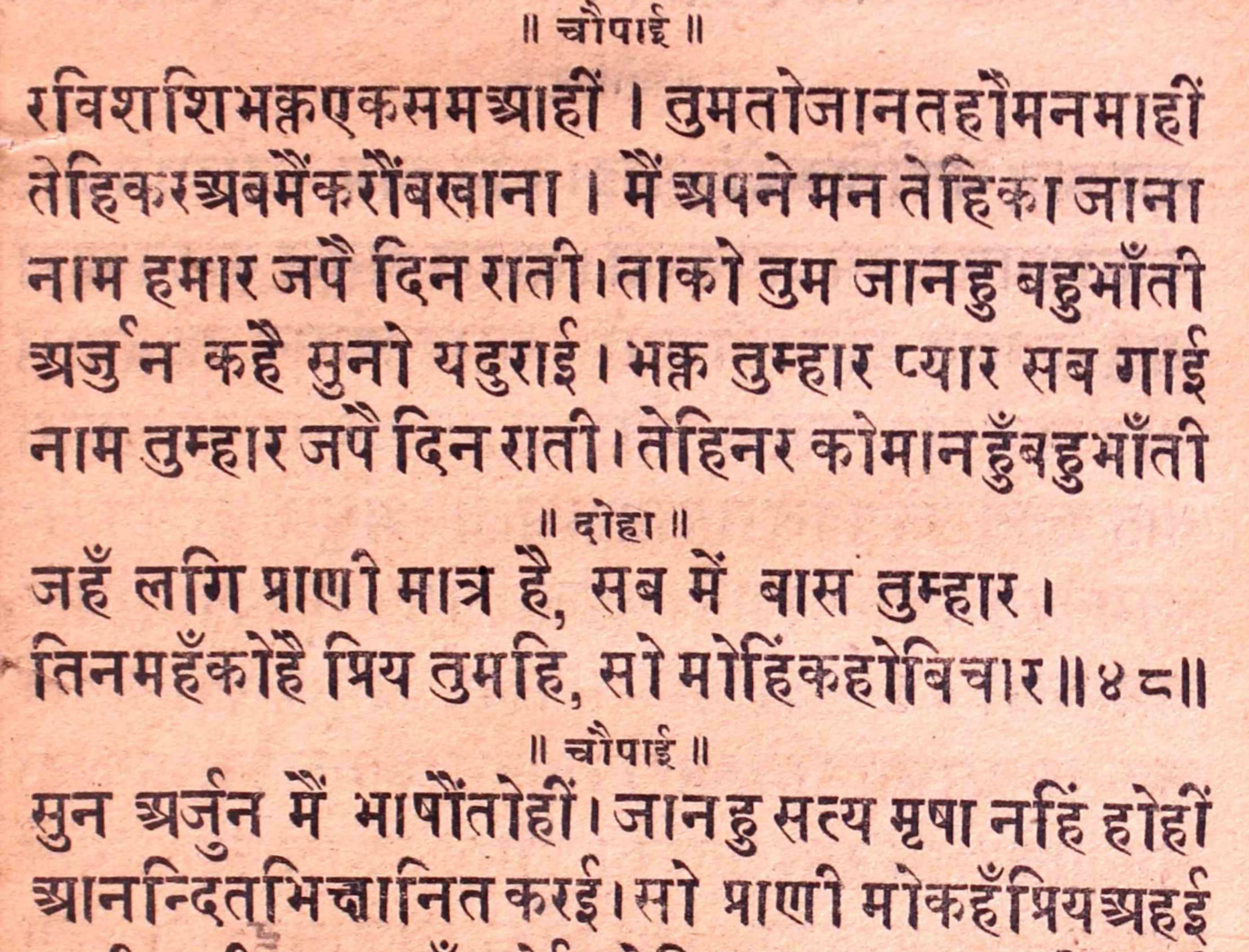
# मात पिता स्वामी कर होई। अपनाई करि जानै सोई बाह्यण गाय देवसम जाने। यह अपने मन निश्चय माने भिचुक आय निरास न जाई। जो कुछ जुरें सो देइ मँगाई पतित्रता सो सती कहावे। आप तरें दुइ कुलन तरावे ॥ दोहा॥ यहि लच्चण की भामिनी, सुजु अर्जुन चितलाय। एक रत्न सो जगत महँ, सत्य कहें यदुराय॥ ४५॥ ॥ चौपाई॥ जो नरहोय समर में श्ररा। धीरज साहस मुख को श्ररा ताकरस्वामि जो रण में हारे। स्वामी को संकट जो टारे



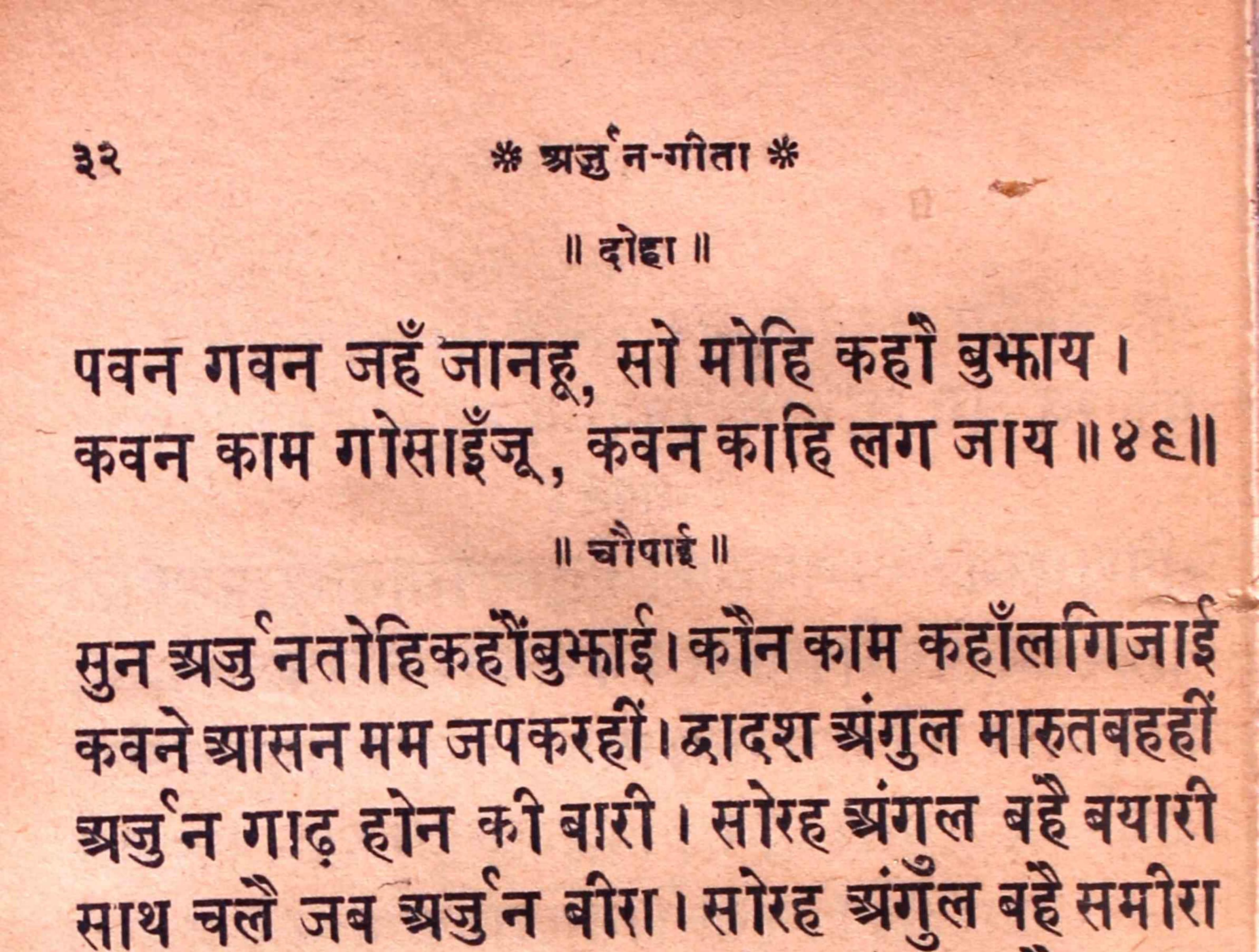
अपनेकुटुम्बजहाँलगि जाने।मायागर्ब बीच नहिं झाने आई बन्धु और जो कोई। यार दोस्त बेरी किन होई बाहर के आवे मेहमाना। ताको बिदा करे सनमाना सबकर झादर करे बनाई। बिदा करे बहु प्रीति बढ़ाई दुखित देखि चितदयाजोकर्र्ड। भक्तिहमार हृदयमों धर्र्ड

# गो बाह्यण देवन सम जाने। कुलकुटुम्बकी लाजन माने भक्वहिं देखि विष्णु सम प्रजे। अवर देव नहिं कबहुँ नदूजे परनिन्दा परबाद न जाने। परनारी माता सम माने नियमदानधर्महुँकछु करहीं। कछु २ वेद पुराणहुँ मुनहीं

# \* श्रज्जन-गीता \* ॥ दोहा॥ यह लच्छन धनवन्त कर, सुनद्द सो कुन्तिकुमार। एक रत्न जग जानिये, निश्चय वह संसार॥ ४७॥

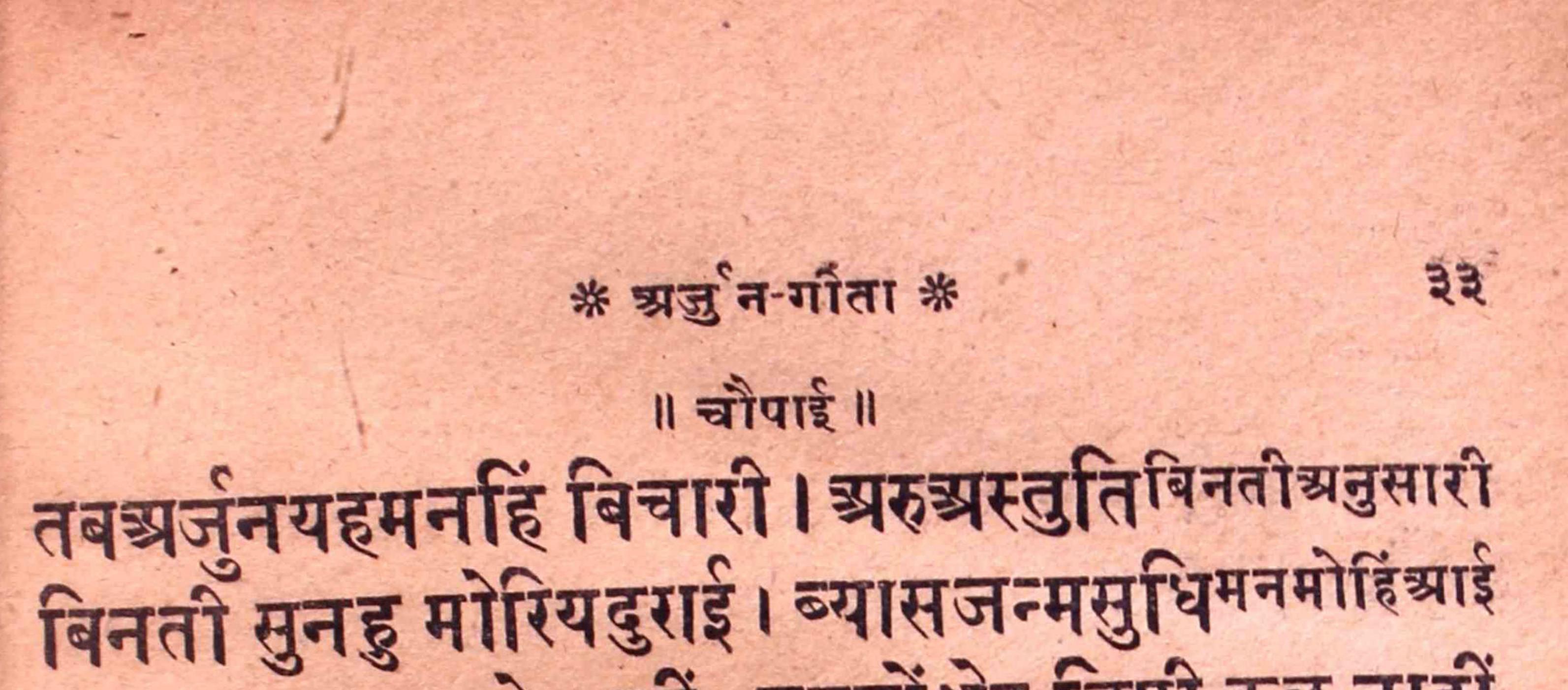


नारी सती जात महँ जोई। तेहि पठवा मानबनहिं कोई अर्जु न बहुरि कहे करजोरी। पारब्रह्म सुनु बिनती मोरी और एक संशय प्रभु मोरे। बिनवों नाथ दोउ कर जोरे नाथ पवन जो आवे जाहीं। ताकर मर्म कहो हम पाहीं

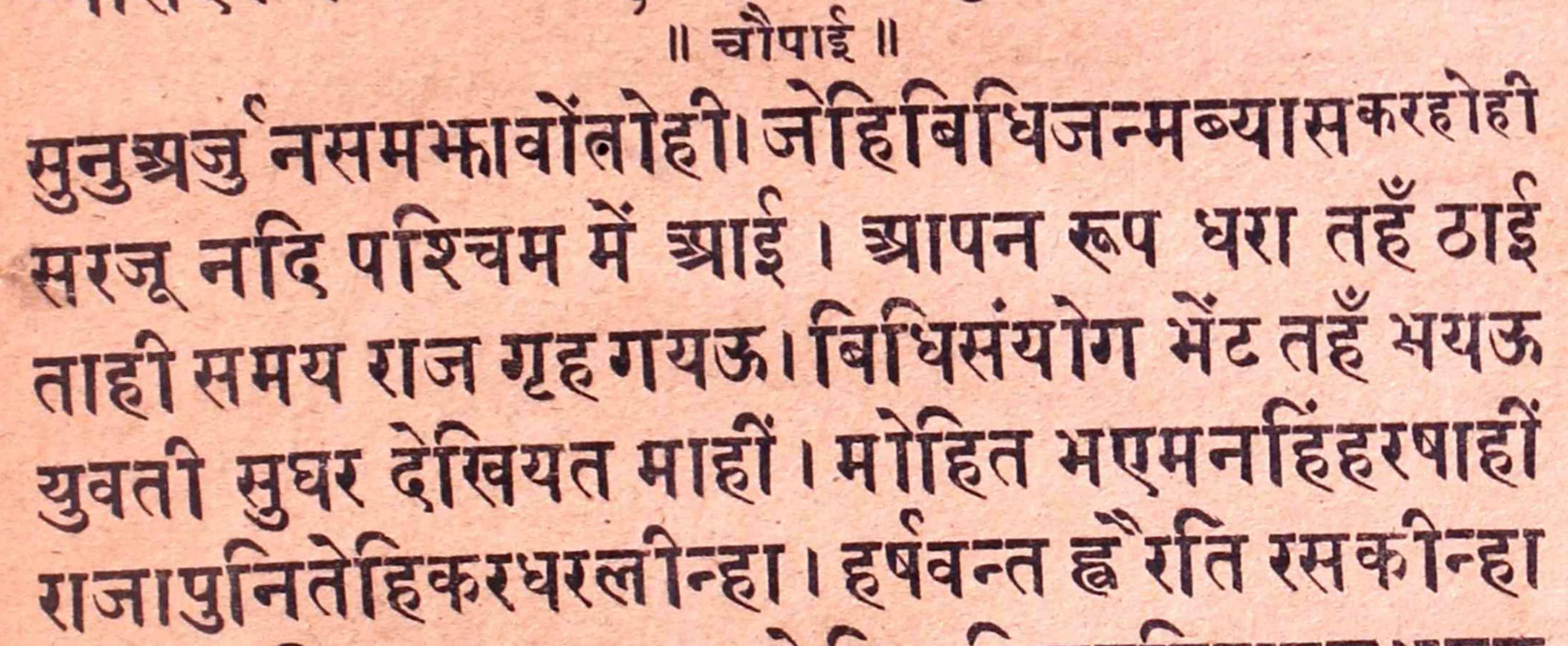


बात कहत सब पवन सयाना। छत्तिस अंगुल करे पयाना कामकरत जबपाणी पावे। एकतालिस अंगुल श्वासाधावे जब प्राणी को निद्रा आवे। चोदह अंगुल श्वासाधावे जब नर नारीसों रति करहीं। बावन अंगुलश्वासाबहहीं जब प्राणी को रोग सतावे। चोंसठ अंगल श्वासाधावे

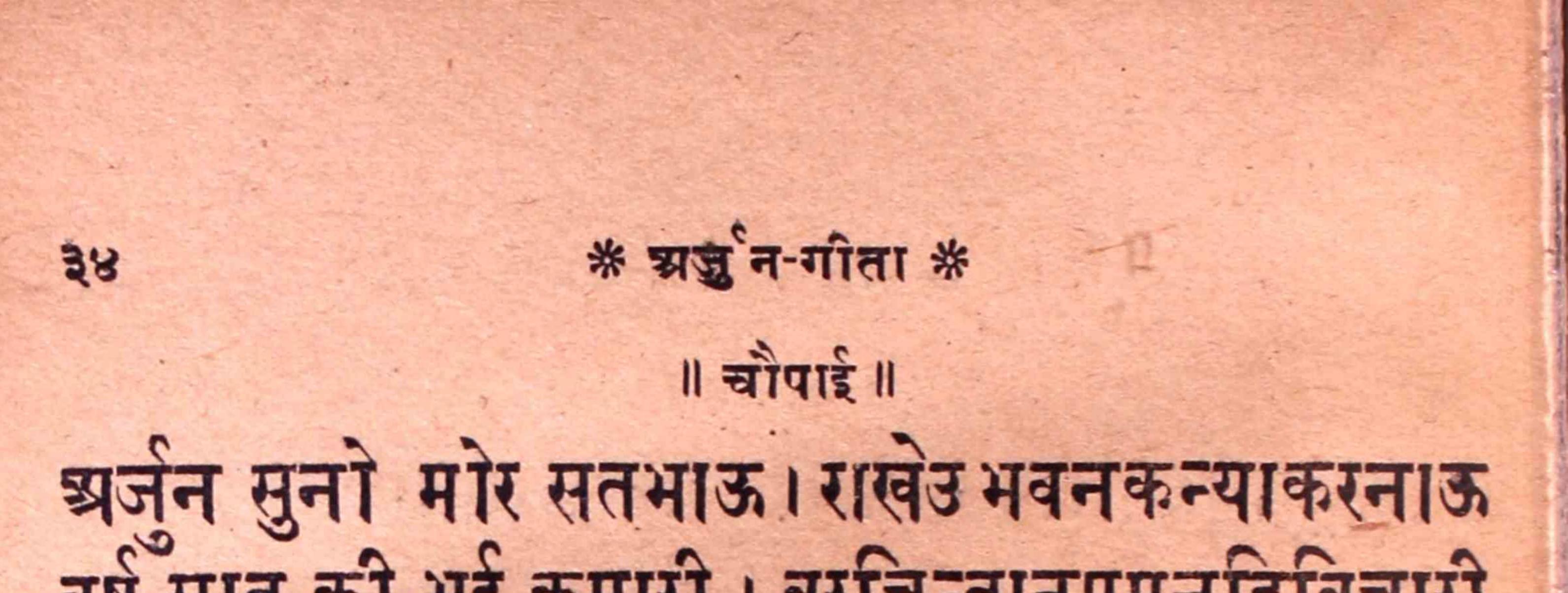
# बिंशतिजितनेपवनप्रकाशा। तिनकाजानहुकालहिंग्रासा ॥ होद्दा॥ पवन गवन के अर्थ सुनि, वहाँ जन्म वृत्तन्त । सब शरीर के अन्त प्रभु, नर सों पाव न अन्त ॥ ५०॥



#### बिनती सुनहु मारियदुराइ। ब्यासजन्मसुधिनन्नाख्याः ब्रह्मा का नाता सो आहीं। तुमसों भेद छिपी कुछ नाहीं यह संशय मोहिं नन्दकुमारा। केवट तनय कहे संसारा ॥ दोहा॥ आदि पुरुष तुम स्वामिज, सबकर जानहु अन्त। ब्यासदेव केवट तनय, तोन कहहु बिरतन्त ॥ ५ ९ ॥



# राजाबहुरिझन्तःपुरगयऊ। केतिकदिनवहिबातन भयऊ कन्यादान दीन जब झाई। ताकहँ तबै दीन पहुँचाई ॥ दोहा॥ सो निरबंशी राजा, कन्या हितकर लीन्ह। सो पुनि जाय कन्तपुर, झनन्द बधावा कीन्ह ॥ ५२॥

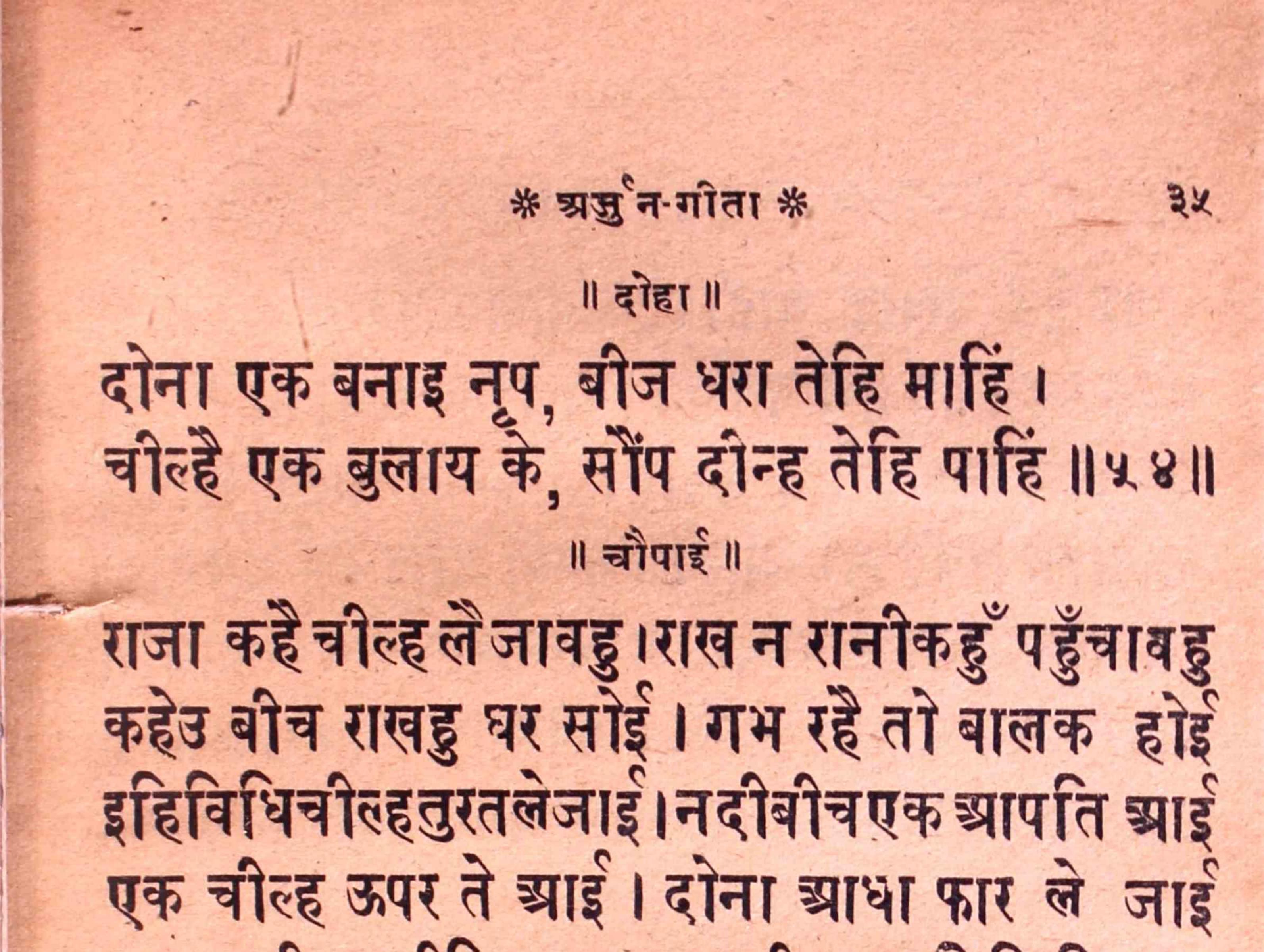


वर्ष सात की भई कुमारी । बरचिन्तानृपमनहिबिचारी दासराज राजा इक आही । कन्या ताहि पुनीत बिबाही करि बिबाह राजा लै आवा । मुद समेत नृप बिदा करावा आश्विन मास पत्त उजियारा । पितृकाज करहिं संसारा जहाँ पितृकाज नृप होई । तेहि दिनरजोवती भइ सोई सुनिराजाजियचिन्तालाई । दरबानी कहँ लीन्हबुलाई

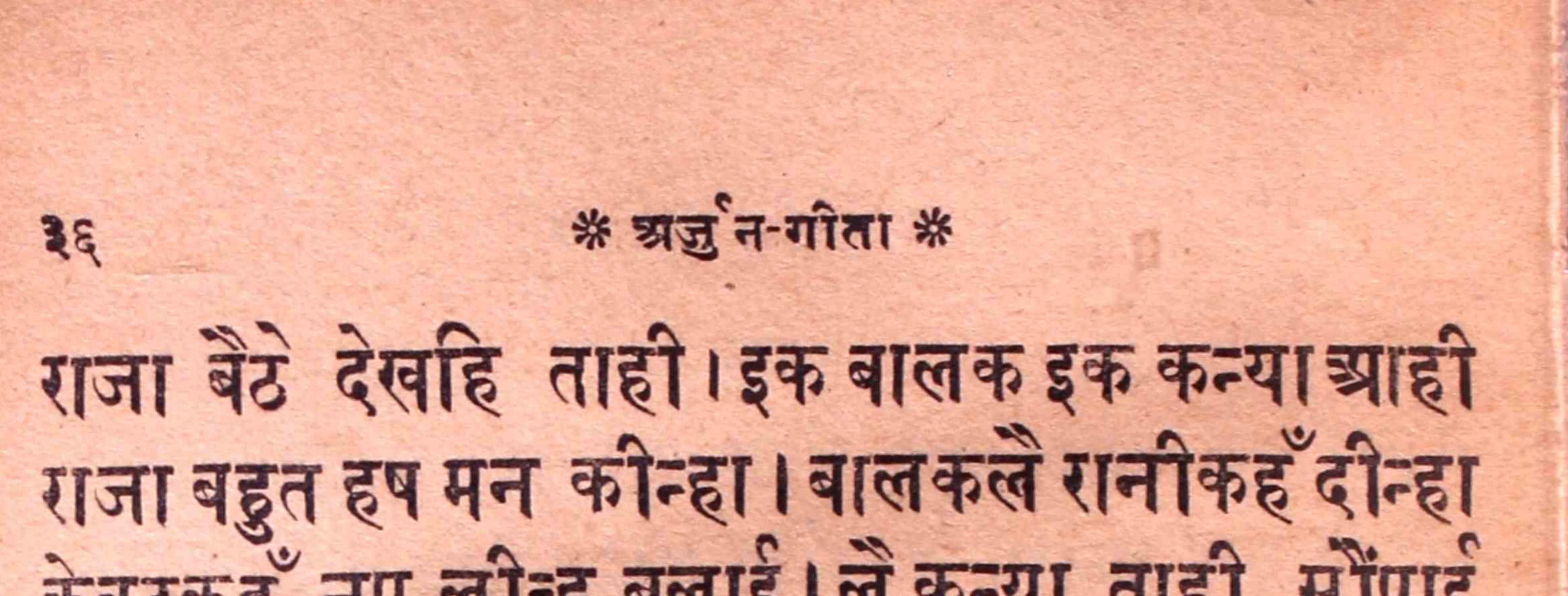
# पणिडतजनसबलावहु जाई। बाह्यण कहें करो सो जाई

#### परिडत ऋषी बुलाइ के, भाषा सब ब्यवहार। पितृकाज तिय रजवती, तेहिकर कवन बिचार ॥ ५३॥ ॥ चौपाई ॥

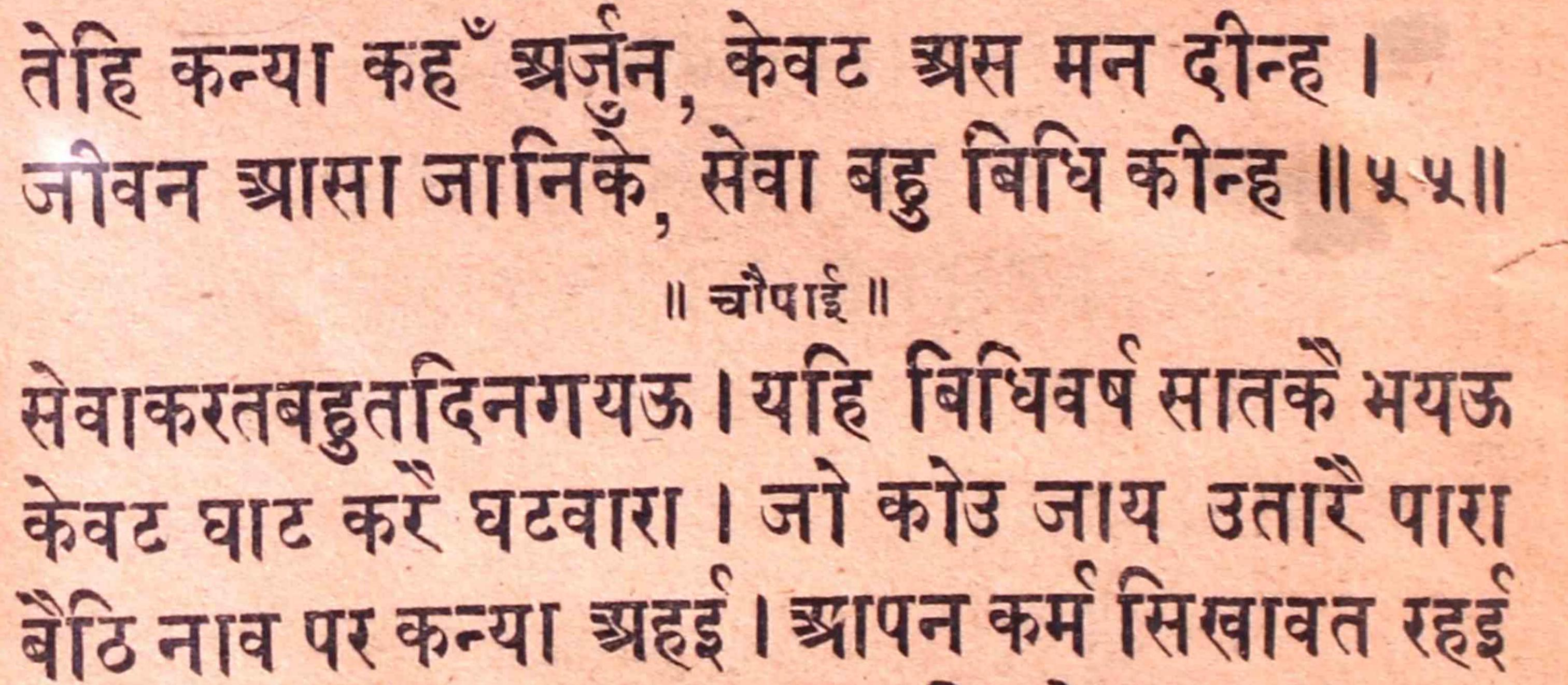
# बाह्यण कहें पितृकर काजा। वर्ष राज महँ होवे राजा आजुहि पितृकाज नृप होई। और लगन धरिसकैनकोई पितृकाजसब बिप्र लगाये। राजा तुरत शिकारहिं धाये अर्जुनसुनुबिधिकेसंयोगाहरिणाहरिणिकरहिरस भोगा देखतमोहितभयउसुवारा। रतिपतित्रसितभयोतेहि बारा



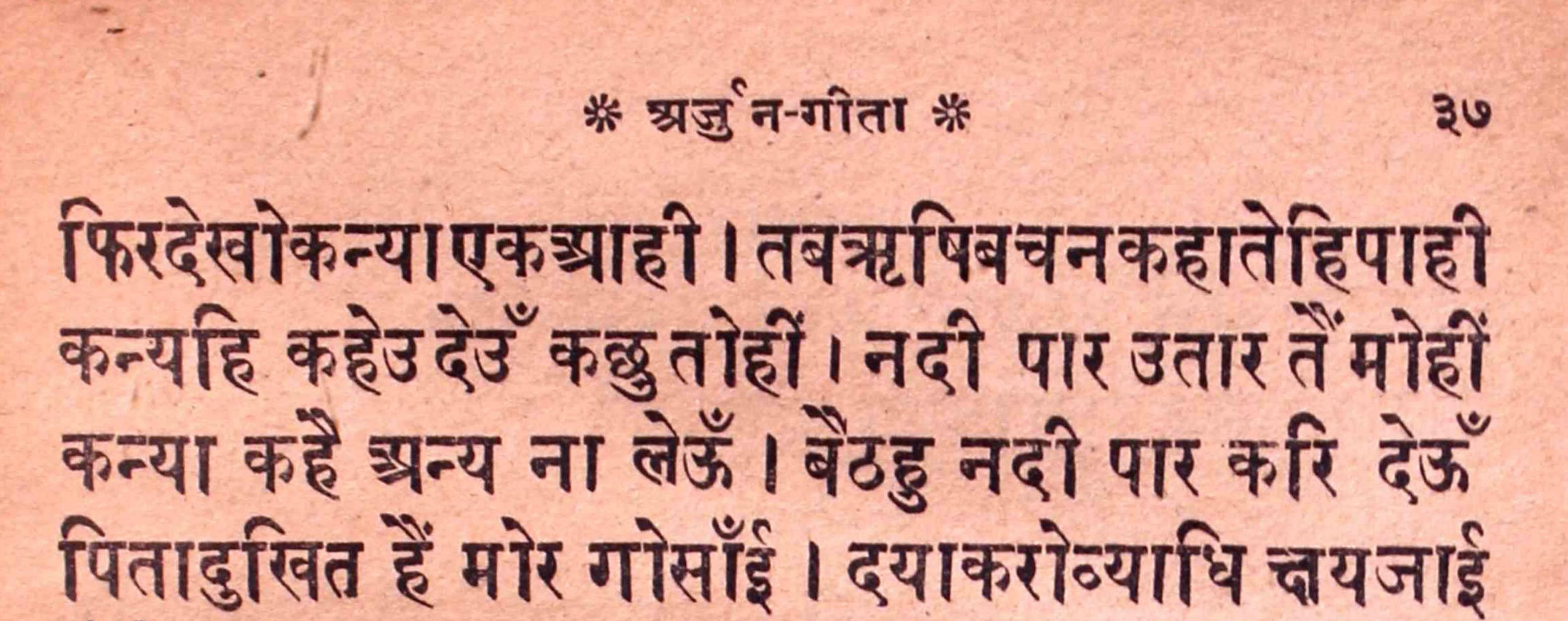
## दुइबुन्दबीजनदीबिचपरऊ।मछलीएकताहिलिलिगवऊ गर्भवती मछली भें वाइ। खेलि शिकार राज घर जाई पितृकाजतबकीन्हभुवारा।जो कछु राजनकोव्यवहारा यहि बातन कछु झन्तरपरी।केवट जाल मछली सोधरी ले मछली राजा कहँ दीन्हा।राजा बहुतप्रेमकरिलीन्हा कहेउकि मछली उत्तम झाही।जवन हेतु बनावहु याही लेकरमीन बनावनगयऊ। तब इक बालक कन्या भयऊ हँसिकेबालकभाष्योतबहीं। बोल्योनपजोराखहु झबहीं नपदासीतबझचरजकीन्हा। मछलीगर्भउतरकसदोन्हा राजा मछली फेरि मँगावा। झपने झागे बैठि चिरावा



केवटकहँ नृप लीन्ह बुलाई। लै कन्या ताही सोंपाई अपुत्रीक केवट सो आही। कन्या देखि हर्ष मनमाहीं जो बालकराजा लै राखा। मच्छनारायन नामसोराखा राजा भयउ राजा के अन्त। अबसुनुकन्याकरविरतन्ता कन्यारत्नजो केवट लीन्हा।नामअगौतीतेहिको दीन्हा ॥ दोहा॥



#### बाठ नाव पर फन्या अहर जिसिस गरा स्वास सिंध रहर मुखमुखलोंकेतिकदिनगयआएकदिनकेवटब्याधितमयऊ केवटब्याधिब्यथहिमहँधावा। घाटसोंपिकन्याकहआवा कन्या बैठी अपने भाऊ। विधिसंयोगअग्निशर आऊ मुनिपाराशर आसन जायो। देखे केवट घाट न पायो



# बोलेऋषीभयउ तव काजा। पितातुम्हारनीकभा आजा तुमअपनेमनसोचनआनहु।बचनहमारसत्यकरिमानहु पितातुम्हारनीकह्रेजाई। आपनि अवशिरोग चायपाई

॥ दोहा ॥

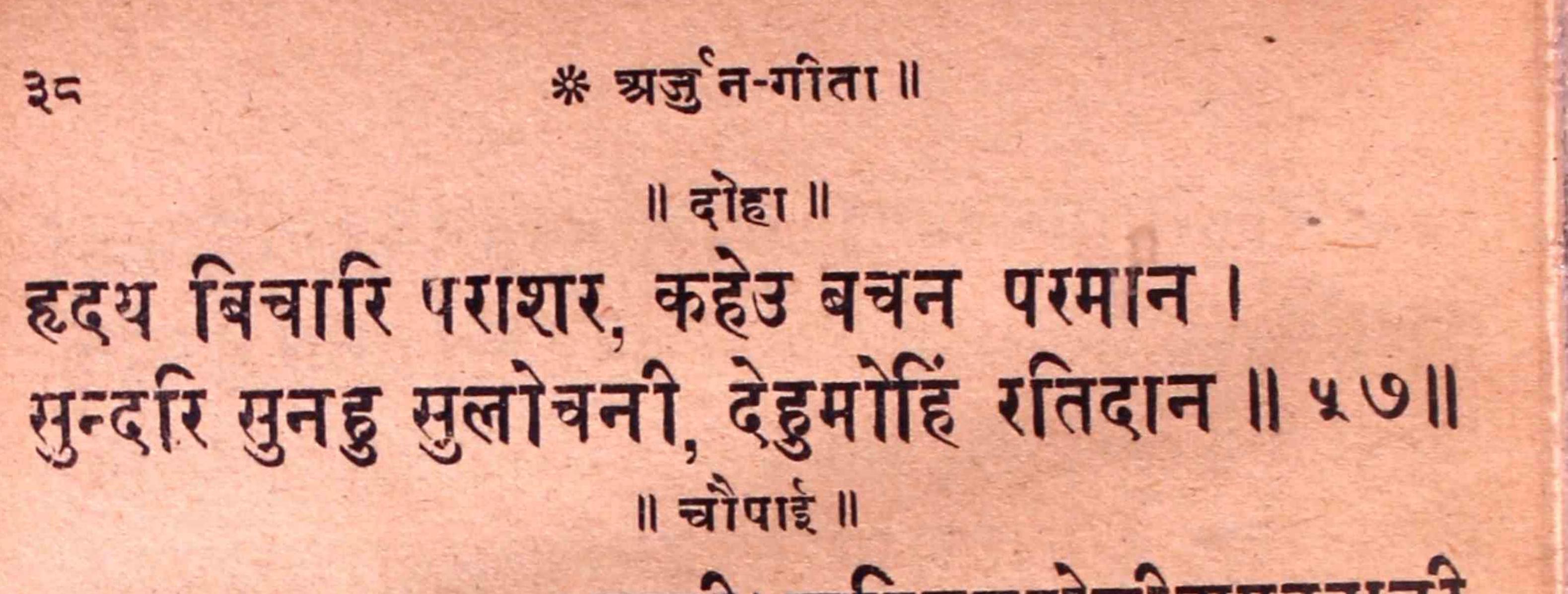
#### इतना भाषि ऋषीश्वर, बैठि नाव पर जाय।

# कन्या बैठी डाँड़ लेइ, दीन्हेसि नाव चलाय ॥ ५६ ॥

॥ चौपाई ॥

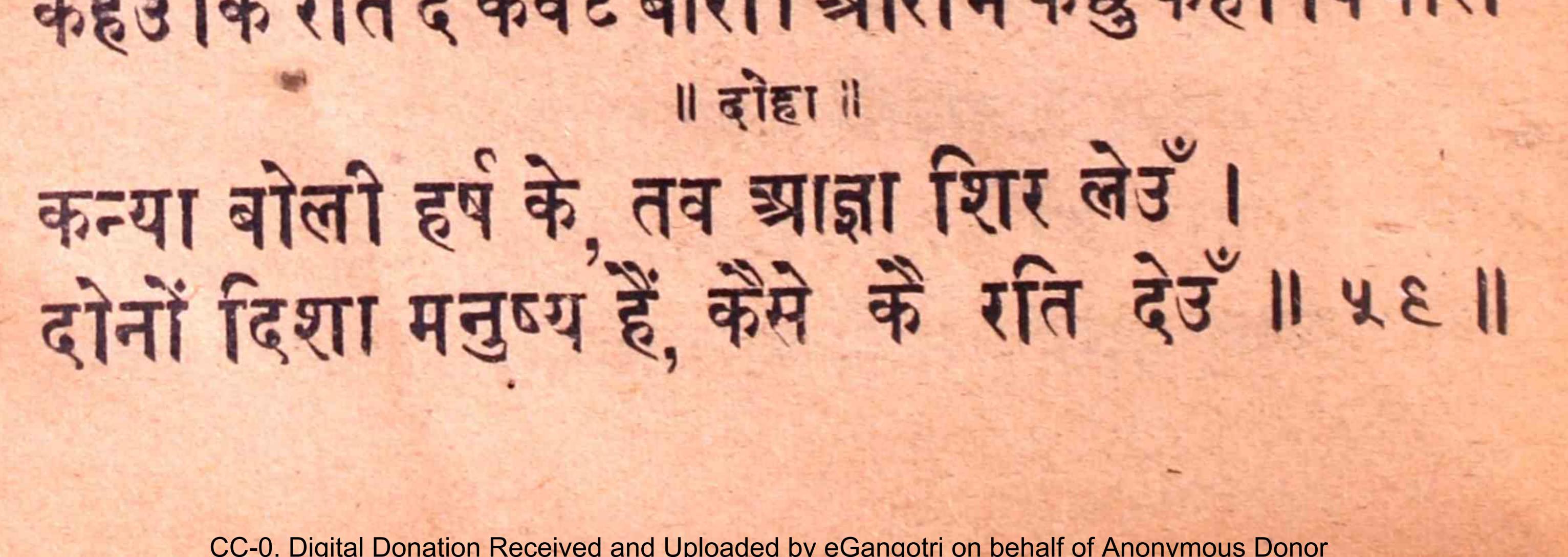
थोरी दूर नाव जब आई। उत्तम बात ऋषी चित लाई उत्तमघड़ी आहे यहिबारा। आरे नारि नहिं साथ हमारा यहि बेरा जो सोरतिमाना। होवेसुतत्रिलोकजेहिजाना

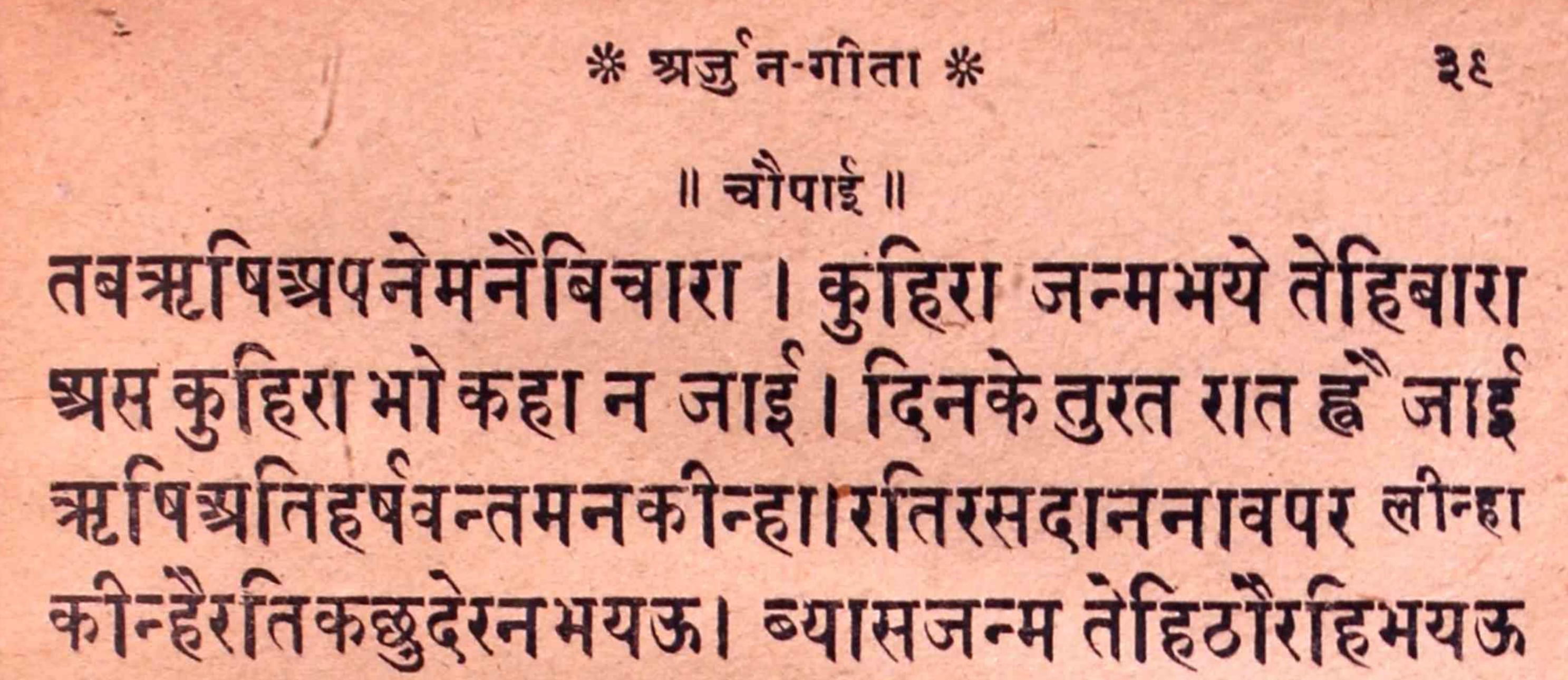
# चारि बेद मुखपाठ बखाने । अष्टादश पुराण सो जाने तबहिं परस्पर कह्योबिचारी । सुनदु बचन केवट को बारी जगतमध्यतुम्हारयशरहहीं।मानहुबचनजो साँचइम कहहीं



#### तबकन्यामनबहुत लजानी। ऋषिसनबोली अमृतबानी देहगंध मम मदस्यसमानी। मैं बाला कछु भेद न जानी ॥ दोहा॥ कहा देखि मोहि रीफेंड, कीन्हो चहहु प्रसंग। तुम्हें योग हम नाहि हैं, केहिविधि लागहुँ अंग॥ प्र =॥ ॥ चौपाई॥

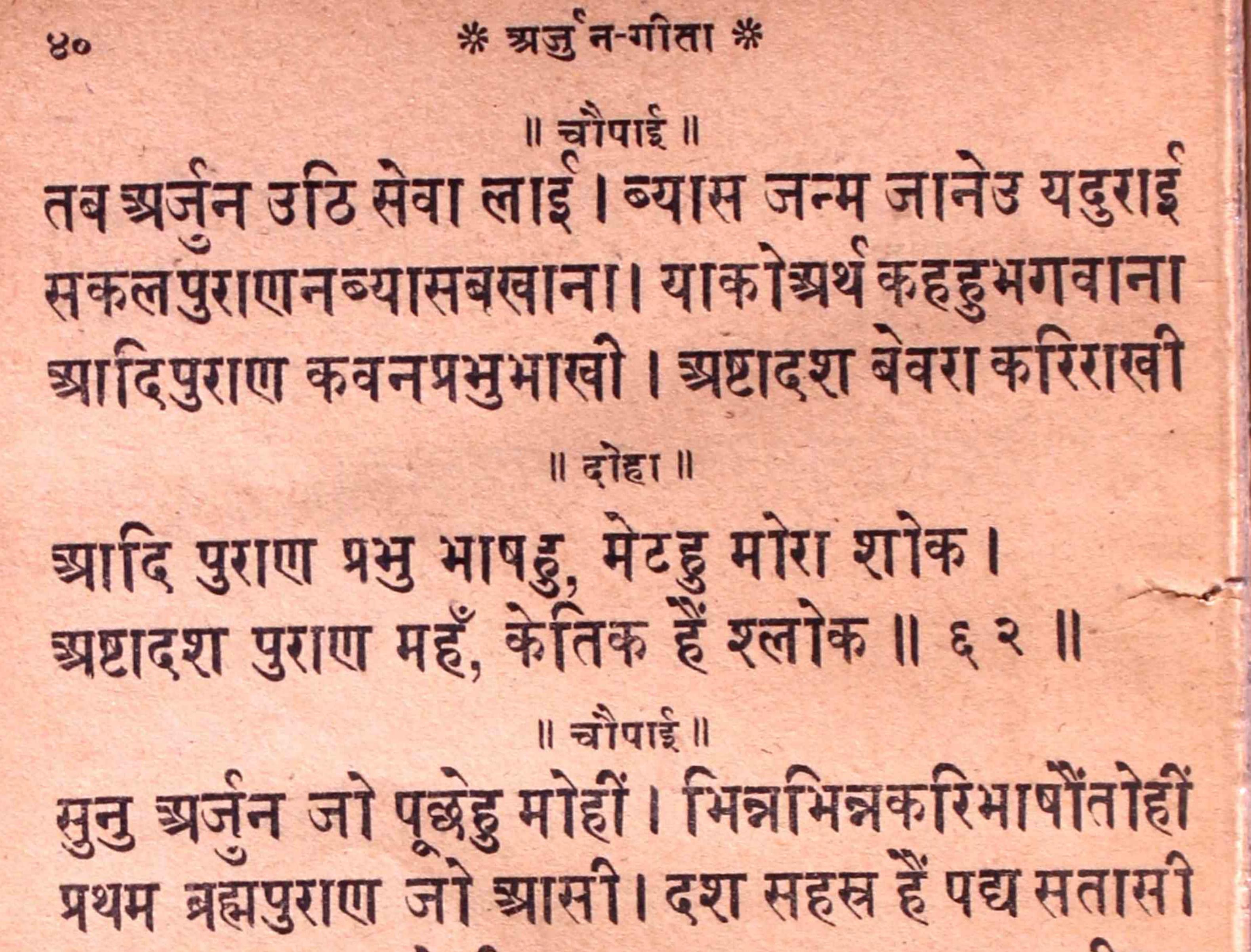
तबऋषिबोलेबचनरसाला। यहनहिंसोच करौतुमबाला इम आज्ञा दीन्हा भगवती। होहुतुरत तुम यौवनवती देह तुम्हार सुगन्ध बसाई। बास सुचार कोसलौँ जाई योजनगंधनामतेहिदीन्हा। होहुतुरत हम आज्ञा कीन्हा ऋषी बचन को मेटन हारा। भयउ तुरत ना लागेउ बारा कहेउ कि रति दे केवट बारी। ओरों में कछु कहों बिचारी



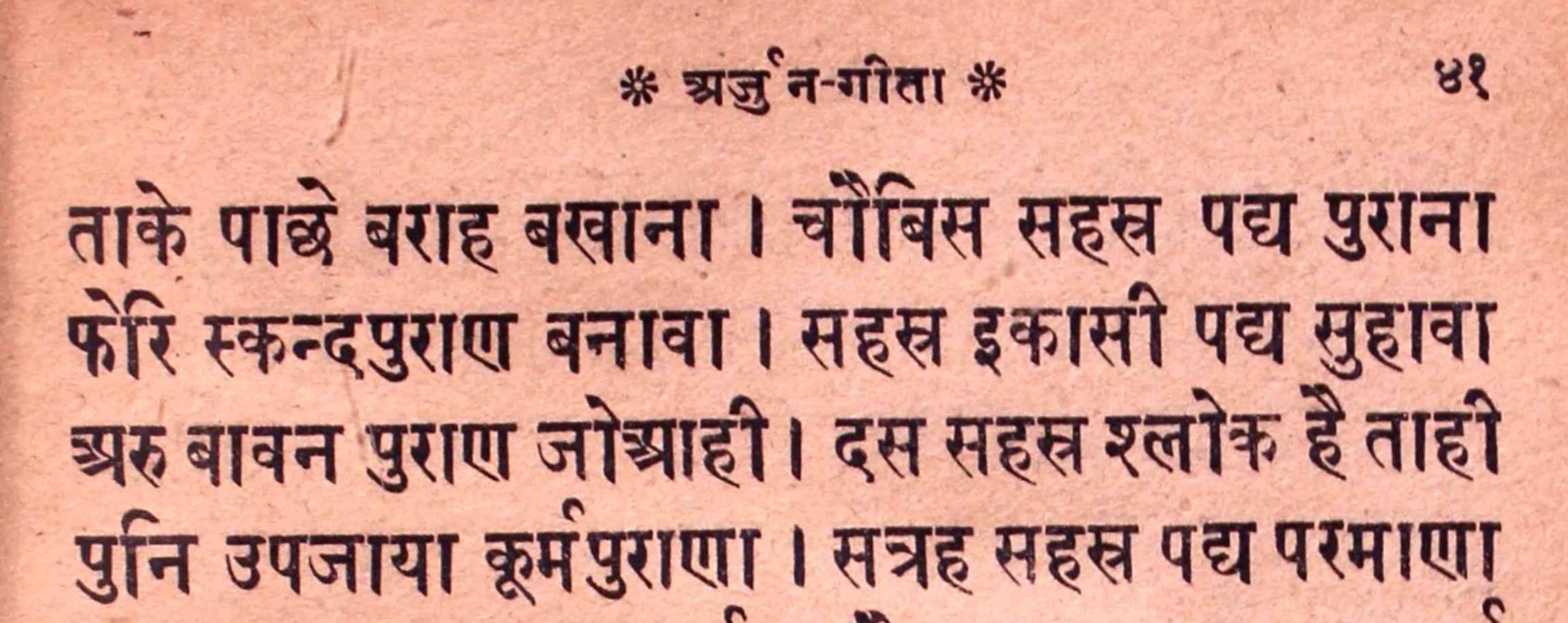


जन्मभयउग्रहबाढ़ीकाया। कहीनजायविष्णुकीमाया ग्रर्जुन सुनहु कहें भगवाना। चार वेद मुखपाठ बखाना ॥ दोहा॥ ब्यास जन्म तोहि भाषेऊ, सुन ग्रर्जुन चितलाय। जन्म जन्म कर पातक, पढ़त सुनत च्रय जाय ॥६०॥

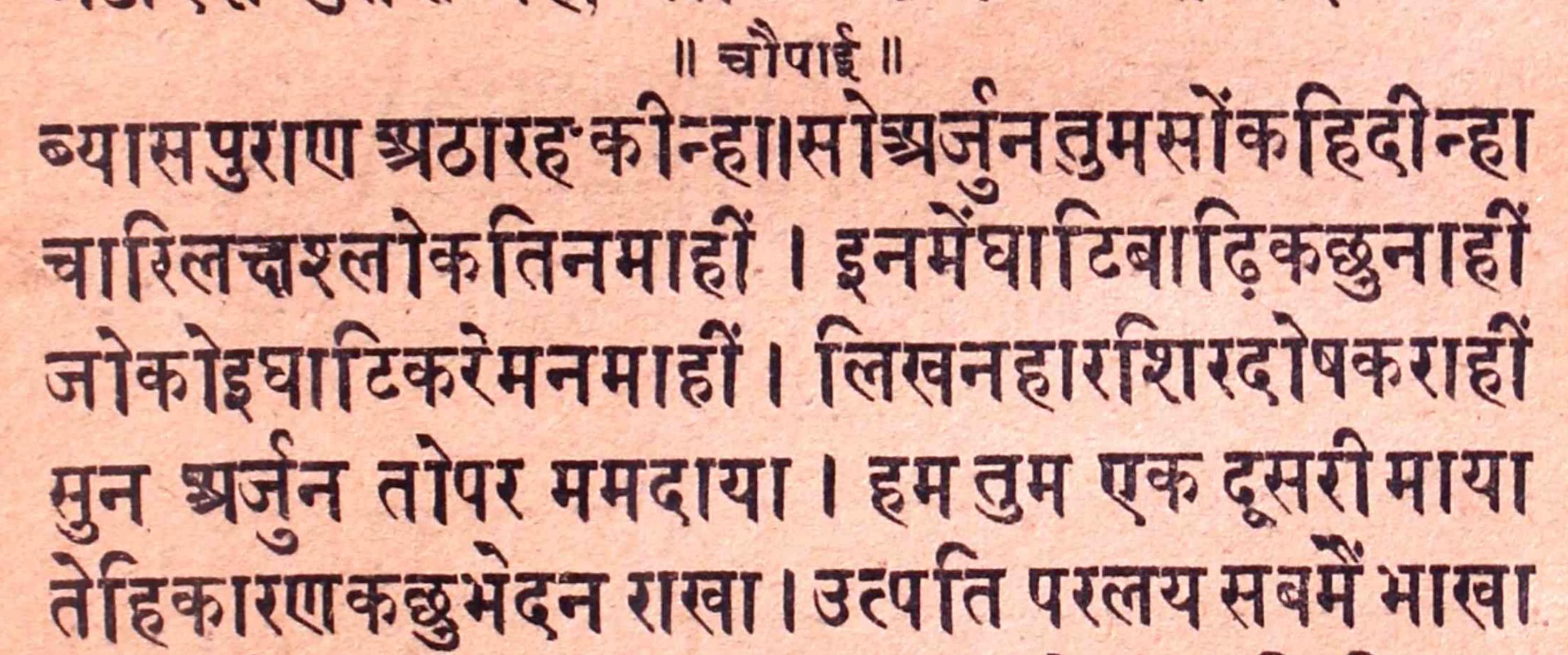
#### ॥ चौषाई ॥ सुन अर्जुनतिनकोव्यवहारा । ऋषीउतरिगे पहिलेपारा ब्यासदेव तब बेठे जाई । परमज्योतिमहॅं ध्यान लगाई ऋषिसुन्दरिसेसबरसलीन्हा । कन्यारूपर्फारे तेहिदीन्हा पुनिस्नानकरिकीन्हपयाना।तिनकोबिदाकीन्हसनमाना सो कन्या अपने घर आई । पाराशर तब बेठे जाई ॥ दोहा ॥ दासराज नृप कन्या, मीन गर्भ अवतार । यहिबिधिजन्मब्यासमुनि, सुनद्रुसोकुन्तिकुमारा। ६ ९॥



## पद्मपुराण अनूपजो कीन्हा। पचपनसहस्रपद्यशुभलीन्हा तेहि पाछे भो विष्णु पुराना। तामें तेइस सहस्र बखाना शिवपुराण सबही निर्माई । चौबिस सहस्रपद्यसुखदाई कीन्हे पुनि भागवत पुराना। सहस्र अठारह पद्यबखाना मुनि नारद पुराण जोभाषा। सहस्रपची सपद्य तेहिराखा मार्क राढे यपुराण जो आही। नव सहस्र रलो के हैं ताही तेहिपाछे भो अग्नि पुराना। पन्द्रह सहस्र सुपद्यबखाना तेहि पाछे भविष्य उपराजा। चौदह सहस्र पंचशतराजा मेरि ब्रह्य वैवर्त पुराणा। सहस्र अठारह पद्य पुराणा



#### मत्स्यपुराण सुरम्य बनाई । चौदह सहस्र पद्य सुखदाई गरुड़ पुराणकीन्हऋषिसत्तम । उनइस सहस्र पद्यहेउत्तम पुनि ब्रह्माण्डपुराण बनावा । बारह सहस्र सुपद्यसुहावा ॥ दोहा ॥ एक एक कर भाषेउ, पुनि कीन्हो सब थोक । अष्टादश पुराण महँ, चारि लज्ब श्लोक ॥ ६३ ॥



# कहञ्चर्जनसुननन्दकुमारा। दासनको संकटकिमिटारा सुनञ्चर्जुनजेहिसङ्कटपरहों। निश्चयमोरनामचितधरहीं ताकर संकट काटों जाई। दुष्ट मारि तेहि देउँ छुड़ाई

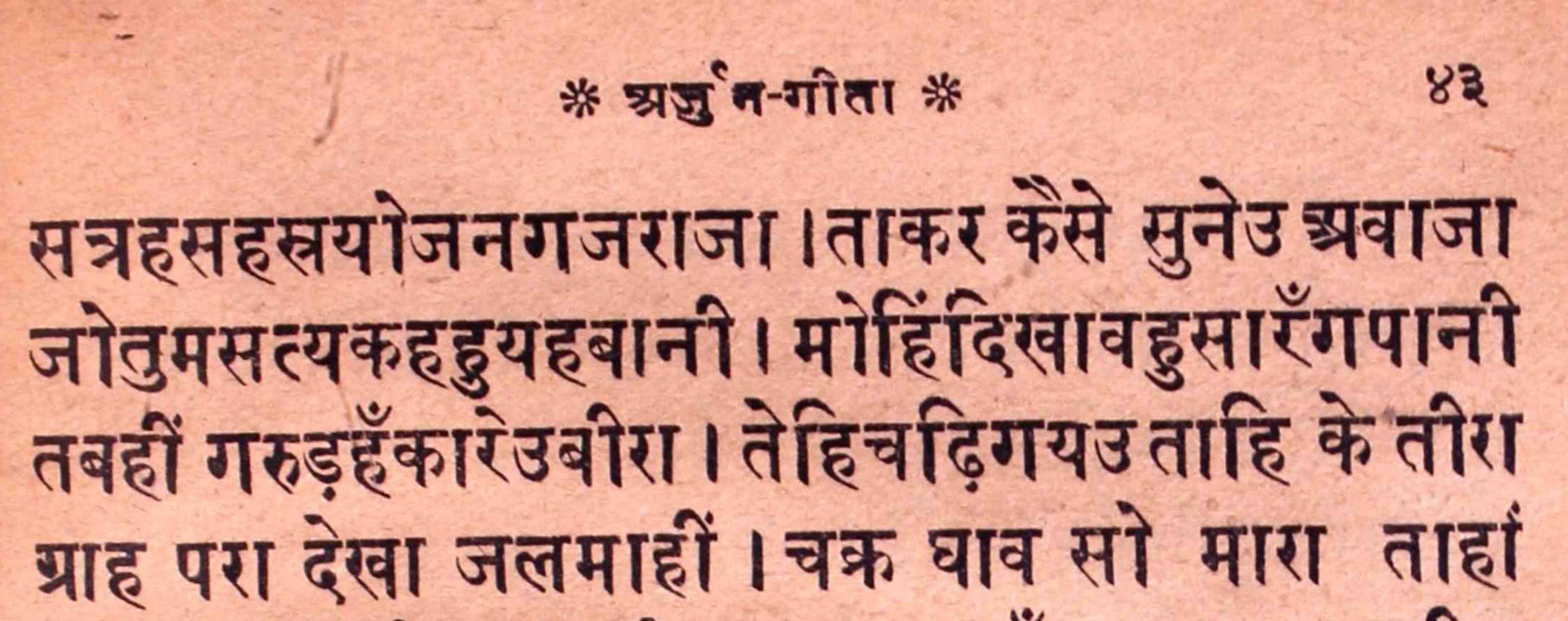


\* ऋाजु न-गीता \*

## जेहिजेहिकर मैं संकटटारा। सोतोहिंभाषाकुन्तिकुमारा एकसमयबिधिञ्चवसरराजा। पानीपियनगयोगजराजा तृषावन्त जल भीतर जाई। ताहिग्राह एक पकस्वोद्याई कालसमानधरा ञ्रसताहीं। गजकरजोरचलाकछुनाहीं खेंविग्राहलेचलानिदाना। गजकोकालञ्चाइनगिचाना ञ्चतिहिकष्टगजभयोदुखारी।महाबिकलह्वैकहेसिपुकासी रूपासिंधुमोहिं लेहुउबारी। परेउञ्चथाहञ्चगमजलभारी हम सतिभामा खेलें पासा। पुरी दारिका मध्यनिवासा यहि ज्वन्तरगजराजपुकारी। सतभामा कह पासाडारी सत्रहसहस्वयोजनगजराजा।ताकोकाननसुनेउँज्यवाजा

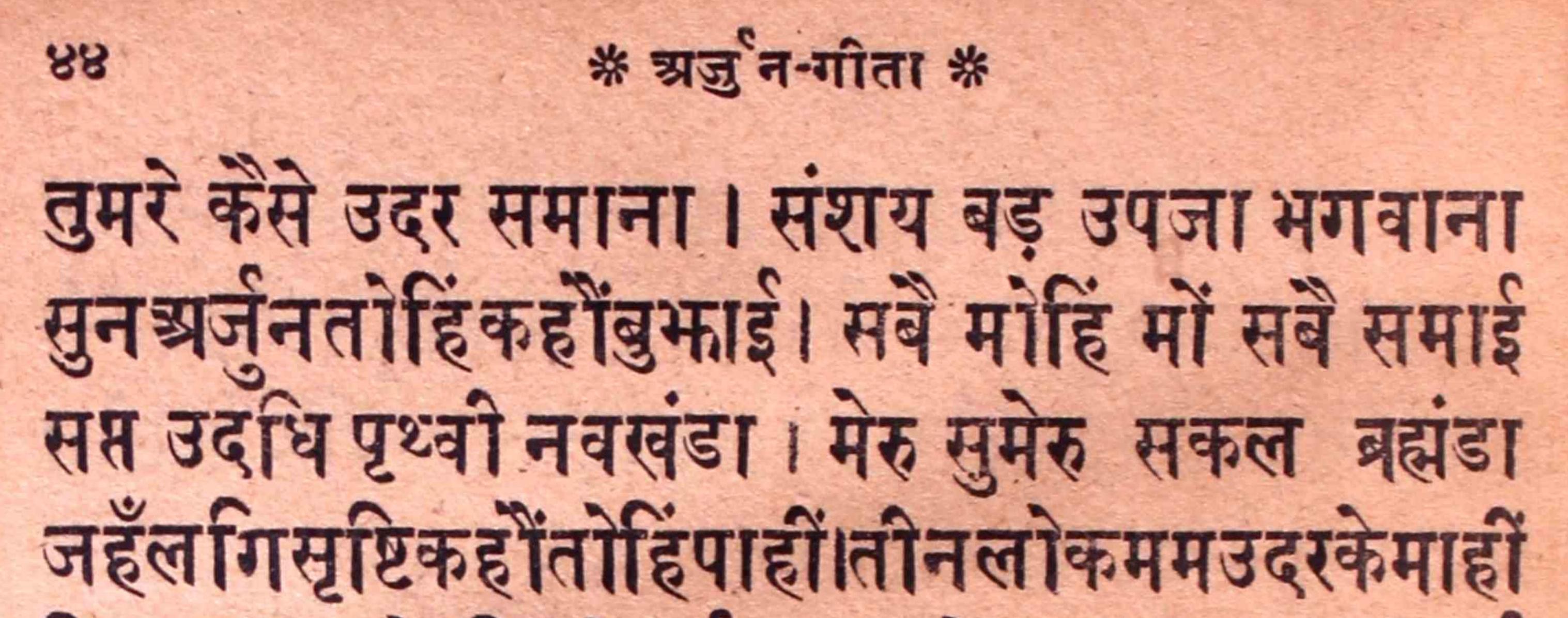
पासाडारि चल्यों अकुलाई। सतमामा तब कहा रिसाई केहि राखेउ को है यहि ठाई। खेलत माया करो गुसाई पासा मोर परो तुम देखा। मैं अपने खेलब करिलेखा ॥ होहा॥ तबहि रूष्ण हँसि बोले, तुम जनि जानहु मन्द।

#### त्राह गहा गजराज कहँ, ताकर काटौँ फन्द ॥ ३४ ॥ ॥ चौपाई ॥ तबसतिभामाञ्चचरजमाना। यहसमभायकहोभगवाना मैं जानत हों तुमहिं गोपाला। दयाधर्मतुमहीं नँदलाला

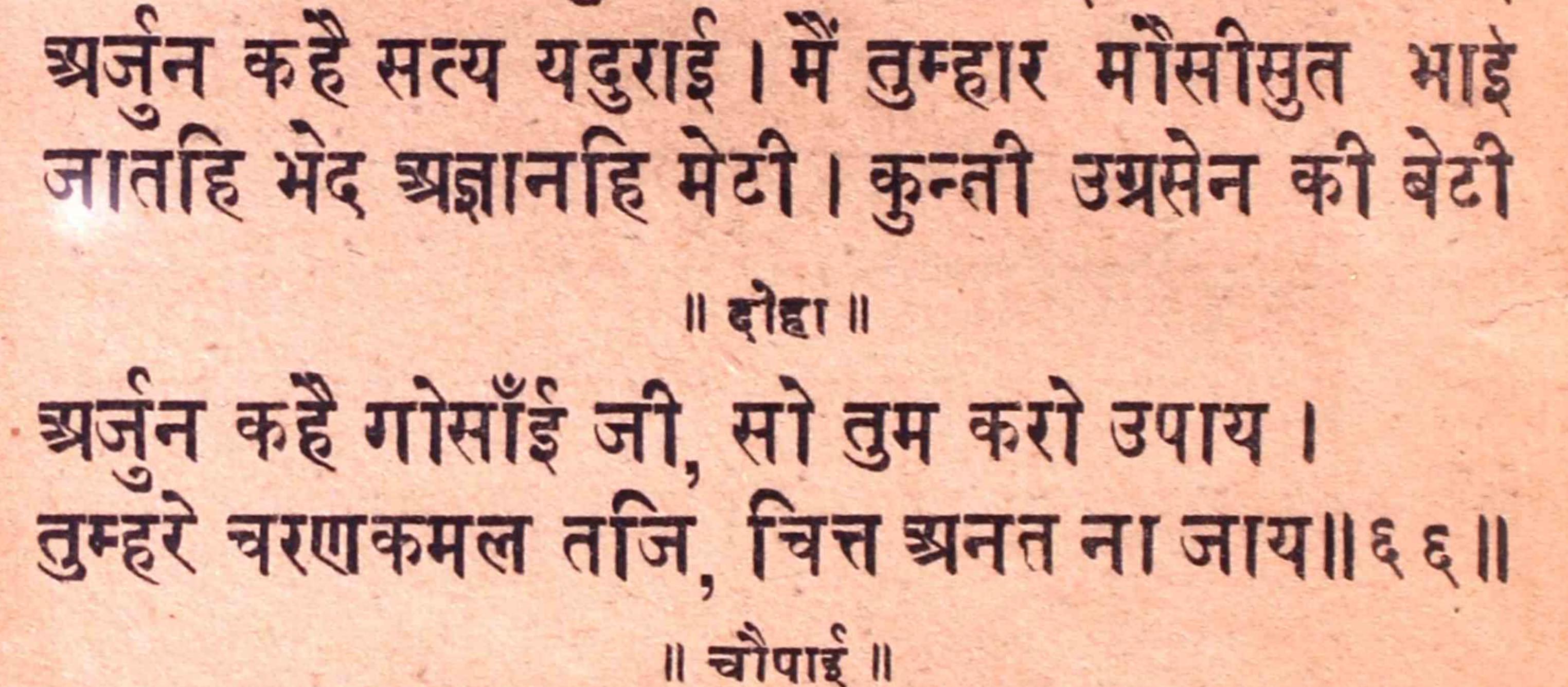


हस्ती ठाढ़ रहेउ जलतीरा। थरथर कॉपत सकल शारीरा अजब सतिभामा देखाजाई। तब बहुबिधिकै अस्तुति लाई द्रपदसुता की लजाराखी। सो अर्जन देखो तुम आँखी संकट से प्रहलाद उबारा। सो लुम जानहु कुन्तिकुमारा हिरणकश्यप को उदर बिदारो। अंत्रनमालगले महँ डारो मार्क राडेय सुनो हम पाहीं। ब्राह्मण के नन्दनतो आहां तीनलोकजबपरलयभयऊ।बूडनलगेयादमोहिंकियऊ कहेउ कि बूड़ेसारँगपानी। गर्भान्तरराखेउँ तेहिआनी धन्य गरुड़ बिनतासुत भाषा। अस्मी थुग पीढ़ी पर राखा तेहिऊपरतनुसक न सम्हारी । अच्चयबटतरदीन्हउतारौ ॥ दौहा ॥

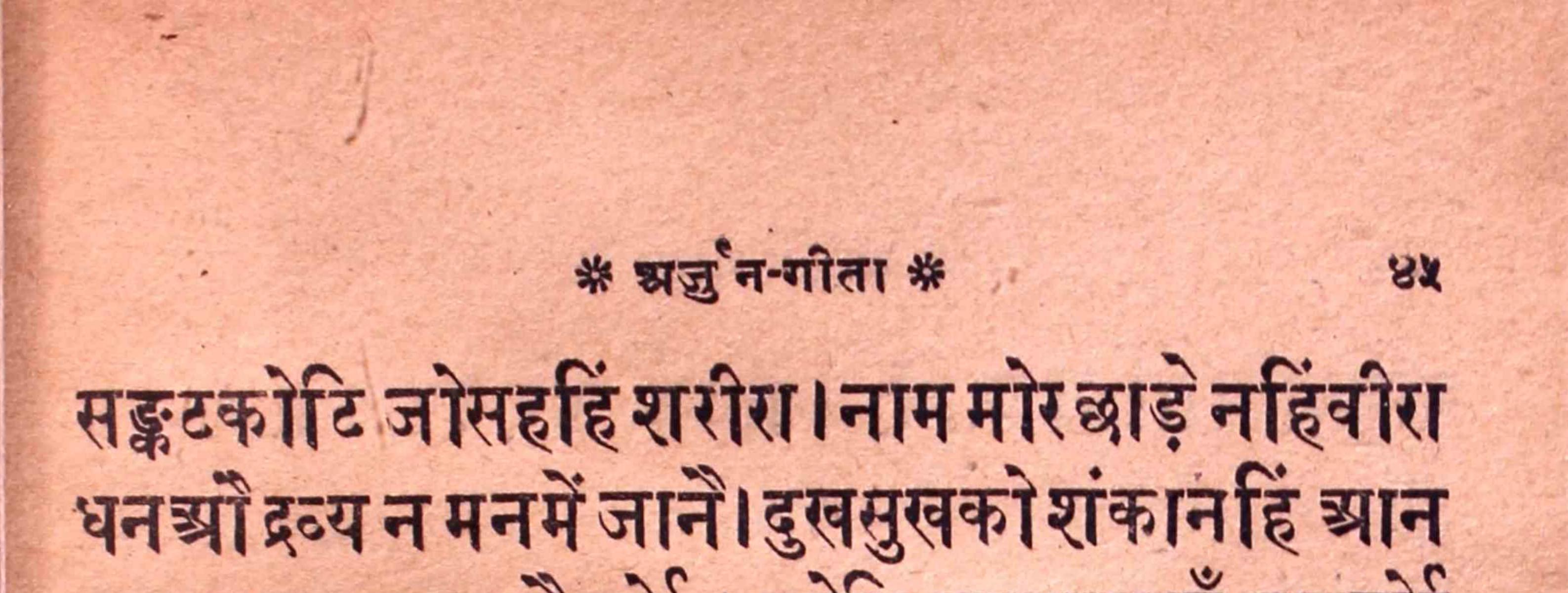
# ब्याकुल भयो विनतासुत, जानेउ मन में बीर। तेहि पुनि कीन्हेउ गर्वबहु बैठि रह्यो मतिधीर ॥६ ५॥ ॥ चौपाई ॥ अर्जुन कहे सुनो यदुराई। मेरे चित शङ्का कछु आई



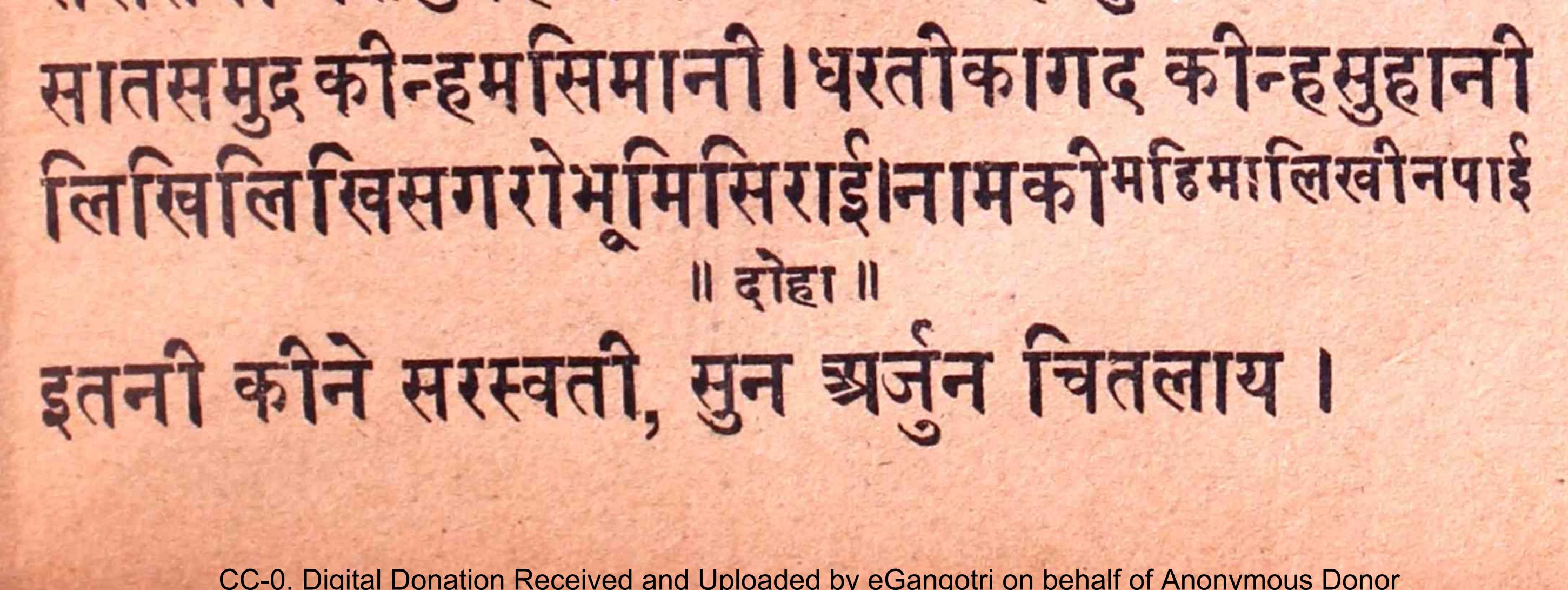
विनतामुतजोबहिनीभाई। शतयोजन ताकर चकलाई पत्ती एकगरुड़ते भाखा। प्रूछेउ स्वामी तुम सब राखा तीनलोक में जो कछु आहीं। सो देखहु मेरे घट माहीं भक्तिभाव जानेउँ में तोरा। तुम मौसीमुत भाई मारा तुममें भेद कहों समुफाई। और के बूते जानिय जाई

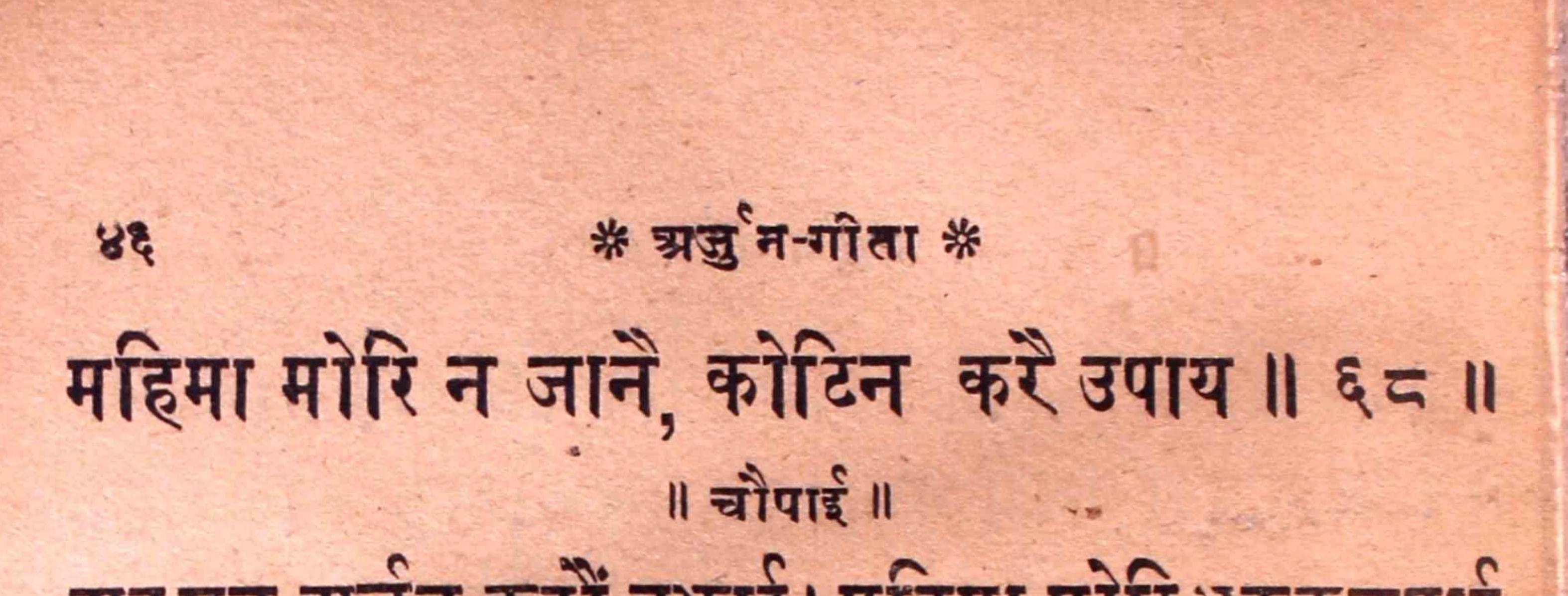


# अर्जुनसत्यबचनसुनमोहीं। मैं अपने हित जानों तोहीं बहुतभाँतिका कहोंबुक्ताई।नामजोमोरभजहिंचितलाई भजचितलाइनाम मम जोई। तेहिसमान अर्जुनना कोई



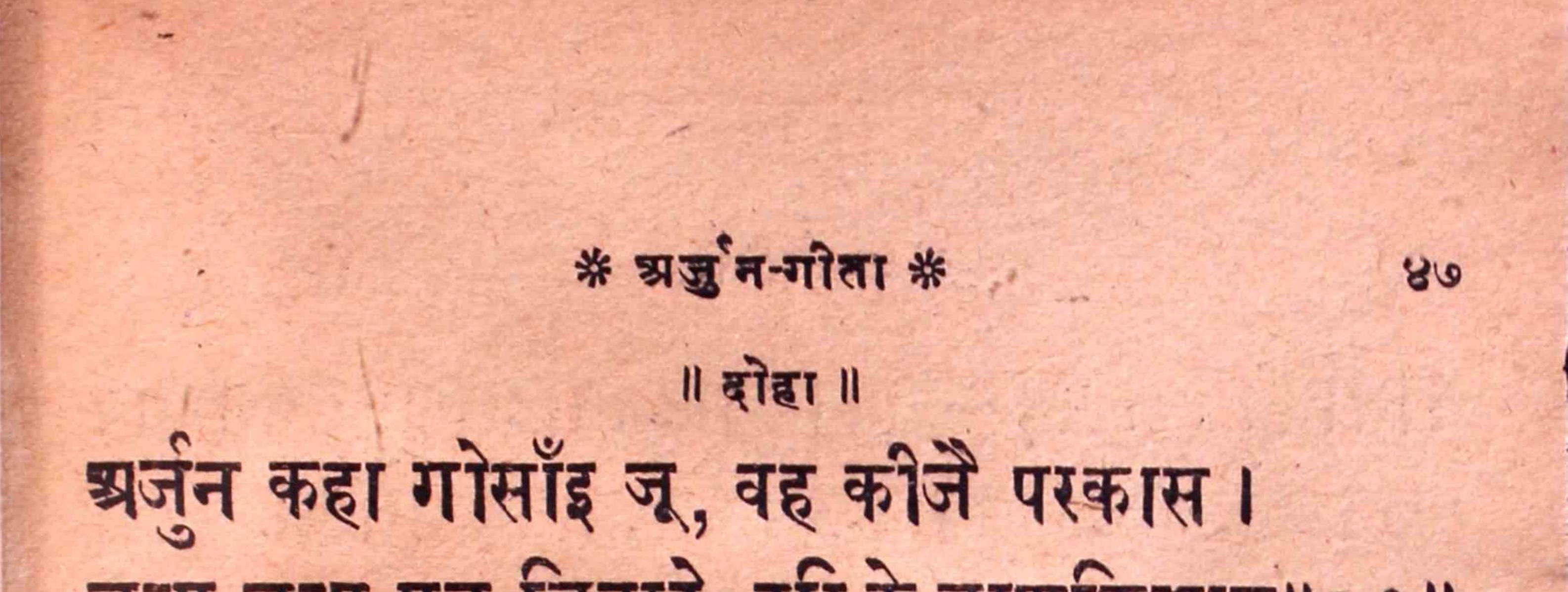
# एक जन्म दुख पावें सोई। कोटि जन्मताकहँ सुखहोई जीवतदे नाम जपै जो बीरा। ताके पाप न रहे शरीरा नाम ब्रह्म चित से धरि जाना। सो प्राणी है देव समाना अर्जुनसत्यसुनोहमपाहीं। रामभजनबिनअरुकछुनाहीं कोटिनतीरथबत जो जाना। नहिं अर्जुन हैनाम समाना ॥ दोद्दा ॥ उदय अस्त सब जाके, चार वेद मुख जान। कोटिकोटि गुए जाने, नाहिन नाम समान ॥६७॥ सुनडुञ्चर्जुनपाग्डकुमारा। नामकीमहिमालिखैविधारा कल्पगृत्त के कलम बनाई। घासपात तब लीन्ह जलाई राखसमेटिसिंधुमहँडारी। प्रथमकीन्हबद्वविधिविस्तारी





अबसुन अजुन कहा बुकाइ। माहमा माार मक्न छुपाइ सो भवसागर जाने कैसा। कुसुमरंग अमरावति जैसा जो कछुतीनलोक में आही। एको दृष्टिन आवे ताही सप्त पताल अपर ब्रह्म रहा। सप्त द्वीप पृथ्वी नवखरडा तीनलोकअर्जुन यह वाही। जो दर्पण अस देखेताही चंद्रसूर्य दीपक अस जाने। कामदेव मर्कट सम माने धनदसमानधनीको उद्याही । दुखिया समजानैतेवाही उनचास कोटिमरुत है कैसा। नासापवन बहुत है जैसा अर्जुन सुनो कल्पतरु जोई। जाने एक बृत्त है सोई सात समुद्र नीर अतिभारा । सो जानत है चुख्र धारा इन्द्र समान राज नहिं कोई। रंक समान बुकावै सोई

# गिरिसुमेरुको मनसों कहहीं। देला एक धराजन अहहीं हिमगिरिकहँमान हिंवेकेसे। अतिहील घुएक की टहेजेसे बरुण हिते जानत हैं कैसा। जल में एक की ट है जैसा बहस्पति को मूर्ख के माने। पुष्प सदश तारागण जाने इतनी दृष्टिन आवत ताही। नरबरे के हि गिनती माही



# जन्म जन्म मन चितरहे, हरि के चरणकिञ्चास॥६ ६॥ ॥ बौणई ॥ ञ्चर्जुनसत्यबचन सुन मोहीं । गीता ज्ञान कहों में तोहीं ञ्चावागमनतोरनशिजाइ । कोटि जन्मकर पापनशाइ छोशास्त्रमथिकैजब लीन्हा । रामरतन गीतातब कीन्हा श्रीमुखमेंभाष्योतोहिजोई । तेहिसमानजगमेंनहिंकोई

ताके गुणसुनि कुन्तिकुमारा। जब यह प्रन्थ चले संसारा कथा ठोर बेठे जो कोई। ताहि मोच को प्राप्ती होई राखे सुर पुराण यह गीता। चत्रिय पढ़े सोरणमहँजीता संत असंत पढ़े जो कोई। ज्ञानवन्त उत्तम गति होई चित देके जो पढ़े सुनावे। यमदूतन्ह नहिंताहि डेरावे

#### निश्चयमन जे पढ़तेरहई। जहाँ जात चिन्तानहिंकरई गीता पढ़े सुने जो कोई। बुद्धि होय तो छूटे सोई आधिब्याधिहै जाके अंगा। गीतापढ़त तजतसोसंगा दुष्ट चोर ठग तहाँ न रहई। राजा प्रजा की रत्ता करई जेतिकगुणगीतामें आही। आदि अंतकहिसकोंनताही

